# प्रस्तावना।

जब कि, यवन पादशाहोंके महा अत्याचारसे घोरराहु अपने तीव्र तिमिरसे भा भण्डारके सुग्रंथ ज्योतिष विद्याका चारों ओरसे छादित ऋषि मुनीश्वर त्रिकालज्ञोंके प्रणीत ग्रंथ ज्वलवान् कुंडमें हवन कर रहे थे जिन ग्रंथोंके अवलंबसे कहलातेथे ऐसी अपूर्व घटनाको अवलोकन कर हेतु "जीवनाथ नामा ज्योतिर्विद्" जो उस पुरुष कहलाते थे ज्योतिष विद्यामें अद्वितीय उनकी जिह्वामें सरस्वतीका वास बतलाते थे शब्दरूपी अमृतपुंजसे "भावकुतूहल" ज्योतिष निकाली है इसमें निमग्न होने (पढने) से सक्ता है तीनों कालकी बातको जान कुण्डलीका फलाफल कह सकताहै यह ग्रंथ के समझमें नहीं आता था इसलिये अनभिज्ञ टीहरी (गढवाल) निवासी महीधर नामा त्तम देशभाषामें टीका करी है जो लोगोंके

आपका

खेमराज कृ

"श्रीवेङ्कटेश्वर" लय

## अनुक्रमणिका।

# अनुक्रमणिका।



इति भावकुतूहलस्य विषयानुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

# अथ भावकुतूहलम्.

## भाषाटीकासमेतम्.

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रणम्य कांतां परमस्य पुंसो हृदब्जसंस्थां परदेवतां ताम् ॥
करोति भाषामथ बालतुष्टयै महीधरो भावकुतूहलीयाम् ॥ १ ॥

भाषाकार ग्रंथादिमें मंगलाचरण रूप प्रणाम करताहै कि, परम पुरुष, परमात्माकीकांता ( परब्रह्ममहिषी ) जो हृदयकमलमें नित्य संस्थित परम देवता अर्थात् साक्षात् परब्रह्म निर्विकल्प स्वरूप आपही होरही एवं जिससे परे अन्यकोई नहीं है ऐसी उस परम इष्ट देवता साक्षात् योगमायाको प्रणाम करके महीधर नामा (ज्योतिषी टीहरी गढवालनिवासी) अथ (मंगलार्थ) अब "भावकुतूहल" के अनभिज्ञ, बालकोंके प्रसन्नतार्थ इसकी भाषाटीका सरल देशभाषामें करताहै ॥ १ ॥

महः सेतुं हेतुं सकलजगतामंकुरतया
सदा शंभोरंभोभवभवभयत्राणजनकम् ॥
अहं वंदे तस्यासुरसुरमनोमोदनिकरं
चिदानंदं पादामलकमललावण्यमधिकम् ॥ १ ॥

ग्रंथकर्ता ग्रंथादिमें अपने इष्टदेवता शिवजीको प्रणाम करता है कि ( अहं ) मैं जीवनाथ नामा ज्योतिषी उस सदाशिवके जलसे उत्पन्न संसार यद्वा ब्रह्माके उत्पन्न कीहुई सृष्टिमें जो

जन्म मरणका एक मात्र भयहै उससे रक्षा करनेवाले अर्थात् मुक्तिदेनेवाले तथा दानव, एवं देवताओंके मनके आनंदकी खानि "आनंदो ब्रह्मणो रूपम्" इस वचनप्रकारसे बोधन हुआ कि, देवदानव परब्रह्म स्वरूप जिस शिवका मनमें ध्यान करते हैं तथा ( चिदानंद ) निराकार केवल प्रकाशमय सत्तामात्र एक आनंदस्वरूप; समस्त जगतोंका उद्धार करनेवाले ( सेतु ) पुल संसारके उत्पन्न करनेका ( हेतु ) भी ऐसे शिवजीके चरणकमलोंका ( अधिकलावण्य ) आनंदामृतास्वादपरिपूर्ण जो अनुपमकोमलताहै उसके ( महः ) उत्सवपूर्वक प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥

विचारसंचारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम् ॥ श्रीजीवनाथेन विदांहिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलंतत् ॥ २ ॥

जो प्राचीन मुनियोंके अनेक मतोंके अनेक ग्रंथ बडे बडेहैं उनमें जब बहुतसा विचार फैलायाजाय तब उसका चमत्कार मिलताहै उसका सारांश देखकर थोडेहीमें वही चमत्कार मिलनेके हेतु विद्वानोंके उपकारार्थ श्रीजीवनाथ ज्योतिर्वित्करके यह "भावकुतूहल" प्रकाश कियाजाताहै ॥ २ ॥

धात्रोदितं यवनकर्कशशब्दसंगादाधिव्यथावि द-लितं परमं फलं यत् ॥ मत्कोमलामलरवामृतरा शिधारास्नानं करोतुजगतामपि मोदहेतोः ॥ ३ ॥

ज्योतिषका परम होराफल जो ब्रह्माआदियोंका कहाथा अर्थात् प्राचीन उत्तम ग्रंथ ऐसे चमत्कारी थे कि, जिनके प्रभावसे ज्योतिषी त्रिकालज्ञ कहातेथे परंतु बीचमें मुसलमान बादशाह

ऐसे मतवादी हुये कि सनातन धर्म संबंधी हिंदुधर्ममें अत्यंत अत्याचार किया यहां पर्यंत कि हिंदुओंके पास जो जो उत्तम ग्रंथ थे बलात्कारसे नष्ट भ्रष्ट करादिये और "यथा राजा तथा प्रजा" सर्वसाधारणमें यावनी भाषा प्रचलित होगई संस्कृतका ह्रास होता गया ऐसे कारणोंसे ज्योतिष संबंधी चमत्कारी फलादेश भी व्यर्थताको प्राप्त होकर यावनी भाषासे दलित होगया-इसके उद्धारार्थ इसग्रंथके भूमिकामें ग्रंथकर्त्ता पंडित जीवनाथ कहतेहैं कि, मेरे कोमल एवं निर्मल शब्दरूपी अमृत पुंजसे जो यह भावकुतूहल ज्योतिष फलादेश रूपी धारा निकसती है इसमें उक्त फलादेश (जवनोंसे मलिन होरहा) स्नानकरे जिससे निर्मल होकर पुनः अपने उसी पदको प्राप्तहो तथा संसारभी उसके उन्नतिसे हर्षित हो॥ ३॥

(अथ द्वादशभावसंज्ञा) तनुकोशसहोदरबंधुसुता रिपुकामविनाशशुभा विबुधैः॥ पितृभं तत आप्तिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः॥४॥

लग्नादिक्रमसे १२ भावोंके नाम॥ तनु (१) प्रकारांतरसे लग्न मूर्ति अंग उदय वपु कल्प आद्य॥ कोश (२) प्र० स्वं अर्थ कुटुंब धन॥ सहोदर (३) प्र० सहज भ्रातृ दुश्चिक्य विक्रम बंधु (४) प्र० अंबा पाताल मित्र सूर्य हिबुक गृह सुहृत वाहन पाताल सुख अंबु जल॥ सुत (५) प्र० तनय बुद्धि विद्या आत्मज वाक्स्था तनय मंत्र॥ रिपु (६) प्र० द्वेष्य वैरि क्षत रोग मातुल॥ काम (७) प्र० यामित्र अस्त स्मर मदन मद काम द्यून॥ विनाश (८) प्र० रंध्र आयु छिद्र याम्य निधन लय मृत्यु संग्राम॥ शुभ (९) प्र० गुरु मार्ग भाग्य धर्म॥ पितृ (१०) प्र० राज्य कर्म आकाश॥ आप्ति (११)

प्र॰ लाभ भव ॥ अपाय (१२) प्र॰ व्यय रिष्फ नाश और त्रिकोण ९।५ त्रित्रिकोण ९ केंद्र १।४।७।१० । पणफर २।५।८ ११ । आपोक्लिम ३।६।९।१२ येभी संज्ञाहैं ॥ ४ ॥

(राशिस्वामि) कुजकवी बुधचंद्रदिवाकरा बुध सितावनिजा गुरुसूर्यजौ ॥ शनिगुरू च पुरातन पंडितैरजमुखादुदिता भवनाधिपाः ॥ ५ ॥

राशियोंके स्वामि कहते हैं कि मेषका स्वामि मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनका बृहस्पति, मकर कुंभका शनि, मीनका बृहस्पति ये राशिस्वामि हैं ॥ ५ ॥

अंगारकेंदुगुरवो रविचंद्रपुत्रावादित्यचंद्रगुरवः कविचंडभानू ॥ भौमार्करात्रिपतयो बुधसूर्यपुत्रौ शुक्रेंदुजौ दिनकरात्सुहृदो भवंति ॥६॥ सौम्यःसमाहि सकलाः कविभानुपुत्रौ मंदेज्यभूमितनया रविजः क्रमेण ॥ भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवोवशिष्टास्तात्कालिका व्ययधनायदशात्रिवंधौ ॥ ७ ॥

मित्रामित्रचक्रम् ।

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. बृ. मं. | सू. बु | सू. चं. बृ. | शु. सू. | मं. सू. चं. | बु. श. | शु. बु. |
| बु. | मं. बृ. शु. श. | शु. श. | श. बृ. म. | श. | म. बृ. | बृ. |
| रा. शु. | ० | बु. | चं. | बु. शु. | सू. चं. | म. चं. मं. |

ग्रहोंकेमित्र सम शत्रु कहतेहैं कि सूर्यके चं॰ बृ॰ मं॰ चंद्रमाके सू॰ बु॰ मंगलके सू॰ चं॰ बृ॰ बुधके॰ शु॰ सू॰ बृहस्पतिके सू॰ चं॰ मं॰ शुक्रके बु॰ श॰ शनिके बु॰ शु॰ मित्रहैं तथा सूर्यका बुध सम चंद्रमाके मं॰ बृ॰

शु० श० मंगलके सू० चं० बृ० बुधके सू० शु० बृहस्पतिका श० शुक्रके मं० बृ० शनिका बृहस्पति समहै अन्य सब शत्रुहैं अर्थात् सूर्यके शु० श० चंद्रमाका कोई शत्रुनहीं मंगल का बुध बुधका चंद्र० बृहस्पतिका बु० शुक्रके सू० चं० शनिके सू० चं० मं० शत्रुहैं और अपनेस्थित भावसे ।१२।२।११।१०।३।४ स्थानोंमें तत्कालिक मित्र होतेहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

परमोच्चमते दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्मलवैः ॥ तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किल पंचभिरेव झषे त्रिघनैः ॥ ८ ॥ कृतिभिश्च तुलाभवने रवितः कथितं मदने खलु नीचभतः ॥ मिथुने तमसः शिखिनो धनुपि प्रथमे बुधभे गुरुभे भवनम् ॥ ९ ॥

सूर्यका परम उच्च मेषके दश अंशपर चंद्रमाका वृषके ( ३ ) अंशपर एवं मंगलका मकरके ( २८ ) बुधकन्याके ( १५ ) बृहस्पति कर्कके ( ५ ) शुक्रमीनके ( २७ ) शनि तुलाके ( २० ) राहुमिथुनके प्रथमांश केतुका धनके प्रथमांशपर परम उच्च होताहै और ३।६ राहुके ८।१२ केतुके स्वगृह हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

( अथ षड्वर्गसाधनम् ) होराराशिदलं समे प्रथमतश्चंद्रस्य भानोरतो व्यत्यासाद्विषमे दृकाणपतयः स्वाक्षांकभावाधिपाः ॥ मेषादादिमभेवृषे तु मकराद्युग्मे घटादिंदुभे कर्कादेवनवांशकानि गदिताः स्युर्द्वादशांशाः स्वभात् ॥ १० ॥

षड्वर्गमेंप्रथमहोरा कहतेहै कि समराशिकेप्रथमदल १५ अंशपर्यंत चंद्रमाकी उत्तरार्द्धमें १५ अंशसे३० पर्यंत सूर्यकी तथा विषम राशिमें

पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्यंत सूर्यकी उत्तरदल१५अंशसे३० पर्यंतचंद्रमाकी होरा होतीहै जैसे मेषके १५ अंशपर्यंत सूर्यकी १५सेउपर चंद्रमाकी वृषके १५ पर्यंत चंद्रमा उपर सूर्यकी होराहै ऐसेही सबके जानना॥ दृकाण प्रथम त्रिभाग१० अंशपर्यंत उसीराशिके स्वामीका, द्वितीय-भाग१० अंशसे २० अंशपर्यंत उसराशिसे पंचमराशिके स्वामिका द्रेष्काणहोताहै ॥ जैसे मेषके १० अंश पर्यंत मेषके स्वामिमंगलका १० से २० लौं उससे पंचम सिंहके स्वामि सूर्यका २० से ३० पर्यंत उससे नवम धनके स्वामिबृहस्पतिका दृकाण होताहै॥ नवांशक मेष सिंह धनको मेषसे वृषकन्या मकरको मकरसे मिथुन तुलाकुंभको मिथुनसे कर्क वृश्चिक मीनकोकर्कटसे गिनना अर्थात् चर स्थिरद्वि-स्वभाव राशि तीन तीनका १।५।९ त्रिकोण मेलहै इनमें ( चरादि ) जो चरराशिहो उससे नवांश गिनाजाताहै एकराशिके ३० अंशके९ भाग नवांश कहतेहैं वहविभाग ऐसेहैंकि ३अंश२०कलाका एकनव-मांशहै ६।४० पर्यंतदूसरा एवं१०।० तीसरा १३।२० चौथा१६।४० पंचम२०।० छठा २३।२० सातवां २६।४० आठवां ३०।० नवम भागहैं. जैसे मेषके मेषहीसे गिननाहै तो३अंश२०कलापर्यंत मेषका ६ अं०४०क०पर्यंत वृषका १०।० में मिथुनका तथा वृषमें मकरसे गिनती है तो ३।२० पर्यंत मकरका ६।४० लौं कुंभका इत्यादि मिथुनमें ३।२० में तुलाका ६।४० में वृश्चिकका इसी प्रकार जानना द्वादशांश एकराशिके बारह भागद्वादशांश होतेहैं२अंश३०कलाका एक द्वादशांश होताहै यह अपनीही राशिसे गिनाजाताहै जैसे मेषके २ अंश ३०कलापर्यंत मेषका५।०पर्यंत वृषकाएवं ७।३० मिथुनका १०।० कर्कका १२।३० सिंहका १५।० कन्याका १७।३० तुलाका २०।० वृश्चिकका २२। ३० धनका २५।० मकरका २७।३० कुंभका ३०।० में मीनका द्वादशांश जानना ऐसेही वृ-षमें वृषसे मिथुनमें मिथुनादिद्वादशांशसभीराशियोंमें जानने॥१०॥

**पंचपंचाष्टशैलाक्षास्त्रिशांशा विषमे क्रमात् ॥**
**भौमभानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात्समे ॥ ११ ॥**

त्रिंशांश ॥ विषम राशिके ५ अंशपर्यंत मंगलका पांचसे ऊपर १० अंशपर्यंत शनिका एवं १८ पर्यंत बृहस्पतिका २५ लों बुधका ३० पर्यंत शुक्रका त्रिंशांश और समराशि ( व्युत्क्रम ) विपरीत जैसे ५ अंशपर्यंत मंगलका १२ पर्यन्त शनिका २० प० बृहस्पतिका २५ प०बुधका ३० पर्यंत शुक्रका होताहै॥११॥

उच्चनीचराशियाँ ।

| ग्र. | र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्चराशि | १ | २ | १० | ६ | ४ | १२ | ७ | ३ | ८ |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | १ | १ |
| नीचराशि | ७ | ८ | ४ | १२ | १० | ६ | १ | ९ | ३ |
| अंश | १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | १ | १ |
| गृह | ५ | ४ | १/८ | ३/६ | ९/१२ | २/७ | १०/११ | ३/३ | ९/१२ |
| मूलत्रिकोण | ५ | २ | १ | ६ | ९ | ७ | ११ | ३ | १२ |
| रंग | रक्तश्या. | गौर | रक्तगौर | दूर्वश्या. | पीत | चित्र | कृष्ण. | कृष्ण | धूम्र |
| वर्णरंग | ताम्र | श्वेत | अतिर. | हरित | पीत | चित्र | कृष्ण | कृष्ण | धूम्र |
| देवतापति | अग्नि | जल | कुमार | विष्णु | चंद्र | इंद्राणी | ब्रह्मा | राक्षस | रा. |
| दिशापति | पू० | वा० | द० | उ० | ई. | आ. | प. | नै. | नै. |
| पापशुभ | पाप | शुभ क्षी.पा. | पा. | शुभपा. बु. पा. | शु. | शु. | पा. | पा. | पा. |
| पु.स्त्री.नपुं. | पु. | स्त्री | पु. | नपुं | पु. | स्त्री. | न. | पु. | न. |
| महाभूतप. | अग्नि | जल | अ. | भूमि | आका. | वायु | आ. | आ. | आ. |
| वर्णाधीश | राजा | वैश्य | रा. | वैश्य | ब्रा. | ब्रा. | अंत्यज | अं.रा. | अं.रा. |
| सत्वादिगु. | सत्व | सत्व | तम | रज | सत्व | रज | तम | तम | तम |
| स्थान | देवालय | जलाश | अग्नि | क्रीडाभु | भंडार | शयन | खात | छिद्र | छिद्र |
| वस्त्र | मोटा | नया | दग्ध | जलन | अदृढ | दृढ | स्फाटित | मलि | मलि |
| धातु | ताम्र | मणि | सुवर्ण | रौप्य | सुव. | मोती | लो. | शीश | शीश |
| ऋतु | ग्रीष्म | वर्षा | ग्री० | शरद | हेमं. | वसंत | शि. | ग्री० | ग्री० |
| नि. द. | ३ | १० | ९ | ५ | ८ | ४ | ७ | ७ | ७ |

नवांशगणना।

| | | | |
|---|---|---|---|
| च० १ | स्व० १० | च० ७ | च० ४ |
| १।५।९ | २।६।१० | ३।७।११ | ४।८।१२ |

नवांशविभाग।

| भाग | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ३० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |

त्रिंशांशन्यासः।

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विषमभे | ५ | ७ | ८ | ५ | ५ | ५ | ५ | ८ | ७ | ५ | समभे |
| | मं | श. | बृ. | बु. | शु. | शु. | बु. | बृ. | श. | मं. | |
| | ५ | १२ | २० | २५ | ३० | ५ | १० | १८ | २५ | ३० | |

राशिभेद।

| राशयः | मेष | वृष. | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि० | धन | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विषमादि | वि० | स० | वि० | स० | वि० | स० | वि० | स० | वि० | स० | वि० | स० |
| पुं. स्त्री. | पुं० | स्त्री० | पुं० | स्त्री० | पुं० | स्त्री० | पुं० | स्त्री० | पुं० | स्त्री० | पुं० | स्त्री० |
| क्रूराक्रूर | क्रू० | सौ० | क्रूर | सौ० | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौम्य | क्रूर | सौ० |
| चरादि | चर | स्थिर | द्विस्व. | च० | स्थि० | द्वि० | च० | स्थि० | द्वि० | च० | स्थिर | द्वि० |
| दिशा | पू० | द० | प० | उ० | पू० | द० | प० | उ० | पू० | द० | प० | उ० |
| संज्ञा. | चतुष्प. | चतु. | द्विपद | कीट. | चतु. | द्वि. | द्विपद | कीट | पूर्वार्द्धद्वि पद. | जी.ज ल | नर | जलच. |

चरणविवृद्ध्या खेटादश-
मसहोत्थे त्रिकोणभे जन-
ने ॥ चतुरस्रेथ कलत्रे प्रय-
ताः पश्यंति तत्फलं क्र-
मतः ॥ १२ ॥

ग्रहदृष्टि ॥ जिसभावमें ग्रहहै उस ते तीसरे दशवें स्थानमें एक चरण दृष्टि देखताहै ९।५ में दो चरण ८।४ में तीन चरण सप्तममें पूरे चार चरण दृष्टि देखताहै ऐसाही फलभी दृष्टिका देताहै कोई ऐसाभी अर्थ करते हैं कि, सूर्य तीसरे चंद्रमा दशममें मंगल नवममें बुध पंचममें बृहस्पतिअष्टममें शुक्र चतुर्थमें शनि सप्तममें पूर्ण देखतेहैं यह निसर्ग दृष्टिहै ॥ १२ ॥

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरावजादितः ॥
नरनारीक्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥ १३ ॥

मिथुनं धन्विपूर्वार्द्धंतुलाकन्याघटोनराः ॥
चतुष्पदा धनुःसिंहवृषमेषा मृगादिमः ॥ १४ ॥
मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो वृषभ आदिमः ॥
कन्याधनुस्तुलाकुंभः प्रवदंति पुरातनाः ॥१५॥
इति भावकुतूहले संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

मेषादिराशिक्रमसे चर, स्थिर, द्विस्वभावसंज्ञक हैं मेष चर वृष स्थिर मिथुन द्विस्वभाव कर्क चर इत्यादि (प्रकट) १।४ ७।१० चर २।५।८।११ स्थिर ३।६।९।१२ द्विस्वभाव हैं ऐसेही मेष क्रूर वृष सौम्य मिथुन क्रूर इत्यादि (प्रगट) १।३।५।७।९।११ क्रूर २।४।६।८।१०।१२ सौम्य हैं ऐसेही मेषपुरुष वृषस्त्री मिथुन पु० इत्यादि (प्रगट) विषम राशि पुरुष समस्त्री संज्ञकहैं ऐसेही विषम सम क्रमसे जानने जैसे मेष विषम वृष सम इत्यादि (प्रगट) १।३।५।७।९।११ विषम २।४।६।८।१०।१२ समहैं और मिथुन, धनका पूर्वार्द्ध, तुला, कन्या, (द्विपद) मनुष्य धनका उत्तरार्द्ध सिंह; वृष, मेष, मकरका पूर्वार्द्ध चतुष्पद, उपलक्षणसे मकरकाउत्तरार्द्ध कुंभ मीन जलचरहैं कर्कवृश्चिक कीटहैं और सूर्यकामूलत्रिकोण सिंह चंद्रमाका वृष, मंगलका मेष, बुधका कन्या, बृहस्पतिकाधन, शुक्रका तुला, शनिका कुंभहै यह प्राचीन आचार्य्योंने कहाहै ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरी भाषायां संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

---

यहांसे जन्मलग्न निश्चयकरनेकेलिये चिह्न कहे जाते हैं.

(अथ जातकचिह्नज्ञानम्) जनुषि लग्न गतो वसुधासुतः दमनगोपिगुरुः कविरेववा ॥ भवति

तस्य शिरोव्रणलांछितं निगदितं यवनेन महात्मना ॥ १ ॥

जिसके जन्म लग्नमें मंगल तथा सप्तम बृहस्पति अथवा शुक्र हो तो उसके शिरमे चोटलगनेसे यद्वा वरणादिसे ( दाग ) खोट होवे यह योग महात्मा यवनका कहा है ॥ १ ॥

भवति लग्नगते शितिनंदने भृगुसुतेपि विधा विह जन्मिनाम् ॥ शिरसिचिह्नमुदाहृतमादिभिर्मुनिवरैर्द्विरसाब्दसमासतः ॥ २ ॥

मंगल लग्नमें शुक्र चंद्रमा सहित जिस मनुष्य का हो उसके शिरमें दूसरे अथवा छठे वर्षमें चिह्नहोवै यह पूर्व मुनियोंने कहाहै इसमें स्मरण चाहिये कि, मंगल बलीहो तो ( व्रण ) दाग और शुक्र चंद्रमा बली हों तो तिल ( मशक ) लाखन आदि चिह्न होते हैं ॥ २ ॥

भार्गवे जनुरंगस्थे चाष्टमे सिंहिकासुते ॥
मस्तकेवामकर्णे वा चिह्नदर्शनमादिशेत् ॥ ३ ॥

जन्म लग्नमें शुक्र तथा अष्टम स्थानमें राहु हो तो माथेमें अथवा बांयेकानमें कुछ प्रकार चिह्न होवे ॥ ३ ॥

मदनसदनमध्ये सिंहिकानंदने वा सुरपति गुरुणा चेदंगराशौ युते नुः ॥ प्रकथितमिह चिह्नं चाष्टमे पापखेटे कविरपि गुरुरंगे वामबाहौ मुनीन्द्रैः ॥ ४ ॥

सप्तम भावमें राहु लग्नमें बृहस्पति हो अथवा लग्नमें बृहस्पति राहु युक्तहों अष्टम भावमें पापग्रहहों अथवा शुक्र बृहस्पति ल-

ग्नमें अष्टममें पाप ग्रह हों तौभी मनुष्यके बांये (बाहु) भुजापर चिह्न होवें यह योग मुनि श्रेष्ठोंका कहाहै ॥ ४ ॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते ॥
वामपार्श्वे गतं चिह्नं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥ ५ ॥

लाभ (११) आरि (६) सहज (३) अथवा (व्यय) १२ वें स्थानमें मंगल शुक्रसहित हो तो बांयें बगलकी ओर (व्रण) खोटका चिह्न होवै ॥ ५ ॥

लग्ने क्षितिसुते मंदे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे ॥
लिंगे गुदसमीपे वा तिलकं संदिशेद्बुधः ॥ ६ ॥

लग्नमें मंगल तथा शनि ५।९ स्थानमें हो परंतु इसपर शुक्र की दृष्टिभी हो तो (गुदा) मलद्वार के समीप अथवा लिंगस्थानमें तिलका चिह्न होवै ॥ ६ ॥

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविर्यदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ ॥ शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा सचिह्नं जठरं नरस्य ॥ ७ ॥

शुक्र पंचम वा नवम हो अष्टमस्थानमें बुध बृहस्पति और लग्नमें वा चतुर्थ स्थानमें शनि हो तो मनुष्यके (उदर) पेटपर चिह्न होवैं॥७॥

धनेकवावष्टमलग्नभे वा दिवाकरेमंदकुजौतृतीये ॥ कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिह्नं विशेषादिह जातकज्ञः ॥ ८ ॥

धन (२) स्थानमें शुक्र तीसरे शनि मंगल हो अथवा अष्टम

भावमें वा लग्नमें सूर्य और तीसरे शनि मंगल हो तो जातक शास्त्र जाननेवालेने मनुष्योंके कमरमें चिह्न कहना ॥ ८ ॥

पातालस्थौराहुशुक्रौ लग्नेमंदः कुजोपिवा ॥
पादमूलेथ वा पादे वामे चिह्नं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

चतुर्थ स्थानमें शुक्र राहु लग्नमें मंगल अथवा शनि हों तो पैरके नीचे अथवा पैरपर चिह्न होवे यह बांये पैर यद्वा पैरके बांये ओर कहना ॥ ९ ॥

व्यये गुरौ विधौभाग्ये लाभारिसहजे बुधे ॥
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद्बुधः ॥ १० ॥

बारहवें भावमें बृहस्पति नवममें चंद्रमा तथा ११।६।३ में से किसीमें बुध हो तो ( गुदा ) मलद्वारमें गोलाकार चिह्न अथवा ( व्रण ) किसी प्रकार दाग पंडितने कहना ॥ १० ॥

दिनपतौ नवमे हरिभे यदा सहजहानिरवश्यमिहांगिनाम् ॥ धनगते रविजे तनुगे गुरावगुरुगेजननी नहि जीवति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें सूर्य नवम सिंहका हो तो अवश्यमेव उसके भाईयोंकी हानि होवे और दूसरा शनि लग्नमें बृहस्पति निर्बल नीच शत्रु राशि अंशकादियोंमें अथवा अस्तंगत पापपीडित हो तो उस बालककी माता नहीं बचै ॥ ११ ॥

सुरगुरौ धनभावगते यदा कुजयुते शनिनापि च जन्मिनाम् ॥ अगुयुते सहजे सहजासुखं निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥ १२ ॥

बृहस्पति धन भावमें मंगल तथा शनिसे युक्तहो और तीसरा भाव राहुसे युक्त हो तो भाईयोंकासुख नहो प्रत्युत भ्रातृपक्षीय (असुख) क्लेशहोवै अथवा (सहजा बहिनो का सुख) अर्थात् बहिन हों भाईनहों यहभी अर्थ है यह योग यवनोंने पूर्वाचार्यसंमतिसे कहाहै ॥ १२ ॥

अरिनिकेतनगेवनिनंदने भवति राहुयुते निधने शनौ ॥ निगदितं सहजो जनिमात्रतो यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले लग्नचिह्नाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

छठा मंगल तथा अष्टम शनि राहुयुक्त हो तो उसके जन्महोने होमें उसका भाई मरजावै यह प्राचीनाचार्य्योंने कहा है ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

(अथारिष्टाध्यायः) तुहिनकिरणहोरिका च संध्या भचरमगाः खलखेचरा जनौ चरेत् ॥ मृतिरथ रजनीशपापखेटैरखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥ १ ॥

बालकका सबसे प्रथम अरिष्ट विचार करना चाहिये बाल्यारिष्टोंसे बचजाने पर अन्य ज्योतिषोक्त फलादेशभी कहाजासकता है. अरिष्ट योग जानकर उसका उपाय दीर्घायुकारक वैदिकतांत्रिकोक्त प्रकारसे मनुष्य करसकते हैं. इस निमित्त अरिष्ट योग कहतेहैं कि संध्याकालमें जन्महो उस समय लग्नमें चंद्रमा का होराहो तथा कोई पापग्रह राशिके अंत्य नवांशकमें हो तो वह बालक नहीं बचेगा अथवा पापयुक्त चंद्रमा केंद्रमें हो तथा अन्य तीनहूं केंद्रोंमें पापग्रह हों तोभी वही फल कहना पूर्वोक्त योगमें संध्या

कही है उसका प्रमाण सूर्यास्तसे वा सूर्योदयसे डेढघटी पूर्व डेढ पीछेकी समस्त,३ घटी पर्यंत संध्याजाननी ॥ १ ॥

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीटलग्ने ॥ विरतिं समुपैति बालकोयं खलखेटैरपि कामिनीतनुस्थैः ॥ २ ॥

( राशिचक्र ) लग्नकुण्डलीके लग्नसे सप्तमपर्यंत चक्रपूर्वार्द्ध अष्टमसे द्वादश पर्यंत उत्तरार्द्धहै चक्रके पूर्वार्द्धमें पापग्रह उत्तरार्द्धमें शुभग्रहों और लग्नमें ( कीटराशि ) ४।८ हो तो बालक मरजावै तथा पापग्रह स्त्रीसंज्ञक ( सम ) राशियोंका लग्नमें हो तो भी वही फल जानना ॥ २ ॥

खलखगसहितो निशाकरोयं तनुमृतिमारगतोहि जन्मकाले ॥ मृतिपदमुपयाति देवबालोऽपिच स कलैरविलोकितो न सौम्यैः ॥ ३ ॥

पापयुक्त चंद्रमा लग्न ( १ ) मृति ( ८ ) मार ( ७ ) भावमें जन्मकालकाहो उसे पापग्रह देखें शुभग्रहोंकी दृष्टिउसपर न हो तो वह बालक मृत्यु पदको प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

अशुभावगोदयगतौ शुभदैरवलोकितो न खलु युक्त विधुः ॥ मृतिरंत्यगे कृशविधौ कुगजागभगैः खलैर पिविकेंद्रशुभैः ॥ ४ ॥

दो पापग्रह स्थिरराशि लग्नमें हों चंद्रमा पर शुभग्रहोंकी दृष्टिनहो शुभग्रहोंसे युक्तभी नहो तो बालककी मृत्युहोवै और क्षीण चंद्रमा बारहवें लग्न अष्टम भावोंमें स्थिर राशियोंके पापग्रह हों केंद्रोंमें शुभग्रह नहों तो वही फल जानना ॥ ४ ॥

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः पापैःस्यात्सपदि युतेक्षितेपि जंतोः ॥ अष्टाब्दैः शुभखचरैश्च मिश्रखे टैर्वेदाब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत् ॥ ५ ॥

चंद्रमा छठा आठवां पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु देताहै यदि वह शुभग्रहोंसे युक्त दृष्टभी हो तो८ वर्ष पर्यंत बचताहै यदि शुभ पाप दोनहूंसे युक्त दृष्टहो तो ४ वर्षजीवताहै यह मुनियोंका निरूपणकिया हुआ है ॥ ५ ॥

अरिविरतिगते शुभे च दृष्टे बलसहिते न खलेन मासमायुः ॥ मदनसदनगेपि लग्ननाथे खलविजिते ध्रुवमस्य माससमायुः ॥ ६ ॥

छठां आठवां कोही शुभग्रह हों उसे बलवान् पापग्रहदेखे उपलक्षणसे युक्तभी होतो उसबालककी एकही महीनेकी आयुहोवे तथा लग्नेश सप्तम पाप ग्रहोंसे ( विजित ) युद्धमें हराहुआ वा नीचादिनिर्बल होकर पापपीडित हो तो निश्चय वही फल जानना ॥ ६ ॥

कृशशशिनि तनौ खलेष्टकेंद्रे मृतिरथ शीतरुचौ खलांतराले ॥ मुनिहिबुकलयस्थितेपि लग्ने मुनिलय गैश्च सहांबया खलैः स्यात् ॥ ७ ॥

क्षीण चंद्रमा लग्नमें पापग्रह आठवें तथा केंद्रोंमें हों तो शीघ्र मृत्युहोवे और चंद्रमा पापग्रहोंकेभी १ । ७ । ४ । ८ मेंसे किसीभावमें हों तथा ७ । ८ भावोंमें पापग्रहभी हो तो वह बालक मातासहित मरजावे ॥ ७ ॥

भविरतिगतशोभनैरदृष्टे शशिनि नवेषु गतैः खलैर्मृतिःस्यात् ॥ तनुगतहिमगौ खले नगस्थे मृतिरुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥ ८ ॥

लग्न वा अष्टम गत चंद्रमापर शुभग्रहोंकी दृष्टि नहो तथा ९।८ भावोंमें पापग्रह हों तो शीघ्रही बालककी मृत्युहोवै और चंद्रमा लग्नमें पापग्रह सप्तममें होतो मुनियोंने अवश्य बालककी मृत्यु कहीहै ॥ ८॥

असुरमुखगते खलेनयुक्ते तनुगविधौ सममंवयालयारे ॥ मृतिरथतनुगे रवौ सशस्त्रं ग्रहणगते खलसंयुतेपि मृत्युः ॥ ९ ॥

राहुके साथ यद्वा ग्रहण समयका चंद्रमा पाप युक्त होकर लग्नमें हो मंगल अष्टम स्थानमें हो तो मातासहित बालक मरे इस योगमें यदि सूर्यभी लग्नमें हो तो शस्त्रसे उनकी मृत्यु होवै सूर्य वा चंद्रमा ग्रहण समयका शनिसे युक्त लग्नसे हो तौभी वही फलहै ॥ ९ ॥

सबलशुभखगैर्युते न दृष्टे तुहिनकरे दिनपेऽथवा तनौ चेत् ॥ निधननवसुताश्रिताः खलाःस्युर्निधनमिहाशुवदंतिवै मुनीन्द्राः ॥ १० ॥

सूर्य अथवा चंद्रमा लग्नमें पाप युक्त दृष्टहो उसे बलवान् शुभग्रह न देखे न युक्त शुभग्रहसे हो तथा ८।९।५ भावोंमें पापग्रहसे हो तथा ८।९।५ भावोंमें पापग्रह हों तो बालककी मुनीन्द्र शीघ्रही मृत्यु कहते हैं ॥ १० ॥

शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेणव्ययनवलग्नलयाश्रितै मृतिः स्यात् ॥ सबलसुरपुरोहितेनदृष्टैर्न हि मरणं गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥ ११ ॥

बारहवां शनि नवम सूर्य लग्नका चंद्रमा अष्टम मंगल हो तो बालककी मृत्यु होवै. परंतु उक्तमृत्युकारक योगोंपर बलवान्बृहस्प तिकी दृष्टि हो तो मृत्यु नहीं होती और उपलक्षणसे दुष्टयोग शुभग्रहोंकी दृष्टि एवं योगसे मृत्यु नहीं करते अरिष्ट देतेहैं कदाचित उपायोंसे अरिष्टोंकी शांति करतेहैं ॥ ११ ॥

लयमारलग्नवधीव्ययगः खलखेचरेण सहितः सितगुः ॥ अवलोकितो नहि युतश्च शुभैर्नियतं भवेत्स मरणाय तदा ॥ १२ ॥

चंद्रमा पापग्रहसहित ८।७।१।९।५।१२ में से किसी भावमें बालकका हो तथा उसपर शुभग्रहकी दृष्टि नहो न उसके साथ शुभ ग्रह हो तो मृत्यु निश्चय करके शीघ्रही होतीहै ॥ १२ ॥

बलियोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तवानपि यदास्ति विधुः ॥ बलसंयुतः खलजदृक्सहितः शरदंत एव मृतिद स तदा ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले बाल्यारिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

उक्त योगोंमेंसे जिनके फलका समय नहीं कहागया उनकेलिये कहतेहैं कि, बलवान् योगकारक ग्रह जिसमें बैठा है उसपर जब चंद्रमा आवे अथवा जन्मराशिपर जब आवे अथवा लग्नराशिपर आवे परंतु इसपर पापग्रहकी दृष्टिभी हो तो उस समय अरिष्टयोगका अरिष्ट होता है यह विचार एकवर्षके भीतर है ऊपर नहीं ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां बाल्यारिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

(अथपित्राद्यरिष्टम्) आदित्याद्दशमेपापः पीडितोदश माधिपः।तदापितुर्महाकष्टं निधनं वेतिकीर्तितम्॥१॥

सूर्यसे दशम पाप ग्रह हो तथा लग्नसे दशम भावका स्वामि ( पीडित ) पापयुक्त हो तो बालकके पिताको बडा कष्ट अथवा मृत्यु होवे ॥ १ ॥

भवति यदि शशांकः पापयोरंतराले जनुपि सुखन गस्थैः पापखेटैः शशांकात् ॥ विधुरपि बलहीनो नष्टकांतिर्जनन्या निधनमपि विशेपादाहुराचार्य वर्य्याः ॥ २ ॥

चंद्रमा पापांतर्गत हो तथा चंद्रमासे ४। ७ भावोंमे पाप ग्रह हों और चंद्रमा बलरहित एवं क्षीणभी हो तो ऐसा योग जन्ममें होनेसे श्रेष्ठ आचार्योंने बालककी माताकी मृत्यु कही है ॥ २ ॥

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले धरानंदनाक्रांत भावात्सहोत्थे ॥ तदैवासुनाशं सहोत्थस्य धीरा मणित्थादयः प्राहुराचार्य्यमुख्याः ॥ ३ ॥

यदि जन्मसमयमें पापग्रह मंगलस्थितराशिसे तीसरे हों तो शीघ्रही भाईयोंका नाश होवे- यह मणित्थआदि मुख्य आचार्य पंडितोंने कहाहै ॥ ३ ॥

बुधारातिभावे तु पापा भवंति वृतं ज्ञोपि नीचाश्रितो नष्टवीर्य्यः ॥ तदा मातुलानां विनाशो विशेपादिति प्राहुराचार्य्यवर्य्या नराणाम् ॥ ४ ॥

बुधसे छठे स्थानमेंपापग्रह हों बुध पापांतस्थ वा पापयुक्त तथा

बलहीन नीचराशिअंशकमें हो तो विशेषतः मनुष्योंके ( मातुल ) मामाओंका विनाश होवै यह श्रेष्ठआचार्यों का मतहै ॥ ४ ॥

बृहस्पतेः पंचमभावसंस्था महीजमंदागुदिवाकरा श्चेत् ॥ गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥ ५ ॥

बृहस्पतिसे पंचम स्थानमें मंगल, शनि, राहु, सूर्यमेंसे कोई भी ग्रह हो तथा बृहस्पतिसे पंचम भावका स्वामि पापयुक्त हो तो उस मनुष्यके पुत्र न हो अथवा पुत्रहानि होवै ॥ ५ ॥

चेत्कवेरंगनागारगामीकुजातो विनाशोऽङ्गनायाः स पापो निरुक्तः ॥ नैधने मंदतः पापखेटाबलिष्ठान्नृणां नैधनं सत्वरं संदिशन्ति ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

शुक्रसे सप्तम स्थानमें मंगल पापयुक्त हो तो स्त्रीहानि करताहै और शनिसे अष्टम पापग्रह बलवान् हो तो मनुष्योंके अल्प मृत्यु करतेहैं ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

---

( अरिष्टभंगः ) भवतीन्दुरथो शुभांतराले परिपूर्णः किरणैश्च जन्मकाले ॥ विनिहंति तथाशु दोषसंघा निभसंघानिव केसरी बलिष्ठः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त बाल्यारिष्ट योगोंके परिहार अरिष्टभंगयोग कहतेहैं कि जन्म समयमें चंद्रमा शुभग्रहोंके बीचमें तथा पूर्णभी हो तो उक्तप्रकार दोषसमूहको नाश करताहै- जैसे बलवान् सिंह हाथियोंके झुंडको नाशकरताहै- तैसेही यह चंद्रमा करताहै ॥ १ ॥

यदि जनुपि निशाकरोरिभावं गुरुकविचंद्रजवर्गगो विशेपात्॥ शमयति बहुकष्टजालमद्धा मुरहर नाम यथाघसंघतापम्॥ २॥

जो जन्ममें चंद्रमा छठे स्थानमें. (शुभग्रह) बृहस्पति, शुक्र, बुध के (वर्ग) राशिअंशकादियोंमें हो तो विशेपतासे बहुत कष्टोंके जालको साक्षात् शमित करदेताहै. जैसे मुरदैत्यके मारनेहारे श्रीभगवान्‌का नामकीर्तन पापसमूहको शमित करता है॥ २॥

यदि सकलनभोगवीक्ष्यमाणो लसिततनुर्जनुरिंदुरेवसद्यः॥ दिविचरजनितं निहंति दोपं खगपतिराशु यथा भुजंगजालम्॥ ३॥

यदि जन्ममें चंद्रमा पूर्णमूर्ति हो तथा उसे सभी ग्रह देखें तो यही एक ग्रह ग्रहोंसे उत्पन्न (दोप) अरिष्टको तत्कालही नाशकरदेताहै जैसे सर्प (जाल) समूहको गरुड शीघ्र नाश करता है॥ ३॥

भवति यदि तनोः क्षपाकरोयं मृतिभवने शुभखेटवर्गगश्चेत्॥ गदविकलतनुं पितेव बालं किल सरितः परिरक्षति प्रसन्नः॥ ४॥

यदि चंद्रमा लग्नसे अष्टम स्थानमें शुभग्रहके (वर्ग) राशि अंशादियोंमें हो तो समस्त अरिष्टोंसे बचताहै. जैसे रोगी बालकको उसका पिता सर्वतः रक्षा करता है॥ ४॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे जनिसमये कविनाव

लोकितश्चेत् ॥ शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं जल मिव पावकमंगिनामतीव ॥ ५ ॥

यदि चंद्रमा जन्मसमयमें शुभग्रहके राशिमें एवं अंशक में हो व शुक्र उसे देखे तो समस्त अरिष्टोंको शमितकरता है जैसे जल अग्निको शमितकरदेताहै ॥ ५ ॥

बलवानपि केंद्रगो विशेषादिह सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः ॥ शमयत्यखिलामरिष्टमालामपि गांगं हि जलं यथाघजालम् ॥ ६ ॥

यदि बुध उपलक्षणसे अन्य शुभग्रहभी बलवान्हो विशेषतः केंद्रमें हो तथा लाभभावमें सूर्य हो तो संपूर्ण अरिष्टरूपी मालाको शमितकरताहै. जैसे गंगाजल समस्त पापजालको शमितकरताहै ॥ ६ ॥

भवति हि जनुरंगपो बलिष्ठः सकलशुभैरवलोकितो नपापैः॥ इह मृतिमपहाय दीर्घमायुर्वितरति वित्तसमुन्नतिं विशेषात् ॥ ७॥

जन्मलग्नेश बलवान् हो तथा उसे समस्त शुभग्रह देखें पाप ग्रह न देखें तो मनुष्यको मृत्यु हटाय कर दीर्घायु कर देताहै तथा विशेष करके धनकी उन्नति ( वृद्धि ) भी करता है ॥ ७ ॥

सुरपतिगुरुरंगधामगामी निजपदगोपि चतुरंगतामुपतः ॥ बहुतरखगजं निहंति दोषं हरिरिभयूथमुपागतं हि यद्वत् ॥ ८ ॥

लग्नमें बृहस्पति अपनी राशि वा अंशमें हो अथवा अपने उच्चराशि ( ४ ) अंशकमें हो तो बहुत प्रकार ग्रहदोषोंको नाश

करताहै जैसे सिंहहाथियोंकेझुंडमेंजाकरउनकानाशकरताहै ॥ ८॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः सकलशुभैरवलोकिता यदि स्युः॥ खगकृतमपि वारयंति रिष्टं तृणराशीनिव वह्निबिंदुरेकः ॥ ९ ॥

पापग्रह बृहस्पति शुक्र बुधके राशि अंशमें हों तथा उन्हें शुभग्रह देखें तो अरिष्टाध्यायोक्त अरिष्ट दूर होते हैं जैसे अग्निका एक (बिंदु) कण तृण घास के पुंजको फूँकदेताहै ॥ ९ ॥

सहजरिपुगतोथ लाभगो वा सकलशुभैरवलोकितोयुतो वा॥अगुरिह विनिहंति रिष्टजालं नगजाधीशइवाधितापराशिम् ॥ १० ॥

राहु जन्म लग्नसे ३ । ६ ।११ भावोंमेंसे किसीमें हो तो समस्त शुभग्रह उसे देखें अथवा शुभग्रह युक्त हो तो अरिष्ट रूपी जालको नाश करताहै जैसे (नगजा.) पार्वतीके पति शिव, तीन प्रकारके ताप शांत करतेहैं ॥ १० ॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा यदि सकला नरराशिगा भवंति ॥ हितभवननिजोच्चगेहगा वा बहुतरमाशुलयंप्रयाति रिष्टम् ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहले अरिष्टभंगाध्यायः पञ्चमः॥ ५ ॥

जन्मसमयमें बलवान् ग्रह (पुरुष) विषम राशियोंमें सभी हों अथवा मित्रके घरमें, अपने उच्चराशिमें, हो तो बहुत प्रकारके अरिष्ट नाशहोतेहैं ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायामरिष्टभंगाध्यायः पंचमः ॥ ५॥वि

---

## अथ पुत्रभावविचारः।

नंदनाधिपतिना युतेक्षितं नंदनं शुभनभोगसंयुतम् ॥ नंदनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन नहि नंदनागमः ॥ १ ॥

गृहस्थको संतान उत्पन्न करना मुख्य कर्तव्यहै परंतु यह दैवाधीनहै इसलिये प्रथम संतानभावविचार करते हैं कि पंचमभावेश पंच भावमें हो अथवा पंचमभावको देखे तथा पंचम भाव शुभग्रह से युक्त हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न होगा यदि उक्त प्रकारसे विपरीत अर्थात् पंचमेश तथा शुभग्रह पंचम नहीं न उसे देखें पापग्रह पंचममेंहों तथा पंचमको देखें तो पुत्रसुख न होवैं ऐसे योग जन्म, वर्ष, प्रश्न, सभीमें देखे जाते हैं ॥ १ ॥

अंगाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात्॥ सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतोवेति सुतश्च कन्या ॥ २ ॥

लग्नेश लग्न, धन, तृतीयमेंसे किसीमें हो तो प्रथम पुत्र पीछे कन्या होगी यदि लग्नेश चतुर्थ हो तो मनुष्यके प्रथम कन्या पीछे पुत्र पुनः कन्या पुनः पुत्र होते हैं अथवा कन्या पुत्र यमल-होते हैं परंतु इसमें लग्न, लग्नेश, पंचम पंचमेश द्विस्वभाव गत हो तब ये फल होतेहैं ॥ २ ॥

यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः ॥ तावंत एवास्य भवंति पुत्राःकन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥ ३ ॥

पंचम भावमें जितने पुरुप ग्रहोंकी दृष्टिहों उतने पुत्र तथा जितने स्त्रीग्रहोंकी दृष्टिहों उतनी कन्या होती हैं परंतु योगकारक ग्रह यदि स्वगृह उच्चादि बलसहित हों तो द्विगुण त्रिगुण उत्पन्न करतेहैं नीचशत्रु राशिगत उतने संख्यक गर्भहानि करतेहैं ॥ ३ ॥

सहजभावपतिःसहजे यदा तनुगतो धनगो व्यय गोपिवा॥सुतगतःसुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥ ४ ॥

तृतीयभावका स्वामि तीसरा, लग्नमें दूसरा बारहवां, अथवा पंचम हो तो संतानहानि करता है यह वराहमिहिरादि श्रेष्ठपंडितोंने कहा है ॥ ४ ॥

शुक्रांगारनिशाकरा द्वितनुगाः संतानसौख्यं नृणा मादौ संजनयंति जन्मसमये चापं विना प्रायशः॥ मीने वा धनुपि प्रमाणपटवः संतानभावे यदा संतानं न तदामनंतिविबुधाः पुंसां विशेपादिह॥५॥

शुक्र मंगल चंद्रमा द्विस्वभाव राशियोंमें विशेपतः पंचम भावमें हो तो प्रथमहीसे संतानका सुख देते हैं परंतु विशेपतः धनके होनेमें उक्त फल नहीं देते यतः बृहस्पतिके राशि मीन अथवा धन पंचमभावमें हो तो मनुष्योंको पंडिजन संतान सुखविशेष नहीं कहते ॥ ५ ॥

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मंदे तुलायामजे चंद्रे यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोसौ भवेत् ॥ लग्ने चंद्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेपि वीर्यच्युतो जीवेंगे शरवौ मृतावपि कुजे क्लीबर्क्षगे कंटके ॥ ६ ॥

जिसमनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य कर्कका, शुक्र सिंहका, शनि तुलाका, चंद्रमा मेषका हो तो वह ( वीर्यच्युत ) नपुंसक किंवा धातुक्षीणवाला होवै अर्थात् क्लीबतासे संतान नहोनेपावें तथा लग्नमें चंद्रमासहित बृहस्पति पंचममें शनि हो तो वीर्य क्षीण होवै अथवा बृहस्पति लग्नमें सूर्यसहित तथा अष्टममें मंगल हो और नपुंसक ग्रह केंद्रमें हो तो नपुंसक होवै ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमंदावलोकिते ॥
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥ ७ ॥

लग्नमें कन्याराशि हो उसपर बुध शनिकी दृष्टिहो तथा शुक्र शनिके क्षेत्र १०।११ में हो तो वह मनुष्य वीर्य्यहीन ( नपुंसक ) होवै ॥ ७ ॥

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमेरवौ ॥
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ ८ ॥

बृहस्पति अथवा शुक्र नीचका हो तथा बुध समराशिमें सूर्य विषमराशिमें हो तो पुत्रका सुख न होवै यह उत्तम ज्योतिषियोंका कथनहै ॥ ८ ॥

कर्कटेतु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा ॥
मंददृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेब्दके ॥ ९ ॥

चंद्रमा कर्कटका हो उसे पाप ग्रह देखे पापयुक्तभी हो और सूर्यपर शनिकी दृष्टि हो तो ६० वर्षकी अवस्थामें पुत्र उत्पन्न होवै ॥ ९ ॥

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ ॥
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाब्दात्परं सुतः ॥ १० ॥

पंचम भावमें जितने पुरुष ग्रहोंकी दृष्टिहों उतने पुत्र तथा जितने स्त्रीग्रहोंकी दृष्टिहों उतनी कन्या होती हैं परंतु योगकारक ग्रह यदि स्वगृह उच्चादि बलसहित हों तो द्विगुण त्रिगुण उत्पन्न करतेहैं नीचशत्रु राशिगत उतने संख्यक गर्भहानि करतेहैं ॥ ३ ॥

सहजभावपतिःसहजे यदा तनुगतो धनगो व्यय गोपिवा॥सुतगतःसुतहानिकरो नृणां बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥ ४ ॥

तृतीयभावका स्वामि तीसरा, लग्नमें दूसरा बारहवां, अथवा पंचम हो तो संतानहानि करता है यह वराहमिहिरादि श्रेष्ठपंडितोंने कहा है ॥ ४ ॥ १० ॥ ह। पा अपुत्र होने

शुक्रांग चंद्रमासे दृष्टहो यह ऐसाही लग्नमें पापदृष्ट हो तो भा। अपुत्र करताहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

मंदालयेर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेपि वा पापखगस्य वर्ग ॥ अपत्यहानिः कुलदेवकोपात्पुरातनैरंगभृतांनिरुक्ता १३

शनिके राशि १०।११ में सूर्य पाप ग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा पाप ग्रहके ( वर्ग ) राशि अंशकोंके लग्नमें हो तो कुलदेवताके कोपसे संतानकी हानि कहनी यह फल मनुष्योंको प्राचीनाचार्योंने कहाहै ॥ १३ ॥

अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं विनिहंति सद्यः ॥ अस्तांशके पापयुते सुतेशे तदान संतान सुखं वदंति ॥ १४ ॥

पंचम स्थानमें मंगल हो तो जितने पुत्रहों सभीको नाश

जिसमनुष्यके जन्मसमयमें सूर्य कर्कका, शुक्र सिंहका, शनि तुलाका, चंद्रमा मेषका हो तो वह (वीर्यच्युत) नपुंसक किंवा धातुक्षीणवाला होवै अर्थात् क्लीवतासे संतान नहोनेपावैं तथा लग्नमें चंद्रमासहित बृहस्पति पंचममें शनि हो तो वीर्य क्षीण होवै अथवा बृहस्पति लग्नमें सूर्यसहित तथा अष्टममें मंगल हो और नपुंसक ग्रह केंद्रमें हो तो नपुंसक होवै ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमंदावलोकिते ॥
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥ ७ ॥

लग्नमें कन्याराशि हो उसपर बुध शनिकी दृष्टिहो तथा शुक्र शनिके क्षेत्र॥ लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो ॥ वीर्य्यहीन ( नपुं-

सुखेन हीन ॥ १६ ॥

निर्बलसूर्य पंचमहो तो जितने बालकहों उतनेहीं का नाश करे व लग्नेश पापयुक्त और पंचमेश ८। १२ में हो तो पुत्रसुखसे रहित रहै ॥ १६ ॥

यदागुसूर्यारशनैश्चराणां दोषो यदा जन्मनि मान वानाम् ॥ वंशेशकोपे नसुतस्य नाशं तदा वदंतीति पुराणविज्ञाः ॥ १७ ॥

यदि जन्मकालमें संतानहानिकारक राहु सूर्य शनैश्चर का दोष हो अर्थात् ये ग्रह संतानहानिकारक हों तो "वंशेश" ) कुलदेवताके कोपसे संतानकानाश जानना उसके मनोहर पूजादि करनेसे संतानसुख होताहै यह पुराणाचार्य्योंका मत है१७॥

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात् ॥
गुरोचंद्रकृते दोषे यंत्रमंत्रौषधीबलात् ॥ १८ ॥

यदि बुध शुक्र संतानहानिदोपकारक हों तो शिवके (पूजन) आराधन करनेसे पुत्रप्राप्ति होवे बृहस्पति चंद्रमाका दोष हो तो अनेक प्रकार यंत्र, मंत्र, साधन तथा दिव्य औषधि प्रयोगसे संतान सुख होताहै ॥ १८ ॥

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्त्तनम् ॥
शिखिना कपिलादानं मंदाराभ्यां पडंगकम्॥१९॥

संतानबाधनका राहु हो तो किसीको किसी प्रकार कन्या दान करना सूर्यका दोप हो तो (विष्णुका कीर्तन) भगवानका आराधन विशेपतः हरिवंशका आराधन करना केतु हो तो कपिला गोदान करनी शनि मंगल बाधक हो तो (पडंग) रुद्राध्यायका अनुष्ठान रुद्राभिपेक घटीस्नानादि करना ॥ १९ ॥

सर्वदोपविनाशाय संतानहरिपूजनम् ॥
कुर्य्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥ २० ॥
इति भावकु० पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

समस्त दोपशांतिके लिये संतानगोपालका अनुष्ठान पूजन करना. तथा भौमव्रत अथवा कामदेवव्रत शास्त्रोक्त प्रकारसे करना औरभी उपाय धर्मशास्त्रआगम शास्त्रोंसे जानने ॥ २० ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

---

(अथ राजयोगाः) खेटा यदा पंच निजोच्चसंस्थाःस सार्वभौमः खलु यस्य सूतौ॥ त्रिभिः स्वतुंगोपगतैः स राजा नृपालबालोन्यसुतस्तु मंत्री ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें पांच उपलक्षणसे चारभी ग्रह उच्चके हों तो राजवंशी समस्त पृथ्वीका राजा चक्रवर्ती होवे अन्य कुलोत्प-

त्र राजाही होवै यदि तीन ग्रह उच्चके हों तो राजपुत्र हो तथा राजा होवै अन्यजात मंत्री होवै. अथवा स्वकुलानुमानश्रेष्ठता पावै॥१॥

गुरावुच्चे केंद्रे भवति दशमे दानवगुरौ जनुः काले मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम्॥ गुरौ कर्के चापे भवति च सचंद्रे दिनमणौ बुधे तुंगे लग्ने बलवति खगे वा नरपतिः॥ २॥॥

जन्मसमयमें उच्चका बृहस्पति केंद्रमें हो शुक्र दशम हो तो उसकी (मुद्रा) मोहर, छाप समुद्रपर्यंत चले अर्थात् समुद्रांत पृथ्वीका राजा होवै. यदि बृहस्पति कर्क वा धनका चंद्रमासहित होवै तथा बुध वा सूर्य लग्नमें अथवा कोई बलवान् ग्रह लग्नमें हो तो राजा होवै ॥२॥

गुरावंगे कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः सुते शुक्रे वक्रे प्रभवति जनेर्यस्य समयः॥ महांभोधेर्नीरं गमनसमये तस्य करिणां चलद्घंटानादाद्व्रजति चपलत्वं हि परितः॥ ३॥

बृहस्पति कर्कका लग्नमें (सूर्यपुत्र) शनि४।७।८ भावमेंसे किसीमें हो तथा शुक्र वक्रगति हो. ऐसा योग जिसके जन्मसमयमें हो वह ऐसा राजा होवै कि, जिसके सवारी निकलनेमें चारों तर्फसे हाथियोंके कंठ गत घंटाओंके नादसे समुद्रका जलभी स्थिर होवे ॥३॥

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनयस्तपः स्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने॥ जानाम॥

लीभिर्विजयगमने तस्य सहसा समाक्रांता पृथ्वी व्रजति चकिता मोहपदवीम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति सूर्य मेषके मंगल दशम स्थानमें शुक्र नवम भावमें और चंद्रमा बुध सहित हो तो उसके शत्रुपर चढाई करनेके गमनमें एकाएकी हाथियोंकी पंक्तिसे पृथ्वी भरि जाकर ( चकित ) आश्चर्ययुक्त होके मोहको प्राप्त हो जावै ॥ ४ ॥

कन्यांगे सबुधे झषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्य्यौबली मंदे कर्कगते शरासनगते शुक्रे यदीया जनिः ॥ तस्यालं शिरसा वहंति वसुधाधीशाः सदा शासनमानंदाद्विकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः ॥ ५ ॥

कन्याका बुध लग्नमें बृहस्पति मीनका सप्तम हो सूर्य मंगल किसी स्थानमें बलवान् हो शनि कर्कका शुक्र धनका हो- ऐसे राजयोगमें जिसका जन्म हो उसके आज्ञा ( हुकुम ) को राजा लोग सर्वदा आनंदपूर्वक ऐसे ग्रहण करते हैं जैसे खिलेहुये कमलोंकी माला विशेषतासे गलेमें धारण प्रसन्नतासे करते हैं ॥ ५ ॥

भाग्ये भानुसुतो मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राःसुते तिष्ठंति प्रबला दिवाकरकरव्यासंगमुक्ता यदा ॥ तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुंगराजिव्रजव्यस्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम्॥६॥

नवम स्थानमें शनि मकर राशिका मंगल तथा बृहस्पति बुध शुक्र पंचम हों और उक्तग्रह बलवान् हों सूर्यकिरणोंके संगसे मुक्तहों अर्थात् अस्तंगत नहो उदयी हो- ऐसे योगमें जिस

किसीका जन्म हो तो उसके सवारी निकलनेमें इधर उधरसे जो साथ चलनेवाले ( जलेवदार ) हैं उनके पंक्तियोंके उलटे सीधे पैर पृथ्वीपर रखनेसे जो ( रज ) धूली गर्द उडतीहै उससे आकाशभी ढकजावै इतना बडा राजा होवै ॥ ६ ॥

यदि तुलामकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसंति चेत् ॥ इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः सुरपतेः समतां तनुते नृणाम् ॥ ७ ॥

यदि ७।१०।१।४ राशियोंमें समस्त सूर्यादिग्रह हों तो इस योगके जन्मवाला मनुष्य चार समुद्रपर्यंतके राजाकी तुल्यता पावै ॥ ७ ॥

राज्ये स्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपाताल कांतापुण्यानामुच्चराशौ पतय इह यदा वीर्यवंतो भवंति ॥ राजानो यस्य तस्य प्रबलबलघटादंति घंटाधनुर्ज्याटंकारव्रातभीता जगदुदरगताः कंप भावं भजंति ॥ ८ ॥

जिसके जन्म समयमें दशम स्थानका स्वामि अपने उच्चमें हो तथा लग्न, धन, पंचम, सप्तम, चतुर्थ, नवम भावोंके स्वामि अपने अपने उच्चोंमें हों अथवा बलवान् हो तो उस मनुष्यके ( प्रबल ) बडी भारी सेना ( फौज ) की घटासे एवं सेनाके हाथियोंकी घटा तथा धनुषोंके ( ज्या ) चिल्लाके टंकारशब्दोंके समूहसे भयमान होकर राजेलोग पृथ्वीके भीतर कंदरा ( खात ) तैखाना आदियोंमें डरसे कांपतेहुये छिपजावैं ॥ ८ ॥

येषामेको निजोच्चे प्रभवति मकरे मंगलो वैरिभावे दैत्येज्यः कर्मगामी शनिरपि सहजे जन्ममात्रेण तेषाम् ॥ पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चंद्रकांत्यार्ज्जुनाभा मत्तोन्मत्तप्रचंडप्रवलरिपुशिरोमंडले वज्रपातः ॥ ९ ॥

जिन मनुष्योंका सूर्य अपने उच्च ( १ ) में मंगल मकरमें छठा शुक्र दशम शनि तीसरा हो तो उनके जन्महीसे पृथ्वी शुभदान देनेके संकल्पसे समुद्ररूपी जलसे परिपूर्ण होवै यश रूपी चंद्रमाके कांतिसे अर्जुनके समान यद्वा ( अर्ज्जुनाभ ) धवलित, श्वेत, स्वच्छ होजावै और ऐश्वर्यवान् तथा राजमदसे उन्मत्त अतिबलवान् बडे बडे शत्रुओंके शिरोंमें वज्रपात जैसा खटकने लगे ॥ ९ ॥

संवंधो दशमाधिपस्य नवमाधीशेन येषां जनुः काले पंचमभावपेन च वलोपेतस्य तुल्येन चेत्॥प्रस्थाने सति लोलया तनुभृतां वस्यारिविश्वंभरा गर्जद्धोटकमत्तवारणघटाक्रांता समंताद्भवेत् ॥ १० ॥

ग्रहोंके संवंध चार प्रकारके होते हैं परस्पर दृष्टि होनेमें दृष्टिसंवंध ( १ ) एकके राशिमें दूसरा दूसरेमें पहिला अन्योन्याश्रयसंवंध ( २ ), दोनहूं भावोंके स्वामि अपनी अपनी राशियोंमें स्थानसंवंध ( ३ ), कारकसंवंधी( ४ ) जिनके जन्म समयमें नवमेश दशमेशका किसी प्रकार संवंध हो अथवा पंचमेशके साथ उनका संवंध हो परंतु संवंधकारक ग्रह वलवान् हो तो संवंधभी ( तुल्य ) वलवान् एवं अधिकारीहीके साथ करें तो उनके युद्धार्थ प्रस्थानमें वा अन्य सवारी निकलनेमें पृथ्वी गरजतेहुये

घोडोंके, मतवाले हाथियोंके घटाओंसे चारोंओरसे आक्रांत होवे तथा चंचल होकर शत्रुकी पृथ्वी ( राज्य ) विनाही युद्ध किये वश होजावे ॥ १० ॥

राज्येशो यदि देवतालयपदे पारावतांशे तपःस्था
नेशो धनगोपि गोपुरलवे लाभाधिपो जन्मिनाम् ॥
चंचत्तुंगतुरंगकुंजरघटाघंटाधनुर्ज्यारवैर्वित्रस्तागम
नोत्सवे दिगबला भ्रांतिं भजंति क्षणात् ॥ ११ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें दशमभावेश नवमस्थानमें पारावतांशकमें स्थित होवे नवमेश द्वितीयस्थानमें होवे तथा लाभेश उच्चवर्ती, गोपुरांशकमें हो तो उनके ( प्रयाणोत्सव ) सफरके तयारीमें चपल घोडे उन्मत्त हाथियोंके घंटाओंके शब्दोंसे एवं धनुषोंके टंकारशब्दोंसे भयभीत होकर दिशाओंकी ( अबला ) शोभा यद्वा दिगीशोंकी पत्नी इंद्राणी आदिभी क्षणमात्रमें ( भ्रांत ) घबराहटयुक्त हो जाती हैं ॥ ११ ॥

कन्यामीनवृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्ति
तः किंवा चापनृयुग्मकुंभहरिभे खेटे हि सिंहा
सनः॥यः सिंहासनयोगतो हि मनुजो भूपाधिराजो
बलीगर्जत्कुंजरवाजिराजिमुकुटारूढोधरामंडले १२

यदि ६।१२।२।८ राशियोंमें सभी ग्रह हों तो सिंहासन योग होताहै- यद्वा ९।३।११।५ राशियोंमें हो तौभी यही योग होताहै जिस मनुष्यका जन्म सिंहासनयोगमें हो वह पृथ्वीमें गर्जन करनेवाले हाथी घोडाओंके पंक्तिके ( मुकुट ) श्रेष्ठ स्थानमें बैठनेवाला राजाओंकाभी राजा होवे ॥ १२ ॥

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनांत्यालितुरगे स-
माजः खेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः ॥ चतु-
श्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो महीपाना
माली मुकुटमणिपाली विजयते ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें १।५।६।११।३।१२।८।९ राशियोंमें स-
भी ग्रह हों तो इस योगका नाम चतुश्चक्र है इसमें जिसका जन्म हो
वह समस्त सुखभोगोंसे युक्त होकर राजाओंके मुकुटमणियोंके
पंक्तिको जीतकर स्वयं अधिराज होताहै ॥ १३ ॥

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता
मुक्तालीव समस्तभूपमुकुटालंकारचूडामणिः ॥
तज्जातो रिपुपुंजभंजनकरो गंधर्वदिव्यांगनावृंदा
नंदपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः ॥ १४ ॥

यदि एक ग्रह एक एक स्थानोंमें बराबर हो, जैसे मोतियोंकी
माला पृथक् २ एक २ दानेकी रहती है, तो इस योगको एकावली
कहतेहैं इसमें जन्माहुआ मनुष्य समस्त राजाओंके मुकुटकी
शोभा देनेवाला ( चूडामणि ) उत्तम नग सरीखा श्रेष्ठ होताहै. तथा
शत्रुओंके समूहका भंजन करनेवाला गंधर्वकन्या और स्वर्गकी
स्त्रियोंके समूहको आनंद करनेवाला गुणोंके समूहको धारण करने
वाला तथा चतुर्दशविद्याओंकी खांन होताहै ॥ १४ ॥

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने जनुःका-
ले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः ॥ प्रचंडप्रोत्तुंग
प्रबलरिपुहंता क्षितिपतिः समंतादाधिक्यं व्रजति
धनदानेन महताम् ॥ १५ ॥

कर्क कन्या मीन धन मिथुन राशियोंमें सूर्य्यादि सभी ग्रह जिसके जन्मसमयमें हों वह अति प्रबल (बढीहुई) तीक्ष्णयोधाओंवाली बडी भारी शत्रुसेनाको जीतनेवाला राजा होताहै तथा धन देनेसे सभी प्रकार बड़े बड़े लोगोंसेभी अधिकता पाताहै ॥ १५ ॥

अथादित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे रविसुतो मृगे मीने जीवो हिमकरसुतो यस्य मिथुने ॥ तुलायां शुक्रश्चे दजभवनगो भूमितनयो नृबालो भूपालो नृप मुकुटभूषामणिवरः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा कर्कका, शनि मकरका, बृहस्पति मीनका, बुध मिथुनका, शुक्र तुलाका और मंगल मेषका हो तो वह मनुष्यबालक राजाओंके मुकुटका श्रेष्ठ मणि ऐसा श्रेष्ठ राजा होवे ॥ १६ ॥

दिवानाथः सिंहे गवि हिमकरो मेषभवने महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः ॥ भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनि कविर्जनुःकाले यस्य प्रभ-वति नरोऽसौ क्षितिपतिः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, बृहस्पति धनका, शनि कुंभका और शुक्र तुलाका हो तो वह राजा होवे ॥ १७ ॥

बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवने तपःस्वा म्यागारे भवति दशमेशोपि भविनाम् ॥ तदा गर्ज द्दंतावलनिकरघंटाघनरवैर्दिगन्तं वित्रस्ता विजय गमने यात्यरिगणः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें नवमेश बलवान् होकर दशम वा दशमेशके राशिमें तथा दशमेश नवम वा नवमेशके राशिमें हो तो वह ऐसा प्रतापी राजा हो कि जिसके शत्रुविजयार्थगमन (शत्रुपर चढाई) में गर्जन करतेहुये हाथियोंके घटाओंके घणेशब्दसे डरकर शत्रुसमूह दिगंतोंमें भागजावे ॥ १८ ॥

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने बली कर्माधीशो भवति भविनामेव जनने ॥ समुद्रांतं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली धनुर्ज्या टंकारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम् ॥ १९ ॥

यदि जन्मधारियोंके जन्मसमयमें नवमेश और दशमस्थानमें दशमेश नवमस्थानमें हो, दोनहूं बलवान् हों, तो समुद्रपर्यंत कीर्ति फैलानेवाला राजा होवे तथा उसके शत्रुविजयार्थ गमनमें धनुषकी (ज्या) कमानके टं कारशब्दोंसे शत्रुसमूह आश्चर्ययुक्त होकर भयके मार्गको प्राप्त होताहै (यह योग केसरहिंदबादसाहाविक्टोरीयाका देखनेमें आया जिसकी जन्मकुंडली यह है) ॥ १९ ॥

भवेदंगाधीशो जननसमये पुण्यभवने तथा कर्मस्वामी भवति च विलग्ने जनिमताम् ॥ तदा गर्जद्दंताबलकलभवाजिव्रजपदैः समाक्रांता पृथ्वी व्रजति गमने मोहपदवीम् ॥ २० ॥

जिसके जन्मसमयमें लग्नेश नवमस्थानमें एवं दशमेश लग्नमें हो तो वह राजा होकर गर्जनकरनेवाले हाथी घोडे हाथियोंके बच्चे आदियोंके समूहसहित जब गमन करै तो सेनाके बोझोंसे दबीहुई पृथ्वी मोहपद (घबराहट) को प्राप्त होजावै ॥ २० ॥

यदा राज्यस्वामी नवमसुतकेंद्रेऽर्थभवने बला-
क्रांतो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः॥ सदा काव्या
लापी नवमणिकलापी बहुबली तुरंगालीदंतावल
कलभगंता धनपतिः ॥ २१ ॥

यदि जन्मसमयमें दशमभावका स्वामी ( ९।५ ) त्रिकोण वा ( १।४।७।१० ) केंद्र यद्वा धन ( २ ) स्थानमें बलवान् हो तो वह सर्वदा काव्य करने वा कहनेवाला होवै एवं बहुत बलवान् और अनेक घोडाओंके पांति और हाथियोंके मनोहर जवान पट्ठाओंके सवारीमें गमन करनेवाला धनवान् राजा होवै ॥ २१ ॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः सुतेशः
कोदंडे भवति भविनो यस्य जनने॥ भयातीतो भो
गी भवति चिरजीवी बहुगुणी मतंगालीगंता रिपुनि-
करहंता नरपतिः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें दशमेश पंचमभावमें शुभग्रहयुक्त हो तथा पंचमेश धनराशिका यद्वा दशम हो वह भयरहित, तथा सुखभोग भोगनेवाला, दीर्घायु, बहुतगुणवान् होवै- हाथियोंके झुंड उसके सवारीमें रहैं वह शत्रुसमूहको मारनेवाला राजा होवै ॥२२॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे विशालं
भूपालं कलयति नृबालं बहुबलम्॥ अरातीभव्रातां
कुशमनिशमानन्दनिरतं नितांतं श्रीमंत विविधधन
दानोद्यतमलम् ॥ २३ ॥

धनभावका स्वामी यदि पारावतांशमें हो तो मनुष्यके बालकको बहुत बडाराजा करताहै कि, जो शत्रुरूपी हाथीके ऊपर अं-

कुशतुल्य रहताहै. सर्वदा प्रसन्न, सर्वदा धन, राज्यलक्ष्मीसे युक्त रहता है अनेकप्रकारसे(उदार)धन देनेमें निश्चयतत्पर रहताहै ॥२३॥

देवलोकलवगो निशाकरात्पुण्यराशिपतिरिन्दुकांतिभाक् ॥ गोगजव्रजतुरंगमंडलीमण्डितो मणिगणैरिलापतिः ॥ २४ ॥

नवमभावेश चंद्रमासे २१ वें अंशमें हो तथा चंद्रमा पूर्णमूर्ति होवै तो वह गौ, हाथियोंके समूह घोडाओंके मंडलीसे शोभायमान ( मणि ) रत्नोंके समूहसे युक्त पृथ्वीका पति होवै ॥ २४ ॥

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ स्वतुंगे वा पंकेरुहनिकरवन्धावपि भृशम् । भयत्राता दाता निगमविहिताचारचतुरो गुणव्रातैर्नम्रोधनपतिसमानो विजयते ॥ २५ ॥

यदि १०।४।७ भावोंमेंसे किसीमें बृहस्पति अपने उच्चका हो और उसके साथ विशेषतः चंद्रमाभी हो तो भयसे रक्षा करनेवाला, बहुतदान देनेवाला, शास्त्रोक्त आचार करनेमें चतुर, अनेक शौर्य्यौदार्य्यादिगुणोंसे नम्र और धनमें कुवेरके समान जयशाली राजा होवै ॥ २५ ॥

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्रजातः ॥ नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः सुयोगजातैरिति संप्रवक्ष्ये ॥ २६ ॥

इतने जो राजयोग कहेहैं इनमें नीचकुलका उत्पन्न पुरुषभी राजा होजाताहै. ये सर्वसाधारणके लिये तुल्यहैं और राजाका पुत्र जिसका राजा होना संभवहै वह थोडेभी राजयोगसे राजा होताहै. ऐसे अच्छे सुयोग आगे ग्रंथकर्ता कहताहै ॥ २६ ॥

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चंद्रयुते प्रसूता ॥ कुजे यदाये भृगुजेष्टमस्थे भवेन्नृपालो नृपवंशजातः २७

यदि जन्ममें मकरलग्न हो शनि कर्कमें सप्तमहो चंद्रमाभी साथहो तथा मंगल ८ का ग्यारहवे भावमें, शुक्र सिंहका अष्टम, जन्ममें हो तो राजपुत्र राजा होवे अन्यकुलोत्पन्न कुलाधिक होवे ॥ २७ ॥

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे नृपालबालोपि च भूमिपालः ॥ कुलीरगो देवगुरुः सचंद्रो नृपालबालं प्रकरोति बालम् ॥ २८ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति शुक्र चतुर्थ भावमें हो तो राजपुत्र राजा होवे तथा कर्कका बृहस्पति चंद्रमासहित हो तो बालक राजाओंमें श्रेष्ठ होवे ॥ २८ ॥

यदेंद्रमंत्री विधुजं प्रपश्येद्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति ॥ प्रसूतिकाले यदि पंचराशौ चैकोपि बालं कुरुते नृपालम् ॥ २९ ॥

यदि जन्मसमय बृहस्पति बुधको देखे तो गुणज्ञ तथा विद्यावान् राजा करताहै तथा जन्मकालमें यदि पंचमभावमें एकभी बलवान् ग्रह हो तो बालक राजा होवे ॥ २९ ॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो नृपसुतं कुरुते च नृपोत्तमम्॥ विधुसुतः सविधुः कुरुते नृपं भवति तुंगगतो यदि जन्मनि ॥ ३० ॥

सूर्य मित्रांशकमें चंद्रमासे दृष्ट हो तो राजपुत्र राजाओंमें उत्तम होवे बुध चंद्रमासहित उच्च (६) का हो तो जन्महीसे राजा होवे॥३०॥

जनुपि लग्नगतो यदि लग्नपो बलयुतःकिल कंटक गोपि वा ॥ अविरतं प्रकरोति तदा नृपं नृपजमेव न चित्रमिति स्फुटम् ॥ ३१ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नमें वलवान् हो अथवा किसी अन्यकेंद्रमें हो तो राजपुत्रको विना विलंव राजा करताहै. इसमें कुछ आश्चर्य नहीं ॥ ३१ ॥

रविरजे शनिना वलिना युतो भवति भूमिपतिं कुरुते शिशुम् ॥ द्रविडकेरलदेशसमुद्भवं कृतिवरं च परत्र धनेश्वरम् ॥ ३२ ॥

सूर्य मेपका वलवान् शनिसे युक्त हो तो बालकको राजा करताहै यह योग विशेपतः द्रविड तथा केरलदेशियोंको विशेप राज्यफल करताहै तथा उसे अन्यत्र पंडित एवं पराये कमाये हुए धनका स्वामीभी करताहै ॥ ३२ ॥

गुरुकवी यदि तुंगगताविमौ जनुपि कंटककोण गृहाश्रितौ ॥ नृपकुले कुरुतो नृपमन्यथा द्रविडपं परितो भवतो नरम् ॥ ३३ ॥

जन्मकालमें यदि बृहस्पति शुक्र अपने अपने उच्चराशियोंके केंद्रकोणोंमें हों तो राजकुलका उत्पन्न राजा होवै परन्तु अन्यकुलीय होतो धनका स्वामी होवै ॥ ३३ ॥

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटैस्तनुव्ययागार्थगृह स्थितैश्चेत् ॥ पुरातनात्पुण्यत एव पुंसां श्रीच्छत्र योगं प्रवदंति संतः ॥ ३४ ॥

जन्मसमयमें समस्तग्रह लग्न व्यय धन सप्तम भावोंमें हो तो यह

श्रीछत्र योग पूर्वजन्मके पुण्यसे मनुष्यका होताहै यह पंडित कहतेहैं ॥ ३४ ॥

यदा जीवोलग्ने मकरमपहाय प्रवसति तदालं भूपालं नृपतिकुलबालं जनयति ॥ भवत्येवं चंद्रो जनुषि जनुरंगं च कलया परिक्रांतः केंद्रे नरपति सुतं भूपतिपरम् ॥ ३५ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति मकरराशिको छोडके अन्य किसी राशिका लग्नमें हो तो निश्चय करके राजपुत्र राजा होता है ऐसेही चंद्रमा अपने नीच ( ८ ) को छोडकर पूर्णकला होरहा लग्न अथवा अन्य केंद्रोंमें हों तो राजपुत्रको राजा करताहै ॥ ३५ ॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे सुखे वा लग्ने वा हितलवगतोवा शुभखगैः ॥ युतो दृष्टोदंता वलतुरगयानेन नितरां जनानामागारं कनकमणि संघैः परिवृतम् ॥ ३६ ॥

जन्ममें यदि चतुर्थभावका स्वामी नवमस्थानमें अथवा दशममें चतुर्थमें, लग्नमें, हो परंतु मित्रस्वांशकमें हो शत्रुके वर्गमें न हो अथवा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो हाथी घोडाओंकी सवारी नित्यउसके रहै तथा घर सुवर्ण एवं माणिक्य और रत्नसमूहोंसे युक्त रहै ॥ ३६ ॥

पंचमे भवति कर्मभावपे कांतिभाजि गजवाजिजं सुखम् ॥ सर्वतोऽस्य विधुताततोभवेदादिगंतमतुला यशोलता ॥ ३७ ॥

दशमभावेश पंचमस्थानमें उदयी हो तो हाथी घोडाओंका सुख सर्वप्रकारसे होवै और उसकी निर्मलकीर्ति दिशाओंके अंत पर्यंत पहुँचै ॥ ३७ ॥

(अथ चंद्रयोगाः) भवति चंद्रमसो दशमाधिपो जनुपि केंद्रनवाद्रिसुतोपगः ॥ अतिविचित्रमणिव्रजमंडितो वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः ॥ ३८ ॥

अब चंद्रमासे योग कहते हैं कि यदि जन्मसमयमें चंद्रमासे दशमभावेश केंद्रि १।४।७।१० नव ९ द्वि २ सुत ५ भावमें हो तो अतिउत्तम, नानाप्रकारके मणियोंके समूहसे (मंडित) शृंगार युक्त होकर पृथ्वीमें धनभूपणोंसे युक्त रहे ॥ ३८ ॥

चंद्राक्रांतभपः सुखालयगतो दंतावलानां सुखं मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशःपुंजं विचित्रालयम् ॥ भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा पुण्यं संतनुते मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह ॥ ३९ ॥

चंद्रस्थितराशिका स्वामी चतुर्थ हो तो हाथियोंका सुख, मोती सुवर्णमणिसमूह मिलें निर्मल यशके पुंज होवें नानारंगोंका घर होवै (नौकर) सेवक,पुत्र,स्त्री,मित्रोंकासमूह रहे विद्याके विनोदमें रहे पुण्य कमावै प्रसन्नतापावै राजासे धन पावै यह सभी मनुष्योंको कहाहै ३९

(अनफादियोगाः) व्ययगतैरनफारविवर्जितैर्द्धनगतैः खचरैः स्वनफा विधोः॥ उभयतोपि गतैरुदिता नृणां दुरुधरा मधुराशनभोगदा ॥ ४० ॥

चंद्रमासे बारहवें स्थानमें सूर्यरहित कोही ग्रह हो तो अनफा

चंद्रमासे दूसरेमें कोई हो तो, स्वनफा, और दोनों स्थानोंमें ग्रह हो तो, दुरुधरा योग मधुभोजन, और अनेक प्रकारके भोगदेने वाला होताहै ॥ ४० ॥

( अथानफायोगः ) जनिमतामनफा कुरुतेतरां गुणवती युवतीरतिवर्द्धनम् ॥ नृपसभापटुतामलंयशो वरपशोरपि सौख्यकरं परम् ॥ ४१ ॥

जन्मधारीको अनफायोग हो तो गुणवती (युवती) स्त्री एवं उससे (रति) क्रीडाकी वृद्धि देताहै राजाके सभामें चतुरता, निर्मलयश और श्रेष्ठपशु घोडेआदियोंकाभी परमसौख्य निश्चयकरके देताहै ॥४१॥

( स्वनफा ) भुजबलेन रमापरमालयं जनिमतां गरिमास्वनफा यदा ॥ अबलयामलया नवयानभूविभुतयाद्भुतया परमं सुखम् ॥ ४२ ॥

स्वनफायोग यदि जन्ममें हो तो उसके बाहुबलसे ( परम ) श्रेष्ठ लक्ष्मी घरमें रहै ( गुरुता ) बडापने मिलै तथा सुंदरनिर्मलनवयौवना स्त्री, नइ सवारी और पृथ्वी इनका अद्भुत सुख मिलै ॥ ४२ ॥

( दुरुधरा ) दुरुधरा बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम् ॥ वितनुते नृपतेरतुलं यशो गुणकलापपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥ ४३ ॥

जिन मनुष्योंका दुरुधरायोग हो उनको ( पृथ्वी ) जमीन, धनके समूह, उत्तम हाथी घोडेआदिका सुख होवै राजासे अतुल यश मिलै अनेकगुणोंके समूहसे अद्भुत चतुरता मिलै ॥ ४३ ॥

( केमद्रुमः ) न धने न व्यये खेटाश्चंद्रादिह भवंति चेत् ॥ तदा केमद्रुमंप्राहुःपंडिता मिहिरादयः॥४४॥

यदि चंद्रमासे दूसरे वा व्ययभावमें कोईभी ग्रह न हो तो उस को मिहिराचार्यआदिपंडित केमद्रुमयोग कहते हैं ॥ ४४ ॥

केमद्रुमे सुरपतेरपि नंदनोयं देशांतरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः ॥ धर्मच्युतो विकलितो गदसंघभीतो नानाधितापसहितो महीतोपहीनः ॥ ४५ ॥

जिसके जन्ममें केमद्रुमयोग हो वह इंद्रका प्यारा पुत्रभी हो तौभी स्त्रीपुत्रोंसे रहित होकर विदेशभ्रमण करै धर्मसे रहित रहै कलाहीन, रोगोंसे भयमान नाना प्रकारकी मानसीव्यथा संतापसहित और संसारमें संतोषहीन रहै ॥ ४५ ॥

( तस्य भंगः ) शुक्रेज्यसौम्यसहितोपि च कंटकस्थो वा पूर्णबिंब इह यस्य भवेन्मृगांकः ॥ केंद्राणि खेचरयुतानि तदा नराणां केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात् ॥ ४६ ॥

उक्तकेमद्रुमयोगका भंग कहते हैं कि जिसका चंद्रमा शुक्रबृहस्पतिबुधमेंसे किसीसे युक्त हो अथवा केंद्रमें हो अथवा पूर्णमंडल हो यद्वा उसके केंद्रोंमें ग्रह हो तो मनुष्योंको केमद्रुमयोगोक्तफल केमद्रुमहुयेमेंभी निष्फल होजावै ॥ ४६ ॥

( ह्रदयोगः ) जनुषि नीचगताः सकला ग्रहा यदि भवंति तदा ह्रदसंज्ञकः ॥ ह्रदभवो विकलो विभवो नितो रिपुहतो नितरां शठतायुतः ॥ ४७ ॥

जन्मसमयमें यदि समस्तग्रह नीच राशिअंशकोंमें हो तो ह्रदयोग होताहै ह्रदयोगमें जिसका जन्म हो वह ( विकल ) कलारहित, ऐश्वर्यहीन,शत्रुसे(पराजित)हाराहुआ(शठ)धूर्त्त वा वंचकभी होवै ४७॥

(अथ फणियोगः)

घटगते तपने क्रियगे शनावलिगते च विधौ निजनीचभे ॥ भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको विकलितं कुरुते नरपुंगवम् ॥ ४८ ॥

कुंभका सूर्य मेषका शनि वृश्चिकका चंद्रमा कन्याका शुक्र अपने नीचमें हो तो फणिसंज्ञक योग होताहै इसमें जिसका जन्म हों वह मनुष्य श्रेष्ठभी (विकल) कलाहीन होताहै ॥ ४८ ॥

(काकयोग) अजगते भृगुजे रविजे जनुर्वृषभगे दिनपेऽनिमिषे विधौ ॥ अवनिजे यदि कर्कटगेहगे भवति काकभवोविभवोनितः ॥ ४९ ॥

जिसके जन्ममे मेषका शुक्र मेषका शनि मीनका चंद्रमा वृषका सूर्य कर्कका मंगल हों तो यह काकयोग ऐश्वर्यहीन दरिद्री करताहै ॥ ४९ ॥

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो गुरुमहीजकवीनसुतः पुनः ॥ यदि भवंति च नीचगता जनुर्व्रजति राजसुतोपि दरिद्रताम् ॥ ५० ॥

चंद्रमासहित सूर्य कुंभका और बृहस्पति, मंगल, शुक्र, शनि अपने २ नीचराशियोंमें हो ऐसे योगमें जिसका जन्म हो वह राजाभी हो तौभी दरिद्रीही रहै ॥ ५० ॥

(अथ हुताशनयोगः)

शनिमहीजनिशाकरचंद्रजा यदिजनुः किल नीचमुपाश्रिताः ॥ मकरभे भृगुजोपि हुताशनः परम तापकरो न करोति शम् ॥ ५१ ॥

यदि जन्ममें शनि मंगल चंद्रमा बुध अपने २ नीचराशियोंमें हों तथा शुक्रभी मकरका हो तो यह हुताशनयोग होताहै इसमें मनुष्य परम संतापकरनेवाला होताहै शुभफल कदापि नहीं ॥ ५१ ॥

यदि भवंति नवायदशाधिपा जनुषि नीचगता विकला भृशम् ॥ नृपतियोगजमंगभृतांफलं परिणयत्यमपि निष्फलतामिह ॥ ५२ ॥

यदि जन्ममें ९।११।१० भावोंके स्वामी नीच राशियोंमें तथा अत्यर्थ करके अस्तंगत पीडित आदिभी हो तो मनुष्योंके राजयोगभी हो तोभी उसका फल निष्फल होकर दरिद्रीही होवै ॥ ५२ ॥

रिपुमंदिरगैरेव वैरिभावगतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यंति दिवाकरकरोपगैः ॥ ५३ ॥

यदि राजयोगकर्ता ग्रह शत्रुराशियोंमें वा छठभावमें यद्वा शत्रुवर्गमें हो तथा अस्तंगत हो तो राजयोग नष्ट होजाताहै ॥ ५३ ॥

भवति वीक्षणवर्जितमंगिनां जननलग्नमिहांबरगामिनाम् ॥ जननभं च नृपालभवो नरो जगति यातितरामतिरंकताम् ॥ ५४ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मलग्नको कोई ग्रह न देखे तथा चंद्रराशिको भी कोई ग्रह न देखे तो राजयोगवाला मनुष्य राजपुत्रभी हो तोभी ( रंक ) विरक्त ( फकीर ) ही होताहै ॥ ५४ ॥

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः ॥
यस्य तस्य विनश्यंति राजयोगफलान्यपि ॥ ५५ ॥

जिसका जन्म भद्रा, व्यतिपातमें तथा ( केतु ) पुच्छताराके उदयमें हो तो उसके राजयोगोंके फलभी नष्ट होजातेहैं ॥ ५५ ॥

परमनीचलवे यदि चंद्रमा भवति जन्मनि तस्य विशेषतः॥ नृपतियोगफलं विफलं ततः कलयतीति वदंति मुनीश्वराः ॥ ५६ ॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते भावकुतूहले राजयोगभंगदरिद्रयोगाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

यदि चंद्रमा परनीचांशकमें जिसके जन्ममें हो तो उसके विशेषतामें राजयोगोंके फल निष्फल होजाते हैं यह मुनीश्वर कहते हैं५६

इति महीधरकृतायां भावकुतूहलभाषायां राजयोगचंद्रयोगदरिद्रयोगराजयोगभंगाध्यायः ॥ ७ ॥

---

## ( अथ सामुद्रिकविचारः )

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ॥
करे वा चरणेवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें राजयोग प्रबल हो तो उसके हाथ वा पैरमें अवश्यमेव चिह्न होताहै ॥ १ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ॥
मध्यमांगुलिमारभ्य मणिबंधांतमागता ॥ २ ॥
सोर्द्धरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ॥
खंडिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥ ३ ॥

) अनामिकाके मूलमें सीधी रेखा पुण्य देनेवाली होती है खंडित अशुभ जानना तथा मध्यमाके जडसे लेकर (मणिबंध) "हाथके जड" नाडी स्थानसे नीचेपर्यंत पूरी सीधी एकरेखा हो उसे ऊर्द्धरेखा कहतेहैं विशेषतः राज्यलाभ करतीहै यदि खंडित हो तो "दुष्टफल"

दुःखदरिद्र देतीहै और ( क्षीण ) अथवा माडि हो तो फलभी क्षीणही देती है ॥ २ ॥ ३ ॥

अंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारुयवो यशस्वी ॥ स्ववंशभूषासहितो विभूषायोपार्जनैरर्थगणैश्च मर्त्यः ॥ ४ ॥

जिस पुरुषके अँगूठेके बीचमें ( यवरेखा ) जौके दानेका रमणीय आकार हो वह यशस्वी होताहै अपने वंशका भूषण होताहै तथा स्त्री, भूषण, धनसे युक्त रहताहै ॥ ४ ॥

वैसारिणो वातपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये ॥ सरोवरं चांकुश एव यस्य वीणा च राजा भुविजायते सः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके दाहिने हाथमें मछली, छत्र, हाथी, तालाव, अंकुशमेंसे कोईभी चिह्न हो अथवा वीणाका चिह्न हो वह पृथ्वीमें राजा होवै ॥ ५ ॥

मुकुलशैलकृपाणहलांकितं करतलं किल यस्य स वित्तपः ॥ कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेवनृपालभुवो यदा ॥ ६ ॥

जिसका हाथ मूशल, खड्ग, हलके चिह्नसे चिह्नित हो वह धनका स्वामी होताहै यदि पुष्पमालाका चिह्नभी हो तौभी धनवान् होताहै यदि यह चिह्न राजवंशीके हो तो अवश्य राजा होताहै ॥ ६ ॥

करतलेपि च पादतले नृणां तुरगपंकजचापरथांगवत् ॥ ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमा परमालये ॥ ७ ॥

जिस मनुष्योंके हाथ वा पैरके तलेमें घोडा, कमल, धनुष, चक्र, ध्वजा, रथ, सिंहासन, डोलीके तुल्य चिह्न हों तो उसके घरमें परमलक्ष्मी सदा रहै ॥ ७ ॥

कुंभःस्तंभो वा तुरंगो मृदंगः पाणावंघ्रौ वा द्रुमो यस्त पुंसः ॥ चंचद्दंडोऽखंडलक्ष्म्या परीतः किं वा सोऽयं पंडितः शौंडिको वा ॥ ८ ॥

जिस पुरुषके हाथ वा पैरके तलुवेपर कलश,स्तंभ,घोडा,मृदंग अथवा वृक्ष, लट्ठीके चिह्न हों तो अखंड लक्ष्मीसे युक्त रहे यद्वा या तो पंडित हो या ( शौंडिक ) मद्यवेचनेवाला होवे ॥ ८ ॥

विशालभालोंऽबुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमंडलेशः ॥ आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभृतां मुख्यतरं महांतः ॥ ९ ॥

जिसका ( भाल ) माथा बडाहो नेत्र कमलदलकेसमान हों शिर सुहावना वृत्ताकार हो तो पृथ्वीमंडलका राजा होवै और जिसके खडेहुयेमें हाथ सीधेनीचे छोडकर घुटनोंपर्यंत पहुँचे तो राजाओंमें मुख्य बडा राजा होवै ॥ ९ ॥

नाभिर्गंभीरा सरला च नासा वृक्षःस्थलं रत्नशिलातलाभम् ॥ आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥ १० ॥

जिसके नाभी ( गंभीर ) गहरी, नाक सरल, छाती रत्नशिलाके समान स्वच्छ, पैर लालरंगके तथा कोमलहोंतो श्रेष्ठ राजाहोवै॥१०॥

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ॥
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ ११ ॥

जिसके दाहिने हाथमें तिलका चिह्न हो उसे असंख्य धनदेता है एवं पैरके तलुवेमें हो तो वाहन धनका सुख देवै ॥ ११ ॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ॥
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तंसुलक्षणम् ॥१२॥
इति भावकुतूहले पुरुषस्य सामुद्रिकलक्षणाध्यायः ८॥

उक्तलक्षण प्रकट हुयेमें राजवंशीके हों तो पूर्ण राज्यफल देतेहैं अन्यको धनमानआदिं थोडाही फल देतेहैं ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां पुरुषस्य सामुद्रिकलक्षणाध्यायः ॥८॥

---

( स्त्रीजातकम् ) शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्सीमंतिनीनामपि तत्फलं हि ॥ विवाहकालात्परतः प्रवीणैरसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥

अब स्त्रीजातक कहतेहैं—जो कुछ स्त्रियोंके पूर्वजन्मार्जित कर्मों से शुभ वा अशुभ होते हैं वह विवाहसे ऊपर जो फल स्त्रियोंको होने असंभव हैं वे उसके भर्त्ताको चतुरज्योतिषीने कहने. जो स्त्रियोंको संभव हैं वे उनहीको कहने. तथा समस्त फल देश, जाति, कुल विचारके संभवासंभव जानके युक्तिसे कहना ॥ १ ॥

अतीवसारं फलमंगनानामुदीरितं शौनकनारदाद्यैः ॥ व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ॥ २ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहताहै कि स्त्रियोंके लग्न,तथा चंद्रमासे शौनकनारद आदिआचार्योंने अतिसारतर जो फल कहे हैं उनहीको प्रकट प्रतिपादन करताहूं ॥ २ ॥

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शरीरं लग्नचंद्रयोः ॥
वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिंतयेत् ॥ ३ ॥

स्त्रियोंके सप्तमस्थानसे सौभाग्य, लग्न तथा चंद्रमासे शरीरशुभाशुभ, अष्टमस्थानसे वैधव्य और पंचमभावसे पुत्रसुखासुख विचारना अन्य भावविचार पुरुषोंके उक्तप्रकारसे जानने ॥ ३ ॥

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भूवेद्भूपतेः
सौम्यैकेन पतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि ॥
पापैकेन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा पापा-
नां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ॥ ४ ॥

जन्मसमयमें तीनशुभग्रहोंसे सप्तमभाव युक्त वा दृष्ट हो तो वह स्त्री राजरानी होवै, दो शुभग्रहोंसे ऐश्वर्यवान् एकसे पतिकी प्रिया होवै, तथा सप्तममें एक पापग्रह हो वा एक पाप देखे तो (चंचलनेत्रा) परपुरुषदृष्टिवाली, दोपापोंसे अधर्मकर्म करनेवाली, तिनसे निजपतिको मारकर परायेघरमें अन्यपतिके पास जानेवाली होवै ॥ ४ ॥

ऋतुःकाले यस्या मदनभवने वासरमणौ पतिं त्य-
क्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये॥अवश्यं वैधव्यं
सपदि कमलाक्षी रविसुते जरां पापैर्दृष्टे निजपति
जिसे धं व्रजति वा ॥ ५ ॥

समान स्त्रीके जन्ममें सूर्य्य सप्तमभावमें हो तो पतिको त्याग करै
राजते इसे त्यागकरे तथा इसके हृदयमें नित्य क्रोध बना रहे यदि
तथा पाम हो तो अवश्य विधवा होवै शनि सप्तम हो तो (कमल

नेत्रा ) सुरूपाभी हो तथापि अनव्याहेमें वृद्धत्व पावे अर्थात् बडी उमरमें विवाह होवे जो पापग्रहोंकी दृष्टि सप्तमभावपर हो तो पतिके साथ विरोध रक्खे ॥ ५ ॥

यस्याः शशांके जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात् ॥ शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पतिक्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥ ६ ॥

जिसका जन्मसमयमें चंद्रमा लग्नमें अथवा तीसरे भावमें हो तो उसकी प्रकृति सर्वदा स्थिर रहे उसे शुभग्रहभी देखें तो रूपवती गुण वती, पतिसेवामें चतुरा और रमणीयभूषणोंसे युक्त होवे ॥ ६ ॥

यदांगचंद्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा ॥ पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्गदातुरारूपगुणैर्विहीना ॥ ७ ॥

यदि लग्न एवं चंद्रमा विषमराशि विषमनवांशकोंमें हो तो स्त्रीपुरुषकी ( आकृति ) स्वरूप यद्वा पुरुषोंके तुल्य कृत्य करने वाली होवे कुरूपाभी होवे यदि उक्त लग्न चंद्रमा पाप युक्त दृष्ट भी हों तो विशेषतः रोगसे आतुर रहे सुगुणोंसे हीन रहे ॥ ७ ॥

स्त्रीणां राजयोगाः ।

जनुःकाले यस्या मदनसदने दानवगुरौ शुभाभ्यामाक्रांते गतवति तदा सा विधुमुखी ॥ गजेंद्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवत्क्षितिलके ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शुक्र शुभग्रहोंसे युक्त ताको

प्राप्त हो तो उसके (हृदय) स्तनोंके ऊपर गजमोतियोंकी माला विराजमान रहें अर्थात् ऐश्वर्यमें परिपूर्ण रहे तथा पतिकी प्यारी नित्यरहे यदि नेत्रमें तिलका चिह्नभी होवै तो इंद्राणीके समान ऐश्वर्यवान् होवै ॥ ८ ॥

समाक्रांते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाथ भृगुणा बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये ॥ मृगे कर्के चंद्रे सति भवति लावण्यतिलका तपोरेखायोषा प्रभवति विशेषात्क्षितिपतेः ॥ ९ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नका बृहस्पति अथवा शुक्र हो तथा कन्याराशिका बुध सप्तमस्थानमें मंगल मकरमें चंद्रमा कर्कमें हो तो लावण्यता ( सुरूपता ) वाली स्त्रियोंमें ( तिलक ) श्रेष्ठ होवै विशेषतः राजाकी महारानी बडी तपस्या करके पाई जैसी होवै ॥९॥

शशांके कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये ॥ सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥ १० ॥

चंद्रमा कर्कका, बुध कन्याका, बृहस्पति मीनका, लग्नमें शुक्र वृषका, जन्मसमयमें हो तो एकहजारसखियोंमें मान्या संसारमें राजकन्या गुणवती होवै तथा विशेषतासे यह स्त्री राजाके घरकी स्वामिनी, पुण्यकी लता होवै ॥ १० ॥

( अथ सप्तमे प्रत्येकग्रहफलानि ) दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति प्रवराप्यवरा भवेत्॥ जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनतारहिता वनिता भृशं ११

जिसके जन्ममें सूर्य सप्तमहो वह श्रेष्ठभी अश्रेष्ठ होजावै पतिका प्रेम उसमें न होवै अतिशय दुर्जनता करे दुष्ट स्वभावा होवै कुटुंबसेभी विरोधी रहे ॥ ११ ॥

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना॥विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां परा लीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव क्षितितले ॥ १२ ॥

जिसके जन्ममें सप्तमभावमें चंद्रमा विशेषतः वृषका हो तो यह स्त्री निर्मलवस्त्र पहननेवाली सुहावने ( मुख ) वदनवाली नम्र मुखी मोतियोंकी मालासे शोभितस्तनभारसे नम्र, परमलीलाकरनेवाली होवै और पृथ्वीमें सबसे सुंदर ऐसी होवै जैसी कामदेवकी स्त्री रती है अथवा लक्ष्मीके समान होवे ॥ १२ ॥

अंगारके मदनमंदिरमिंदुभावं मंदान्विते हरिभगे जननेंगनायाः ॥ वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबंधाद्वारांगना भवति सैव वरांगनापि ॥ १३ ॥

जन्ममें स्त्रीका मंगल विशेपसे कर्कका हो अथवा मंगल शनि सहित सिंहका सप्तम हो तो निश्चय वैधव्य पावै तथा कपटके प्रबंधकरे ( व्यभिचारिणी ) वेश्या हो यदि यह स्त्री धर्मकर्मसे तथा कुलसे श्रेष्ठभी हो तोभी वेश्याही होवै ॥ १३ ॥

अनेकश्रीभर्ता भवति मखकर्त्ता च मदने बुधे तुंगे यस्या जनुपि खलु तस्याः पतिरिह ॥ स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया परीता मुक्ताली रजतकनकालीमणिगणैः ॥ १४ ॥

जिस स्त्रीके जन्ममें कन्याका बुध सप्तममें हो उसका भर्त्ता यज्ञ करनेवाला होवै तथा आप वह स्त्री कामदेवसे व्याकुलित हृदय रह कामकलामें तत्पर रहे और मोतियोंकी माला, सोने, चांदी, मणि रत्नोंसे भरी रहे ॥ १४ ॥

परिक्रांते यस्या मदनभवने देवगुरुणा गुणज्ञा
धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा ॥ मणीनां
मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा समाक्रांता
कांतारतिपतिपताकेव शशिभे ॥ १५ ॥

जिसके जन्ममें बृहस्पति सप्तमस्थानमें बैठाहो वह ( गुणज्ञा ) समस्त सुगुणवाली, धर्मजाननेवाली, अपने पतिकी सेवा करनेवाली "पतिव्रता" होवै और सुवर्णमें जडेहुये ( मणि ) रत्नोंकी मालाओंसे शिर आक्रांत रहे यदि वह बृहस्पति सप्तममें कर्कका हो तो वह स्त्री कामदेवकी पताका जैसी उत्तम रूप गुणवती होवै ॥१५॥

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने तदा
ंतो दांतो रतिपतिकलाकौतुकपटुः ॥ धनुर्द्धर्त्ता
भर्त्ता स्वयमपि च संगीतरसिका विलोला पद्माक्षी
वसनलसिता भूषणवृता ॥ १६ ॥

जिसके जन्ममें मीनका शुक्र सप्तम भावमें हो तो उसका पति उदार, कामकला क्रीडामें चतुर तथा धनुष धारण करनेवाला होवै आपभी वह स्त्री गायन विद्याके रसिका, चंचलतासे भर्त्ताको प्रसन्न करनेवाली कमलदलसमाननेत्रा एवं उत्तम भूषण वस्त्रोंसे ररहे ॥ १६ ॥

नदनभावगते तपनात्मजे पतिरतीव गदाकुलि

तो भवेत् ॥ मलिनवेषधरो विबलो महाञ्जनुषि तुङ्ग गते प्रवरो धनी ॥ १७ ॥

जन्ममें शनि सप्तम भावमें हो तो उसका पति अतिरोग पीडित होवै मलिन वेष धारण करने वाला, अति निर्बल होवै यदि उक्त शनि उच्चका हो तो श्रेष्ठ और धनवान् होवै ॥ १७ ॥

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी ॥
नारीसुख परित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता ॥१८॥

राहु सप्तममें हो तो कुलको (दोष) कलंक बढानेवाली, सुख रहित स्त्री होवै यदि वह राहु उच्चका हो तो भर्त्ताके सुखसे युक्तरहै १८

(अथान्ययोगाः)

मिथस्तौ शुक्रार्की यदि लवगतौ वीक्षणमितौ भवेतां वा लग्ने घटलवगते शुक्रभवने ॥ अनङ्गै रालीलाकलितनररूपाभिरनिशं स्थिताभिः कांताभिः खलु मदनशांतिं व्रजतिसा ॥ १९ ॥

यदि बृहस्पति परस्परांशक अर्थात् बृहस्पतिके अंशकमें शुक्र शुक्रके अंशमें बृहस्पति हो उपलक्षणसे राशियोंमेंभी परस्परहो तथा इनकी परस्पर दृष्टिभी होवै अथवा गुरु लग्नमें कुंभांशकी यद्वा शुशुक्र राशि २।७में हो तो कामदेवकी लीलाओंसे निर्मित नररूप वाली नित्य अनेक नररूप मर्दके वेष स्थित स्त्रियोंसे कामदेवको शांत करै ॥ १९ ॥

क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीरांगमथवा मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम् ॥ महांतोपि भ्रांताः

कति कति मनोजाधिकतया पुरस्तां पश्यंतो दधति परमानंदलहरीम् ॥ २० ॥

जिसका चंद्रमा लग्नमें कर्कका हो अथवा सप्तमभाव मंगल सहित हो तथा बुध बृहस्पतिसेभी युक्त हो तो अनेक बड़े बड़े महात्मालोगभी सन्मुख इस स्त्रीको देखकर कामदेवके अधिक होनेसे विभ्रांतमन होकर मोहितहोवैं ऐसे वह परमआनंदलहरोको रूपकी छटासे धारणकरनेवाली होवै ॥ २० ॥

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरौ कवौ वा पातालं तपनतनयेनापि मिलिते ॥ जनुःकाले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणिव्रजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमयमें मकरको मंगल मीनको बृहस्पति प्राप्तहो अथवा शनिसहित शुक्र चतुर्थ हो तो हाथीके शिरसे उत्पन्न ( गजमोति ) मुक्ताफलोंसे सहित अनेकमणियोंकी मालाओंसे वेष्टित सर्वांग ( उत ) और स्तनयुग्म रह ॥ २१ ॥

( अथ वैधव्ययोगाः )

निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमंदागुदिवाकराश्चेत् ॥ तनोरिभे जन्मनि नैधने वा दिशंति वैधव्यमलं मदे वा ॥ २२ ॥

चंद्रमासे सप्तमस्थानमें मंगल शनिराहुसूर्यमेंसे कोईभी हो तो निश्चय वैधव्य करते हैं तथा जन्मलग्नमें शत्रुराशिके अथवा अष्टमस्थानमें हो तौभी वैधव्य देते हैं ॥ २२ ॥

लग्नाधिपो वाथ मदालयेशो वर्गे गतः पापनभश्चरा-

णाम् ॥ मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥ २३ ॥

जन्मलग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहोंके ( वर्ग ) राश्यंशकादिकों में हो अथवा लग्नमें एवं सप्तमभावमें पापग्रहके राश्यंशक हों तो वह स्त्री मदसे आकुल होके चंचलनेत्र करके भर्त्ताको छोडदेवे ॥२३॥

पापांतराले यदि लग्नचंद्रौ स्यातां शुभालोकन वर्जितौ तौ ॥ अनंगलोला खलसंगमेन कुलद्वयंहंति तदा मृगाक्षी ॥ २४ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्न चंद्रमा पापग्रहोंके बीचहो शुभग्रहोंकी दृष्टि उनपर न हो पापयुक्तभी हों तो वह मृगाक्षी कामदेवसे चंचल होकर पितृकुल भर्तृकुल दोनोंका नाशकरे अर्थात् व्यभिचारिणी होकर दोनों कुलोंको डुबावे ॥ २४ ॥

व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य राशावर्गौ सपापे भवती हरण्डा ॥ मदे कुलीरे सरवौ कुजेपि धवेन हीना रमते न्यलोकैः ॥ २५ ॥

यदि मंगलकी राशि १।८ में राहु बारहवां वा अष्टम पापयुक्त हो तो वह स्त्री रांड होवे अथवा सप्तमभावमें कर्कका सूर्य मंगल सहित हो तो पतिहीनहोकर अन्यपुरुषोंसे रमितरहे ॥ २५ ॥

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत् ॥ अनंगलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥ २६ ॥

यदि जन्मलग्नसे चौथा, बारहवां, अथवा सप्तम पापयुत मंग-

हो तो वह चंचला अपने पतिका तिरस्कार करके ( जार ) उपपतियोंके साथ काम क्रीडा करे चंचल होवै ॥ २६॥

परस्परांशोपगतौ भवेतां महीजशुक्रौ जननेंगनायाः ॥ स्वयं मृगाक्षीत्यभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥ २७ ॥

यदि स्त्रीके जन्मसमयमें मंगलके अंशका शुक्र शुक्रके अंशका मंगल हो तो वह मृगाक्षी अभिसारिकाके समान आपही कामातुर होकर दूसरेके घरजावै ॥ २७ ॥

पापग्रहे सप्तमगे बलोने शुभेन दृष्टे पतिसौख्यहीना ॥ स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ २८ ॥

पापग्रह बलहीन सप्तमस्थानमें हों शुभग्रह उसे नदेखे तो स्त्रीको भर्त्ताका सुख न होवै यदि सप्तम स्थानमें मंगल शुक्र चंद्रमा हो तो वह स्त्री भर्त्ताकी आज्ञासे व्यभिचारिणी ( जारिणी ) होवै ॥ २८॥

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्त्तादिवं गच्छति सप्तमाब्दे ॥ निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ॥ २९ ॥

जन्ममें जिसके सप्तम एवं लग्नभावमें पापग्रह हो तो उसका पति विवाहसे सातवें वर्ष स्वर्ग जावै यदि चंद्रमाभी६।८ में हो तो आठवें वर्षमें पति मरे ॥ २९ ॥

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ॥
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ३० ॥

जिस ( बाला ) नवयौवनाके जन्म लग्नसे सप्तमेश अष्टम अष्टमेश

सप्तम पापदृष्ट हों अथवा पाप युक्त हों तो निश्चय बालवैधव्य पावै२०

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ ॥
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥ ३१ ॥

जिस स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तमअष्टमभावोंके स्वामी पापपीडित होकर छठे वा बारहवें हों तो वह निस्संदेह वैधव्य पावै ॥ ३१ ॥

मंदारराशौ सासिते शशांके खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी ॥ मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांशे व्रणविद्धयोनिः ॥ ३२ ॥

यदि शनिमंगलकी राशि १०।११।१।८ योंमें शुक्रसहित चंद्रमा पापदृष्ट लग्नमें हो तो वहस्त्री अपनी मातासहित व्यभिचारिणी होवे यदि सप्तममें पापांशहो यद्वा उक्तग्रह पापांशकी सप्तममें हों तो माँबेटी व्यभिचारिणी हों किंतु उसकी योनि व्रणसेवेधितरहे॥३२॥

## अथ ग्रहराशिवशेन प्रत्येकत्रिंशांशफलानि

## तत्रादौ भौमराशेः ।

यदांगचंद्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या ॥ मंदस्य दासी हि गुरा स्तु साधवी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ ३३ ॥

अब ग्रह राशियोंके वशसे प्रत्येक त्रिंशांशक फलकहतेहैं इनमें प्रथम मंगलके राशिके त्रिंशांशकोंके फलहैं कि यदि लग्न, चंद्रमा, मंगलराशिमें हों तथा मंगलके त्रिंशांशमें हों तो वह कन्या दुष्टहोवै शनिके त्रिंशांशमें दासी होवै बृहस्पतिकेमें पतिव्रता बुधकेमें मायावाली शुक्रकेमें दुष्टचरितवाली होवै ॥ ३३ ॥

अथ शुक्रराशौ।

शुक्रभे कुजखाम्यंशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा ॥
गुरोर्गुणमयी विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥ ३४ ॥

शुक्रके राशिमें लग्न चंद्रमा मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टा होवै एवं शनिकेमें ( पुनर्भूः ) दोबार व्याही जावे बृहस्पतिकेमें गुणयुक्ता बुधकेमें पंडिता शुक्रकेमें कामातुरा होवै ॥ ३४ ॥

अथ बुधराशौ।

बुधभे भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीबवच्छनेः ॥
गुरोः सती विदो विज्ञा छवेः कामातुरा भवेत् ॥३५॥

बुधके राशिमें लग्न, चंद्र, मंगलके त्रिंशांशमें हो तो कपटी होवै शनिकेमें नपुंसकके तुल्य होवै बृहस्पतिकेमें पतिव्रता बुधकेमें जाननेवाली शुक्रकेमें कामसे आतुर होवै ॥ ३५ ॥

अथ चंद्रराशौ।

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणविघात कर्त्री ॥ गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्पक्रियाज्ञा कुलटा भृगोः स्यात् ॥ ३६ ॥

कर्कराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हो तो वह स्त्री ( वेश्या ) पतरिया होवै तथा शनिकेसे भर्त्ताके प्राणघातकरनेवाली बृहस्पतिकेसे गुणसमूहयुक्ता बुधकेसे ( शिल्प ) कारीगरी जाननेवाली शुक्रकेत्रिंशांशकमें (कुलटा) व्यभिचारकरनेवालीहोवै ॥३६॥

अथ सूर्यराशौ।

सिंहे नराकारधरा कुजस्य वरांगना भानुसुतस्य

नारी ॥ गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरंगज गामिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

सिंहराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हो तो पुरुषके आकारधारण करे अथवा पुरुष समान पराक्रमी, चतुरा, होवै शनिकेसे श्रेष्ठहोवे बृहस्पतिकेसे पृथ्वीपति वधू होवे बुध केसे दुष्टा शुक्रकेसे अपने पुत्रको गमन करनेवाली होवै ॥ ३७॥

अथ गुरुराशौ ।

गुणैर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य मंदस्य मंदा गुणतत्त्वविज्ञा॥जीवस्य विज्ञा शनिनंदनस्य शुक्रस्य रम्यापि भवेदरम्या ॥ ३८ ॥

बृहस्पतिके राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हो तो अनेकगुणोंसे युक्त होवे शनिकेसे मूर्ख बृहस्पतिकेसे गुणोंके तत्वको जाननेवाली बुधकेसे पंडिता शुक्रकेसे सुरूपाभी कुरूपसा प्रतित हो ॥ ३८ ॥

अथ शनिराशौ ।

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी ॥ गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्रस्य वंध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥ ३९ ॥

शनि राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिशांशकमें हो तो दासी होवै शनिकेमें पतिव्रता न होवै बृहस्पतिकेमें पतिव्रता बुधकेमें दुष्टा शुक्रकेमें ( वंध्या ) अपुत्रा होवै इतने क्रमसे त्रिशांशफल हैं ॥३९॥

अथान्ययोगाः ।

मंदे मध्यवले कवीन्दुशशिजैर्वीर्य्यच्युतैः प्रायशः

शेषैर्वीर्य्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः ॥ जीवांगाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदंगराशौ समे गीता-तत्वविचारसारचतुरा वेदांतवादिन्यपि ॥ ४० ॥

जिसकेजन्ममें शनि मध्यबली, शुक्र, चंद्रमा, बुध, बलहीन, और विशेषतासे अन्यग्रह बलवान् हों तथा लग्न विषमराशिका हो तो वह स्त्री पुरुषके समान होवे यादि बृहस्पति, मंगल, सूर्य, बुध, बलवान् हो तथा लग्नराशि समसंज्ञक हो तो गीताका तत्व (ज्ञान) के विचारसे सार जाननेमें चतुरा और वेदांतवादीभी होवै ॥ ४० ॥

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा ॥ कुजेष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चंद्रेऽष्टमे स्वामि-सुखेन हीना ॥ ४१ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति अष्टम हो अथवा शुक्र अष्टम हो तो उसके गर्भ नष्ट होवै अथवा पुत्र मरें यदि मंगल अष्टम हो तो वह मृगाक्षी ( कुलटा ) व्यभिचारिणी होवै यदि चंद्रमा अष्टम हो तो पतिके सुखसे हीन रहै ॥ ४१ ॥

मन्देष्टमे रोगरतस्य भार्या दिनाधिपे सा परिता पतप्ता ॥ अनंगरंगा परकांतसंगा मृतावगौ सा कुलधर्मभंगा ॥ ४२ ॥

जिस स्त्रीका शनि अष्टम हो तो उसका पति रोगयुक्त सर्वदारहै सूर्य अष्टम हो तो सर्वप्रकार संतापोंसे संतप्त रहै यदि राहु अष्टम हो तो कामदेवके ( रंग ) क्रीडासे परपुरुषोंका संगकरे तथा अपने कुलके धर्मको खोवै ॥ ४२ ॥

## अथ पुत्रभावविचारः ।

पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि ॥
केंद्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ४३ ॥

अब स्त्रियोंके संतानभावका विचार कहते हैं- कि, यदि जन्मलग्नसे पंचमभावमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो पंचमेश केंद्र कोण १।४।७।१०।८।९। में हो तो वह स्त्री बहुत पुत्रोंवाली हो ॥ ४३ ॥

पंचपुत्रवती जीवे स बले च सिते विधौ ॥
सुतासुखवती पापे नारी संतानवर्जिता ॥ ४४ ॥

यदिबृहस्पति बलवान् होकर पंचममें हो तो पुत्रवती होवे शुक्र चंद्रमा सबल पंचममें हो तो कन्याओंका सुख होवे पापग्रह पंचम हो तो संतानके सुखसे हीन रहै. जिनग्रहोंका जो फल पंचममें कहाहै वह उसकी दृष्टिसेभी जानना ॥ ४४ ॥

## अथ विषयोगाः ।

भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमंदारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी ॥ पापे लग्नेशुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ ४५ ॥

अब स्त्रियोंके विषयोग कहतेहैं कि, जिसके जन्मसमयमें भद्रासंज्ञक२।७।१२तिथि,आश्लेषा, कृत्तिका, शततारा, नक्षत्र, रवि शनि मंगल वार हो तो वह विषाख्य होती है. इसयोगके तीन भेदहैं कि द्वितीया तिथि आश्लेषा नक्षत्र रविवार ( १ ) सप्तमी तिथि कृत्तिका नक्षत्र शनिवार (२) द्वादशी तिथि शततारा नक्षत्र मंगल

वार ( ३ ) और पापग्रहराशि लग्नमें पापग्रहयुक्त तथा पापग्रह छठेभी हो तो वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ४५ ॥

आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगभे भौमदिने-
बुधर्क्षे ॥ चेत्सप्तमी वाथरवौ विशाखा हरेस्तिथौ वा
पिच सा विषाख्या ॥ ४६ ॥

इनके भेद कहते हैं कि शनिवारकी द्वितीयातिथि आश्लेषा नक्षत्र ( १ ) मंगलवारके शततारा नक्षत्र सप्तमीतिथि ( २ ) रविवारके विशाखानक्षत्र द्वादशीतिथि ( ३ ) में जिस कन्याका जन्म हो वह विषाख्या होती है ॥ ४६ ॥

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनंदने ॥
पंचमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥४७॥

यदि लग्नसे नवम मंगल, लग्नसे सूर्यपुत्र(शनि)पंचममें सूर्य जिस कन्याका होवे वह विषाख्या ( विषकन्या ) होती है ॥ ४७ ॥

विषाख्या शोकसंतप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका ॥
वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता बुधैः ॥ ४८ ॥

जो कन्या उक्तप्रकारोंसे विषाख्या हो वह शोकसे संतप्त दुर्भगा भाग्यहीना होवे. संतान उसकी मरतीरहें वस्त्रभूषणोंसे हीन रहे यह प्राचीन पंडितोंने कहाहै, ऐसेही विष घटिकाके जन्मवालीभी होतीहै ॥ ४८ ॥

अथ विषयोगभंगः ।

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचंद्रयोः ॥
विषयोगमलं हंति रंहो हरिरिभं यथा ॥ ४९ ॥

यदि जन्मलग्नसे सप्तमेश सप्तममें हो अथवा चंद्रमासे सप्तमेश

सप्तम हो तथा लग्नचंद्रसे शुभग्रह सप्तम हो वा उसे देखे तो निश्चय विषयोगके फलको नाश करता है जैसे सिंह बलात्कारसे हाथीको मारताहै ॥ ४९ ॥

इत्थं विवाहकालेपि ज्ञातव्यं लग्नचंद्रयोः ॥
तदधीनं यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ॥ ५० ॥

विवाहसमयलग्न चंद्रसेभी ऐसाही विचार करना, क्योंकि विवाहमुहूर्तके आधीन स्त्रियोंका आजन्म शुभाशुभहै ॥ ५० ॥

## वैधव्यभंगोपायः ।

वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शांतिपूर्वकम् ॥
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले स्त्रीजातकाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

जिसकन्याके वैधव्ययोग हो उसको प्रथमप्रतिमाविवाह, सावित्रीव्रत, पिप्पलव्रत इत्यादि कल्पोक्तशांति करके वेदोक्त विधिसे उसका विवाह दीर्घायुयोगवालेके साथ करना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां स्त्रीजातकाध्यायः ॥ ९ ॥

---

## अथ कन्यायाः शुभाशुभांगलक्षणानि ।

शुभलक्षणसंपन्ना भवेदिह यदांगना ॥
तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥ १ ॥

यदि स्त्री शुभलक्षणोंसे संपन्न होवे तो संसारमें उसे विवाह विधिकरके ग्रहण करनेसे गृहस्थियोंका सुख बढताहै ॥ १ ॥

शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता ॥
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामंगलक्षणम् ॥ २ ॥

स्त्रियोंके लक्षणोंसे शुभ तथा अशुभ प्रथम बुद्धिमान् व्यासदेवजीने कहाहै वही यहांभी स्त्रियोंके अंगलक्षण प्रकाश कियेजातेहैं॥२॥

युवतिपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसुमप्रभम् ॥ दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं बहु धर्मविवर्जितम् ॥ ३ ॥

स्त्रीके पैरके तलुआ यदि कोमल, (सम) सरल तथा (जपा) ओड्र पुष्पके समान रक्तवर्ण हो तो स्थूलशरीर सर्वांग कामतापसे गरम राजाकी प्रियतमा और धर्मरहित होवे ॥ ३ ॥

कमलकंबुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवितानवत् ॥ भवति लक्ष्म पदे यदि योषितांक्षितिभृतां वनिता विभुतावृता ॥ ४ ॥

जिसके पैरमें कमल, कंबु (शंख), रथ, ध्वजा, चक्रके समान तथा स्थूल मछली, विमान, (वितान) चांदनी के आकारचिह्न हो तो उसस्त्रीका पति राजा होवे ऐश्वर्यसे युक्तरहे ॥ ४ ॥

शूर्प्पाकारं विवर्णं च विशुष्कं परुषं तथा ॥ रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥ ५ ॥

जिसके पैरका तलुआ शूर्पके आकार, विवर्ण, (शुष्क) खरदरा करडा, रूखा हो तो यह लक्षण तन्वंगीके दौर्भाग्य सूचक है ॥५॥

यस्याः समुन्नतांगुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः ॥ शूर्प्पाकारा नखा यस्याः सा भवेद्दुःखभागिनी ॥६॥

जिसके पैरका अँगूठा गोल, सरल हो तो सौख्य देताहै जिसके नाखून शूर्पके आकार हों वह दुःखभोगनेवाली होती है ॥ ६ ॥

संचलंत्यां धराधूलिधारा यदा राजमार्गेऽचलायां

बलादुच्छल ॥ पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं
नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ ७ ॥

जिसके चलनेमें पृथ्वीमेंसे (धूलि) गर्दकी धारा उडे तथा सडकमें चलते जो स्त्री अपने बलसे उछलती चले वह (अपतिव्रता) जारिणी (तीन कुल) माता पिता भर्ता को नाशकरके सर्वदा दुष्टोंके साथ प्रसन्नरहे ॥ ७ ॥

यस्या अन्योन्यमारूढा पादांगुल्यो भवंति चेत् ॥
सा पतीन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ ८ ॥

जिसके पैरकी एक अंगुली दूसरी अंगुलीके ऊपर चढीरहे वह बहुतपतियोंको मारके (वारांगना) वेश्या होती है ॥ ८ ॥

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलंत्या योषितस्तदा ॥
सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ९ ॥

जिसस्त्रीके चलते समयमें (कनिष्ठा) छोटी अंगुली पैरकी पृथ्वीको स्पर्श न करे वह शीघ्रही अपने पतिको मारकर जारसे रमितरहै ॥ ९ ॥

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं नसंस्पृशेत् ॥
आद्या पतिद्वयं हंति चापरा तु पतित्रयम् ॥ १० ॥

जिसस्त्रीके पैरकी अनामिका एवं मध्यमा पृथ्वीको स्पर्श न करें इनमेंसे एक ऊंची रहे तो दोपतिको दोनों ऊंचीरहे तो तीनपति को मारे ॥ १० ॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ॥
तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् ॥ ११ ॥

जिसके पैरकी मध्यम तथा अनामिकाभी छोटी हों तो वह स्त्री पतिहीना होवे• यह भगवान् वेदव्यासने आपही कहाहै ॥ ११ ॥

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ॥
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १२ ॥

यदि स्त्रीके पैरोंके नाखून (स्निग्ध) चिकने,(वर्तुल) गोलाकार, ऊंचे और तांबेके रंगके हों तो मृगाक्षियोंको उत्तम भोग देतेहैं ॥ १२ ॥

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगी-
दृशाम् ॥ अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पद-
पृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ १३ ॥

यदि मृगनयनीस्त्रियोंके पैरोंकी पीठ निर्मल, कोमल, कमलदलके पीठके समान ( अरुण ) गुलाबीरंग यद्वा कुंकुम, वा ( विद्रुम ) मूंगाके समान हों तो वे बहुत गुणवती होवैं यह निश्चय है ॥१३॥

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदांगना ॥
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेनसा ॥१४॥

पैरोंकी अंगुलियोंके बीचमें (नम्र) गहरा हो तो वह स्त्री सर्वदा दरिद्रा रहै अंगुलियोंपर (नस) शिरा बहुत हों तो मार्ग चलनेवाली होवै बहुत रोम अंगुलियोंमें हों तो दासी होवै ॥ १४ ॥

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ॥
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ॥१५॥

जिसके ( गुल्फ ) घुटनोंके नीचे ( निर्मांस ) माडे हों तो वह स्त्री दुर्भगा होवै यदि उक्तस्थान (गूढ) स्थूल, पुष्ट हों तथा (शिरा) नसियोंसे रहित हों एवं वर्तुल हों तो सुभगा होवै ॥ १५ ॥

अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ ॥
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥ १६ ॥

जिस स्त्रीके गुल्फस्थान शिथिल एवं ( अगूढ ) ढीले हो तो

वह दुर्भगा होवे इतने गुल्फलक्षण कहेगये अब ( पार्ष्णि ) घुटनोंके लक्षण कहेजाते हैं ॥ १६ ॥

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥
कुलटा तुंगपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥ १७ ॥

जिसके ( पार्ष्णि ) घुटने समान हों तो वह सौभाग्यवती होवे पार्ष्णि मोटे होंतो दुर्भगा होवे जो पार्ष्णि ऊंचे हों तो व्यभिचारिणी और लंबी पार्ष्णिसे नित्य रोगसे आकुल रहे ॥ १७ ॥

जंघे रंभोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ॥
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥१८॥

जिस स्त्रीके जंघा कदलीस्तंभके समान हों तथा रोम रहित ( वर्तुल ) गोलाकर सरल, मोटी, समान और चिकनी हों तो राजरानी होवे ॥ १८ ॥

एकरोमा प्रिया राज्ञो द्विरोमा सौख्यभागिनी ॥
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥ १९ ॥

जिसके जंघाओंके, रोमकूप, रोमोंके जडपर एक एक रोम हों तो वह राजाकी प्रिया, ऐश्वर्यवान होवे, दोदो हों तो सुख भोगनेवाली, तिनसे विधवा जाननी ॥ १९ ॥

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम् ॥ भुवनभर्तुरतौ विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥ २० ॥

जिस स्त्रीके दोनों जानु मोटी, अति सुंदर गोलाकार हों तो अति शुभफल करते हैं वह राजरानीके तुल्य होतीहै इससे विपरीतलक्षण हों तो फलभी विपरीत कहा है ॥ २० ॥

समुन्नतनितंबाढ्या यस्याः सिद्धांगुला कटिः ॥
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥ २१ ॥

जिसकी कमर सिद्ध (२४) अंगुल चौडी हो तथा (नितंब) चूतड ऊंचे हों तो वह राजाकी पटरानी होवै और अनेक (सखी) दासियोंसे युक्त रहे ॥ २१ ॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः ॥
लघ्वी रोमाकुला नार्य्या वैधव्यं दिशते कटिः॥२२॥

जो कमर मांसरहित, माडी, गहरी, (चिपिट) बैठी हुई गाडिके आकारकी, छोटी और रोमोंसे भरी हुई हो वह वैधव्य देती है॥२२॥

सीमंतिनीनां यदि चारुबिंबो भवेन्नितंबो बहुभोगदः स्यात् ॥ समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥ २३ ॥

जिन भाग्यवानस्त्रियोंके चूतड रमणीय बिंब हों तो बहु प्रकार भोग देते हैं. यदि ऊंचे, मोटे, बडेभी हों तो सर्वदा कामदेवका सुख देते हैं ॥ २३ ॥

यदा गजस्कंधसमानरूपो भगोथवा कच्छपपृष्ठवेप ॥ इलापतेः कामविमोददायी वासोन्नतः सोपि सुताजनेता ॥ २४ ॥

यदि स्त्रीका (भग) योनि हाथीके गर्दनके सदृश यद्वा कछुआके पीठके सदृश हो तो वह राजाको काम क्रीडामें प्रसन्न करनेवाली अर्थात् राजरानी होवै यदि उक्तभग ऊंचे आकार हो तो कन्या जननेवाली होती है ॥ २४ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ॥ चुल्लिको

दररूपो यः कुरंगखुरसन्निभः ॥ २५ ॥ रोमाकुलो दृष्टनासो विकृतास्यो महाधमः ॥ कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ २६ ॥

अथवा भग (अश्वत्थ) पीपलके पत्रके समान अथवा शुभ मणिके समान होतो है शुभ हो तो जो भग चुल्हीके पेटके आकारका हो वह अधम होताहै यह भग कामियोंके (विनोद) आनंदके हेतु सर्वदा नहीं होताहै ॥ २५ ॥ २६ ॥

कामिन्याः कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ॥ स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोपि तादृशः ॥ २७ ॥

कामिनीका भग यदि दोनों ओर ऊंचा बीचमें गहरा होतो दौर्भाग्य बढ़ाता है गर्भधारणमें असमर्थ होता है यदि (वक्राकार) मुडा हुआ हो तोभी वैसाही फल करता है ॥ २७ ॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्परकूपवदेव भगो वा ॥ लंबगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोपि निरुक्तः ॥ २८ ॥

जो भग वेतके अथवा बांसके पत्रके आकार हो अथवा (कर्पर) बीचमें गहरा चारों ओर ऊंचाहो तथा गलेके समान एकओर माडा दूसरे ओर मोटा लंबाहो (विकट) ऊंचानीचा हो और हाथीकेसे रोम जिसपर हों तो शुभ नहीं होता ऐसेही (चिपिट) माडा जमी दोजभी कहाहै ॥ २८ ॥

मृदूत्तरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम् ॥ उतसमुन्नतमायतमादरात्पतिकला कलितं गदितं बुधैः ॥ २९ ॥

जो यदि भग कोमलतर, कोमल बालोंसे भरा हो तो वह ऐश्व-र्य ( पात्र ) भोगनेवाला होताहै और ऊंचा बड़ा, कांतिमान् ( कलाकलित ) जिसके दर्शन वा स्पर्शसे मनकी उमंग प्रसन्नतासे उठे यह वैसाही है ॥ २९ ॥

तदेव दक्षिणावर्त्तं मांसलं शुभसूचकम् ॥
वामावर्त्तं च नारीणां खंडितं खंडिताश्रयम् ॥३०॥

वही भग दाहिने ओर घुमाहो यद्वा भौंरा मोटा हो तो शुभफल कहताहै. यदि बाँये ओर घुमा हो यद्वा भौंरा तथा ( खंडित ) किसी जगे भंगजैसा हो तो व्यभिचारिणी करताह ॥ ३० ॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ॥
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥३१॥

यदि भग मांसरहित एवं कुटिलाकार, मोडवाला होतो वैधव्य करताहै. जो अति मोटा, व बडालंबा, हो तो अवश्य ( दौर्भाग्य ) भाग्यहीन करताहै ॥ ३१ ॥

मृदुला विपुला बस्तिः शोभना च समुन्नता ॥
अशुभा रेखयाक्रांता शिराला लोमसंकुला ॥ ३२ ॥

( बस्ति ) भग कोमल तथा बडा हो तो शुभहोताहै ऊंचीभी योनि शुभफल देतीहै जिसमें रेखाहों एवं नसींहों तथा रोमोंसे भरीहो तो अशुभफल देतीहै ॥ ३२ ॥

गभीरा दक्षिणावर्त्ता नाभी भोगविवर्धिनी ॥
व्यक्तग्रंथिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना ॥३३॥

स्त्रीकी नाभि यदि गहरी एवं दाहिनी ओर (मोड) घुमाव भौरा-वाली हो तो भोगवढातीहै. जिसकी ( ग्रंथि ) गांठ प्रकटहो नाभी खुली हो यद्वा वामावर्त्ता हो तो शुभ नहीं होती ॥ ३३ ॥

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि ॥
भकोदरी नरेशानां बलिनं चायतोदरी ॥ ३४ ॥

जिस स्त्रीका पेट बडाहो वह बहुत पुत्र जनतीहै. जिसका पेट मेंकका सा हो उसका पुत्र राजा होवे जिसका पेट बडे फैलावका उसका पुत्र बलवान् होताहै ॥ ३४ ॥

उन्नतेनोदरेणैव वंध्या नारी प्रजायते ॥
जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिदुकांगना ॥ ३५ ॥

जिस स्त्रीका पेट ऊंचाहो वह वांझ होतीहै. जिसका उदर (कठोर) कडा हो वह किसी नीचजातिविशेषकी पत्नी होवे ॥ ३५ ॥

आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम् ॥
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥३६॥

जिसके पेटमें (आवर्त) भौंरा हो तो वह दासी होवै यह निश्चयहै और जिसका उदर कोमल मांससे संयुक्त दोनहूं कूखी हों तो शुभफल होताहै ॥ ३६ ॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा जठरेणातिकृशेन कामिनी सा ॥ बहुधातुलभोगलालिता सानुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

जिसका पेट नशियोंसे रहित,कोमल त्वचाका तथा कृश हो तो वह कामिनी पुत्रवती होतीहै और बहुत प्रकारके अनुपम भोगोंसे उसका प्रेम होताहै दिनादिन प्रसन्नता पूर्वक मिष्टान्न, उत्तम मेवे खानेवाली होती है ॥ ३७ ॥

घटाकारं यस्या भवति चमृदंगेन सदृशं यवाकारं दवाद्गुदरमहितं पुत्ररहितम् ॥ अभद्रंनो भद्रं तदपि

यदि कूष्मांडसदृशं निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥ ३८ ॥

जिस स्त्रीका पेट मृदंगके आकार हो अथवा दैवयोगसे (यव) जौ केदानेके आकारकाहो तो वह पुत्ररहित रहै यदि (कूष्मांड) कुँम्हडेके आकारका पेट हो तो सर्वदा अमंगल देखे कभी मंगल नहो तथा कठोर (उरुशाल) के समानभी तत्वजाननेवालों ने कहाहै॥३८॥

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोदविवर्द्धिनी ॥ भवति सा कपिला कुटिलाकुला शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥ ३९ ॥

जिसके (त्रिवली) हृदयसे भगपर्यंत रोमवाली बारीक एवं सीधी हो तो वहस्त्री रहस्यके प्रेममें हँसीकी बोलचाल अतिरमणीय करै प्रेमबढावै यदि वह त्रिवली (कपिलवर्ण) भूरेरंगकी, मुडीहुई, बहुत रोमों की हो तो कुटिलस्वभाववाली, और गुस्सेवाली, करडेवचन कहनेवाली होवै. यदि छांटेरोम तथा बडी आकृतिकी त्रिवली हो तो शुभफल देती है ॥ ३९ ॥

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समायतम् ॥ भोगमेत्य सकलं वरांगना सा पुनः प्रियवियोगमालभेत् ॥ ४० ॥

जिस स्त्रीकी छाती रोमरहित, (समान) ऊंची नीची न हो उपर नीचेका (माप) परिमाण तूल अर्ज बराबर हो तो वह श्रेष्ठ स्त्री समस्त भोग सुख पावै परंतु पीछे (प्रिय) प्यारेका वियोगभी पावै ॥ ४० ॥

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहंति विस्ताररूप

हृदया व्यभिचारिणी स्यात् ॥ अष्टादशांगुलमितं हृदयं सुखाय चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किंचित् ॥ ४१ ॥

जिस स्त्रीके हृदयके रोम फटेमुखके हों अथवा अकस्मात् स्वयं उखडजावें वह अपने पतिको मारतीहै जिसका हृदय जितना लंबा उतनाही चौडाभी हो तो व्यभिचारिणी होतीहै. जिसका हृदय १८ अंगुल हो तो सुख होताहै यदि रोमोंसे भराहुआ तथा कहीं ऊंचा कहीं नीचाभी हो तो उसको थोडाभी सुख नहीं मिलता ॥ ४१ ॥

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम् ॥
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ४२ ॥

उत्तमस्त्रियोंके हृदय ऊंचे, स्थूल शुभहोतेहैं गहरा और चिपिट रूक्ष, कठोर हो तो दौर्भाग्य ( भाग्यहीन ) करताहै ॥ ४२ ॥

भवत एव समौ सुदृढाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ ॥ निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमबाणविनोदविवर्धकौ ॥४३॥

यदि स्त्रीके दोनों स्तन समान एवं अच्छे ( दृढ ) करडे, बहुत खूबसूरत, सुहावने हों तथा गोल हों तो अपने पतिको नित्य कामदेवके बाणोंके विनोद ( हर्ष ) बढावनेवाले होते हैं ॥ ४३ ॥

सुभ्रुवौ विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ ॥ पयोधरौ तदा नार्य्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ॥ ४४ ॥ पुत्रदोप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् ॥ सांतरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ॥ ४५ ॥

सुंदर है भ्रुकुटि जिसकी ऐसे स्त्रीके यदि स्तन मिले हुये न हों

माडे न हों बडे स्थूल हों पत्थरके समान कठोर हों और (दक्षिणोन्नत) दाहिने ओर झुके हों यद्वा दाहिना स्तन कुछ बडा हो तो पुत्र देनेवाली होती है यदि ( वामोन्नत ) वामे ओर झुके यद्वा वाम स्तन कुछ बडा हो तो कन्या देते हैं जिन स्तनोंके बीचमें कुछ (अंतराल) फासला हो तथा बडे हों उनके ( मुख ) चूंची मोटी हों तो शुभ नहीं होते ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ॥
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यंतदुःखदौ ॥ ४६ ॥

स्तन जडसे मोटे फिर क्रमसे माडे होते होते अग्रभाग तीक्ष्ण हो तो प्रथमअवस्थामें सुख पीछे अत्यंत दुःख देतेहैं ॥ ४६ ॥

पुत्रिणी विनतस्कंधा ह्रस्वस्कंधा सुखप्रदा ॥
पुष्टस्कंधा तु कामांधा रतिभोगसुखावहा ॥ ४७ ॥

जिसके स्कंधा पुष्टहों तो वह स्त्री कामदेवसे अंधीसी रहती है यदि कंधा नम्र हो तो पुत्रवती और छोटीकंधासे सुखी होतीहै४७॥

मंदांधा कुटिलस्कंधा स्थूलस्कंधा च तादृशी ॥
यदि लोमाकुलस्कंधा वैधव्यं द्रुतमावहेत् ॥ ४८ ॥

जिसके ( कंधा ) कंदन टेढी हो वह मदसे अंधी रहती है मोटी कंधावालीभी ऐसेही मदांधा रहतीहै यदि कंधामें रोम बहुत हों तो शीघ्र विधवा होतीहै ॥ ४८ ॥

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी ॥
तुंगांसा विधवा ज्ञेया विमांसा सा तथैवच ॥ ४९ ॥

स्कंधाके किनारे बाहुके जड़ (अंस) चौडे हों यद्वा करडे हों तो वह कामिनी धन्य ( भाग्यवती ) होवे जिसके उक्तभाग ऊंचे हों अथवा ( मांस रहित ) माडे हों तो विधवा जाननी ॥ ४९ ॥

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् ॥
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा ॥ ५० ॥

अंगूठा तथा दोअँगुली स्त्रियोंकी यदि कमलकी कलीके समान हों तो बहु भोग देती है यह स्त्रियोंके भोगनिमित्त पहिले ब्रह्माने बनाया ऐसा जानना ॥ ५० ॥

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम् ॥ निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम् ॥ ५१ ॥

भुजाओंसे ( करतल ) हाथोंके तलुवे यदि कोमल, निर्मल कमलके समान, तथा ऊंचे हों तो अपने पतिके कामदेवको बढानेवाले होते हैं यह ब्रह्माके वचन मुनियोंने कहे हैं ॥ ५१ ॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया ॥
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥ ५२ ॥

यदि हाथका तलुवा निर्मलरेखाओंसे भरा हो तो मंगल देने वाला होताहै यदि रेखा छोटी हो तो अमंगली है यदि रेखा न हों तो अमंगली होवै और अति रेखा हों तो वैधव्य पावै ॥ ५२ ॥

शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि ॥
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥ ५३ ॥

हाथ अति (शिरा)नसियोंसे भरा हो तो स्त्री निर्द्धन होवै और हाथ का पिछवाडा ऊंचा (तथा) नसियोंसे रहित हो तो शुभ होताहै ५३

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत् ॥
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥ ५४ ॥

यदि हाथकी पीठ रोमोंसे भरी, तथा गहरी हो तो पतिके प्राणोंको हरे इतने सुभ्रुस्त्रियोंके करपृष्ठके लक्षण पंडितोंने कहे हैं ॥ ५४ ॥

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फुटतरा करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्याबहुशुभम् ॥ यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विंदति परं विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥ ५५ ॥

यदि स्त्रीके बॉयें हाथमें गहरी लाल रंगकी, कोमल पेखनेमें स्पष्ट तर रेखा हों तो पतिका रति (कामक्रीडा) का परम सुख पाती है सौभाग्यबढाती है बलदान् होती है यदि हाथमें स्वस्तिकभी हो तो पुत्रवती होवै ॥ ५५ ॥

करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता ॥ नृपमपत्यमलं जनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥ ५६ ॥

यदि स्त्रीके हाथमें कमलका चिह्न हो तो परम बढपनसे युक्त राज रानी होवै तथा संतानोंमें निश्चय राजाकोही उत्पन्न करे अर्थात् इसका पुत्रभी राजा होवै जो बलसे बलवानोंके बलकोभी मर्दन करने वाला हो ॥ ५६ ॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नंद्यावर्तः प्रजायते ॥
चक्रवर्तिनृपस्त्री सा यस्याः पाणितलेमले ॥ ५७ ॥

यदि स्त्रीके निर्मलहाथमें प्रदक्षिणाकार घुमाहुआ नंद्यावर्त चिन्ह हो तो वह स्त्री चक्रवर्ती राजाकी रानी होवै ॥ ५७ ॥

आतपत्रं च कमठः शंखोपि यदि वा भवेत् ॥
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥ ५८ ॥

जोस्त्रीके हाथमें छत्र, कमल, कछुआ, अथवा शंखकासा चिह्न हो तो वह गुणवती राजमाता तथा बडे यद्रा सुंदरआकारकी और पतिव्रता होवै ॥ ५८ ॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत् ॥
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालंकारमंडिता ॥ ५९ ॥

जिसके बायें हाथमें (तराजू) तगडी अथवा मालाके समान रेखा हो तो उसका पति यद्रा वही व्यापारी होवै अथवा व्यापारी वा वैश्यकी स्त्री होवै तथा धनसे परिपूर्ण रहे. अनेक भूषण अलंकारोंसे सुशोभित रहे ॥ ५९ ॥

करतलेगजवाजिवृपाकृतिः कृतिविदामबलाकिल कोविदा ॥ भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवोः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥ ६० ॥

जिस स्त्रीके हाथके तलुआमें हाथी, घोडा, बैलका चिह्न हो वह चतुर एवं कियेकामकी परीक्षा करनेवाली अर्थात् कदरदान और पंडिता होवै. जिस सुंदर भ्रुकुटिवाली स्त्रीके हाथमें चूनेवाला पक्कमकानके समान चिह्न हो अथवा चंद्रमाके समान रेखा हो तो वह अति शुभफल देती है. गुणवती भाग्यवती करती है ॥ ६० ॥

भवति सा विमलांकुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका ॥ गुणविभूषितभूपतिवल्लभा करतले श-कटेन विशोबला ॥ ६१ ॥

जिस स्त्रीके हाथमें निर्मल अंकुश, चामर, तथा निर्मल बाणके आकारका चिह्न रेखाका हो तो वह शुभगुणोसे शोभायमान, राज-रानी होवै अर्थात उसका पति राजा वा राजतुल्य होवै यदि हाथमें

(शकट) गाडीके आकारकी रेखा हो तो उसका पति वैश्य यद्वा व्यापारी होवे ॥ ६१ ॥

अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठां यदि गच्छति ॥
यस्याः सा पतिहंत्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥६२॥

जिस स्त्रीके अँगूठेके जडसे (कनिष्ठा) छोटी अंगुलीके मूलपर्यंत पहुँची हो तो वह अवश्य अपने पतिको मारकर विधवा रहैगी-ऐसी स्त्रीको दूरहीसे वर्जित करना ॥ ६२ ॥

यदि करे करवालगदामलप्रखरकुंतमृदंगकुरंग-वत् ॥ भवति शूलनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥ ६३ ॥

जिस स्त्रीके हाथमें तलवार, गदा, निर्मल एवं तीखा कुंत,मृदंग, हरिण, शूलके समान रेखा हो तो वह स्त्री पृथ्वीपर सर्वदा धनवाली तथा दाताभी होवे ॥ ६३ ॥

वृषभेकवृश्चिकभुजंगजंबुकाः खरकंकपत्रशलभा-बिडालकाः ॥ यदि वामपाणितलगा भवंति चेत्कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥ ६४ ॥

जिसके बायें हाथमें हथेलीमें बैल मेंडक, बिच्छु, सर्प, स्यार, गदहा, (कंकपत्रपक्षी) कैंचुआ, शलभ अथवा ठडी, बिल्लीका चिह्न हो तो कलहारी होवे तथा अतिरोगपीडित रहे ॥ ६४ ॥

कोमलः सरलोंगुष्ठो वर्तुलो यदि योषिताम् ॥
क्रमादेवं कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्तुलाः ॥६५॥
पृष्ठरोमाः प्रजाः शस्ताश्चिपिटा उदिता बुधैः ॥

कृशाः कुंचितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥ ६६ ॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयो शुभाः ॥ ६७ ॥

यदि स्त्रीके अंगुष्ठ वर्तुलाकार (गोल) तथा सीधा और कोमल हो और अंगुली उससे क्रमकरके न्यून जैसे एकसे दूसरी कमहोती जावैं तथा लंबे आकारकी (वर्तुल) गोल हों उनके पीछे रोम जमेंहों एवं पृष्ठभाग उनका चिपिट (चौडा) स्वल्पमांसवाले हों तो शुभफल देतेहैं ये शुभलक्षण हैं यदि अंगुलि माडी हो उनके रेखाओंके बीचके पर्व अथवा अंगुलियोंके अग्रभाग माडे हों तथा अंगुली छोटे कदकी हों तो रोगकी भय देती हैं यदि अंगुलियोंमें अनेक (पर्व) रेखा मध्यस्थान हो तथा ऊंची हो तो शुभफल देनेवारी होतीहै ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ॥
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रवः सुखनाशकाः ॥६८॥

स्त्रीके नाखून यदि शंख यद्वा सीपके समान हों तथा बीचमें गहरे वर्णरहित हों तो शुभ नहीं होते तथा कपिलवर्ण एवं मुडे हुये और रूखे भी हों तो सुखका नाश करतेहैं ॥ ६८ ॥

यदि भवंति नखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरला यदि बिन्दवः ॥ अतितरां कुसुमायुधपीडया परजनेन लयंति रमंति ताः ॥ ६९ ॥

मृगके समान हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्रियोंके नखूनोंमें यदि श्वेतरंगके (बिंदु) छींटे हों तो वे अतिही कामदेव की पीडासे परपुरुषोंसे स्वयं बातचीत करें तथा रमितभी रहें ॥ ६९ ॥

गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ॥
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥ ७० ॥

जिस स्त्रीके पीठकी हड्डी ( कनकदंड )मासमें छिपी हो तो वह पतिकी प्यारी होती है यदि पीठपर बहुतरोम हों तो निश्चय विधवा होतीहै ॥ ७० ॥

सशिरेणातिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता ॥ सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः ॥ ७१ ॥ सापत्युरनुभद्राख्या मुक्तालंकारमंडिता ॥ अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता ॥ ७२ ॥

जिसका पृष्ठभाग ( शिरा ) नसियोंसे युक्त हो कहीं ऊंचा कहीं नीचा हो तथा गहरा हो तो वह स्त्री दुःखित रहती है । जिसका पृष्ठभाग (सरल) सीधा, माससे भरा हुआ हो तथा पीठके बीचकी हड्डी ऊंची हो तो वह पतिव्रता पतिको मंगल करनेवाली मोति आदिरत्नोंके भूषणोंसे शोभित रहै पतिकी अतिप्यारी होवै अच्छा (शील ) स्वभाव होवै श्रेष्ठसखि किंवा दासियोंसे युक्त रहै ।७१।७२।

कंठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः ॥
चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति॥७३॥

जिस स्त्रीका ( कंठ ) गला गोलआकारका, सुंदरसुहावना तथा ऊंचाईको लिये है लंबाईमें चार अंगुल हो तो वह अपने भर्त्ताकी प्यारी होती है ॥ ७३ ॥

गुप्तास्थिमांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता ॥
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना ॥ ७४ ॥

जो गला(कंठ)मांससे पुष्ट हो हड्डी जिसकी प्रकट नहीं त्रिवलीके समान तीनरेखाओंसे युक्त हो दृढहो तो शुभहोताहै इससे विपरीत

माडा, ऊंची हड्डीवाला कहीं ऊंचा कहीं नीचा हो तो अशुभ होताहै ॥ ७४ ॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका ॥
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥ ७५ ॥

गला मोठा हो तो पतिसे त्यक्त रहै गलेका लालरंग हो तो दासी होवै जिसकी ग्रीवा ( चिपिट ) चौडी माडी हो तो विधवा होवै जिसकी ग्रीवा छोटी हो वह (धनवर्जिता) दरिद्रा रहै ॥ ७५ ॥

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ॥
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ॥७६॥

जिसकी टोडी घणी, कोमल और रोमरहित हो तो शुभ होती है जिसमें रोम बहुतहों (टेढी) तिर्छी हो छोटी अथवा बहुतमोटी हो तो शुभ नहीं; दुःख दौर्भाग्य दारिद्य करती है ॥ ७६ ॥

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्तुलाकृती ॥
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ॥ ७७ ॥

जिन मृगाक्षियोंके गाल बहुत मांस युक्त, गाढे, कोमल गोलाकार ऊंचे हों तो शुभ होते हैं ॥ ७७ ॥

निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ॥
सीमंतिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ॥ ७८ ॥

जिस नवयौवना स्त्रीके ( कपोल ) गाल मांसरहित हों अथवा पुरुषकेसे हों टेढी विंगीआकृतिके हों तो अशुभ होतेहैं दौर्भाग्य कंबख्ती बढानेवाले होते हैं ॥ ७८ ॥

वर्तुलो रेखयाक्रांतो बन्धूकसदृशोधरः ॥
स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः ॥७९॥

जिन सुभ्रुओंके होंठ रेखाओंसे युक्त तथा अधर बंधूकपुष्पके समान रक्तवर्ण हों तथा अच्छा (स्निग्ध) चिकने हों तो (राजप्रिय) बडे लोगोंकी प्यारी यद्वा राजरानी होवै- यह पूर्वाचार्योंने कहाहै ॥ ७९ ॥

प्रलंबः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ॥
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णौ वैधव्यसूचकः ॥ ८० ॥

जो ओष्ठ लंबाहो, पुरुषकेसे ओष्ठसमान हो फटाहुआ हो तथा मांसरहित हो तो दौर्भाग्यदेनेवाला जानना यदि ओष्ठ कृष्णरंगका हो तो वैधव्य जनाता है ॥ ८० ॥

उपर्यधः समा दंताः स्तोकरूपाः पयोरुचः॥ द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ॥ ८१ ॥

जिस स्त्रीके मुखमें दांत ऊपर तथा नीचेके सम हों मिलेहुये हों परंतु एकके ऊपर दूसरा न हो दूधके समान कांतिमान् हों गिनतीमें बत्तीस हो तो वह सौभाग्यवती रहती है ॥ ८१ ॥

अधोदंताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ॥
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥८२॥

जिसके नीचेके दांत बडे हों यद्वा गिनतीमें उपर दांतोंसे अधिक हों तो मातासे हीन एवं दुःखितभी रहै यदि दांत (विकटरूप) कुरूप हों तो विधवा होवै और दांत (छांटे) बीचमें अंतराल सहित हों तो व्यभिचारिणी होवै ॥ ८२ ॥

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ॥
स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी॥८३॥

स्त्रीकी जीभ कोमल, सरल और लाल, वा श्वेतरंगकी अथवा

रक्त श्वेत मिले हुये रंगकी शुभ होती है जो जीभ आद्यंतमें मोटी बीचमें माडी हो तथा विकृतरूप हो तो सुखका नाश करतीहै८३

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रं स्थूलया भवेत् ॥
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लंबमानया ॥ ८४ ॥

"जिसकी जिह्वा श्याम रंगकी हो वह नित्य कलह करनेवाली होवै जिसकी जिह्वा मोटी हो वह दरिद्रा होवै और जिसकी जिह्वा लंबी हो वह ( अभक्ष्यभक्षिणी ) न खानेके वस्तु खानेवाली होवै८४

तालु कोकनदाभासं कोमल भद्रकारकम् ॥
नारी प्रव्रजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥ ८५ ॥

जिसकी तालू कमल ( रक्तोत्पल ) के समान रंग, कांतिमान् हो तो मंगलसूचक होता है यदि तालू पीतवर्ण हो तो स्त्री (प्रव्रजित) फकीरनी होवै. श्वेतवर्ण हो तो वह स्त्री विधवा होवै ॥ ८५ ॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ॥
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८६ ॥

जिस स्त्रीके तालू कृष्णरंग तथा रूक्ष हो तो अति दुःखित रहै. जिसके तालुका चक्र विपरीत हो वह कलिहारी,कहलमें शोक रखनेवाली होवै जो तालूके अनेक रूप रंग हों तो ( दुर्भगा ) दरिद्रा कुलकलंकिनीभी होवै ॥ ८६ ॥

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घंटी शुभा मता ॥
अतिस्थूला प्रलंबा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ॥ ८७ ॥

( घंटिका ) कंठमूलके प्रथमभाग स्थूल तदूर क्रमसे सूक्ष्म तथा लालरंगकी, गोलाकार, मोटी शुभ होती है जो घंटिका अति स्थूल, बहुतलंबी कृष्णरंगकी हो वह शुभ नहीं होती ॥ ८७ ॥

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभदृशां दरफुल्लक-

पोलकम् ॥ अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ८८ ॥

जिस स्त्रीके स्वभावहीसे ( वाणी ) बोलना विना आँखबंदकिये सुहाप्रिसे हो. तथा कहनेमें ( कपोल ) गाल कमलके समान खिले मुख करिके शोभायमान हों और बात करनेमें दांत दिखाई न दें ऐसे लक्षणोंका मुसकराना हो तो शुभ लक्षण है पतिका हित करती है ॥ ८८ ॥

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ॥
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रवो भवेत्॥८९॥

सुंदर भ्रुकुटीवाली स्त्रीकी नाक छोटेछिद्रका, ( सम ) सरल वृत्ताकारपुटकी शुभ होती है. यदि नासिकाका अग्रभाग स्थूल मध्यमें गहरी हो तो शुभ नहीं होती ॥ ८९ ॥

लोहिताग्रा कुंचिता च महावैधव्यकारिणी ॥
दासिका चिपिटाकारा प्रलंबा च कलिप्रिया ॥९०॥

नासिकाका अग्रभाग लालरंगका एवं मुडा हुआ हो तो महा वैधव्य करती है जिसकी नाक ( चिपिट ) सूखी सरीखी हो तथा अति-लंबी हो तो वह स्त्री (कलिहारी) कलहको प्रियमाननेवाली होवै ९०

रक्तांते लोचने भद्रे तदंतः कृष्णतारके ॥
कंबुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥ ९१ ॥

स्त्रीके नेत्रोंका अंतिमभाग रक्त हो तो मंगल देनेवाले होते हैं उन नेत्रोंके मध्यवर्ती ( तारा ) पुतली कृष्णवर्णके तथा ( कंबु ) शंख यद्वा गौके दूधके समान श्वेतरंगके बाह्यपुतली हो एवं कोमल हों और पलकोंके केश कृष्ण हों तो शुभलक्षण हैं ॥ ९१ ॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥९२॥

जिस स्त्रीके नेत्र ऊंचे हों वह अल्पायु होती है जिसके नेत्र गोल हों वह व्यभिचारिणी होवे जिसके बकरेकेसे अथवा केकर केसे अथवा महिषकेसे नेत्र हों वह दुर्भगा होवे ॥ ९२ ॥

पिंगाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ॥
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥ ९३ ॥

पीले नेत्र यद्वा पिंगलपक्षीसे नेत्रवाली तथा कपोतपक्षीकेसे नेत्रवाली दुष्टप्रकृति कामरहित होवैं, जिसके नेत्र कोटरके समान गहरे हों वह बड़ीही दुष्टा होवे और लाल नेत्रवाली विधवा होती है९३

विडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ॥
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुँश्चली वामकाणिका ॥९४॥

जो कामिनी विल्लीके समान अथवा हाथीके समान नेत्रवालीहो, वह कुलका नाश करती है जिसकी दाहिनी आँख ( काणि ) फूटी वा किसीप्रकार गई हो वह बांझ और वामआंख काणीसे व्यभिचारिणी होवै ॥ ९४ ॥

सदा धनवती नारी मधुपिंगललोचना ॥
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसंमता ॥ ९५ ॥

जिस स्त्रीके नेत्र सहतसमान पीले हों वह सर्वदा धनवतीरहै तथा पुत्रपौत्रोंके सुखसे युक्त पतिके संमत आचार्य्योंने कही है ॥९५॥

कोमलै रसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ॥
लघुरूपधरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥ ९६ ॥

जिस स्त्रीके पलक कोमल हों श्याम न हों तथा घणेभी हों और

छोटे रूपको धारण किये हों वह स्त्री धन्य है. लोकमें माननीय तथा पतिकी प्रिया होवै ॥ ९६ ॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ॥
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥ ९७ ॥

जिसके पलक रोमरहित हों अथवा कहीं कहीं स्वल्प रोम हों तथा नीचेको लंबायमान एवं कपिलवर्ण हों अथवा मोटे केशवाले हों तो वह कामिनी परपुरुषगामिनी होवै ॥ ९७ ॥

वर्त्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ॥
अनंगरंगजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥ ९८ ॥

जिसकी भ्रुकुटी ( भौंह ) गोल, कोमल, श्यामरंग, और धनुपके समान घूमेहुये हों वह कामक्रीडामें पतिको सुख देनेवाली होती है तथा भ्रुकुटीपर कोमलरोमोंसेभी यही फल है ॥ ९८ ॥

पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ॥
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवा ॥९९॥

जिस स्त्रीके भ्रुकुटीपर भूरे केश हों यद्वा छांटे केश हों मोटी हो सीधी हो दोनों भ्रुकुटी मिली हों अथवा लंबेकेशवाली हो यद्वा विना केशकी हो तो यह शुभलक्षण नहीं है वह स्त्री दुर्लक्षणा होती है. झुकी हुई भ्रुकुटीवालीभी ऐसेही होती है ॥ ९९ ॥

प्रलंबौ वर्त्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ॥
शिरालौ च कृशौ निंद्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ ॥१००॥

जिस स्त्रीके कान लंबे,गोलाकार (गिर्द) हो तो शुभफलदेनेवाले होते हैं जिनपर नशी (शिरा) बहुत प्रगट हों शुष्क ( माडे ) हों तथा फेणिकाकार न हों तो निन्द्य हैं अर्थात् अशुभफल देते हैं ॥१००॥

उन्नतस्त्र्यंगुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ॥
अर्द्धचंद्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः ॥१॥

मस्तक (माथा) तीन अंगुलप्रमाण ऊंचा हो कोमल हो और जिन नम्रभ्रुकुटीवालीस्त्रियोंका मस्तक अर्द्धचंद्रमाके आकारका हो तो वह सौभाग्य, नीरोगिता आदिसौख्य बढानेवाला होता है ॥१॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्या ललाटस्थलं
सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लंबायमानं यदि ॥
अद्धा देवरमाशु हंति नितरां रोमाकुलं रोगदं
रेखाहीनमनंगभंगजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥ २ ॥

जिस स्त्रीके (ललाट) माथेमें स्वस्तिक (भ्रू) चिह्न प्रकट हो अथवा बहुत स्वस्तिक हों तो वह स्त्री सौभाग्ययुक्त,उत्तम निर्मल भोग युक्त रहती है यदि वही चिह्न लंबा यद्वा लटकतासा हो तो वह स्त्री साक्षात् देवरका नाश करती है यदि मस्तिष्क रोमोंसे भरा हो तो रोगी रहै यदि रेखाओंसे रहित हो तो कामदेव संबंधी भंगता पंडितोंने सर्वदा जाननी ॥ २ ॥

करिपुंगवकुम्भसमान उत प्रवरोन्नतएवकदंबनिभः॥
इह मौलिरजस्रमिला विमला विविधा बहुधान्ययुता सुदृशः ॥ ३ ॥

जिन सुनेत्रा स्त्रियोंका माथा श्रेष्ठहाथीके गंडस्थलसमान अथवा क्रमसे ऊंचा कदंब सदृश हो तो उनके घरमें निरंतर निर्मललक्ष्मीका निवास रहे तथा अनेकप्रकारके बहुत अन्नादियोंकी समृद्धि रहे ॥ ३ ॥

पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसंगका-

रिका ॥ लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बंधकी निज-
कुलान्तकारिका ॥ ४ ॥

जिस कन्याका माथा ( ऊंचा ) चूलीसदृश पैना हो वह अपने मानको खोवै दुष्टजनोंकी संगतिकरे जिसका माथा लंबा हो वहभी सर्वनाश करे अपने कुलका नाशकरे यद्वा बांझिनी होवै ॥ ४ ॥

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाःसुवर्णावक्राकाराः
कुवलयदृशः किंचिदाकुञ्चिताग्राः ॥ भाग्यंसद्योदद
ति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः परम
लघवो वन्धवैधव्यदुःखम् ॥ ५ ॥

जिस कमलनयनीके शिरके केश भ्रमरसमूहके समान कृष्णवर्ण तथा चमकीले और मुडे हुये ( कुंचित ) तथा थोडे मुडे हुये अग्र भागवाले होवें तो ऐश्वर्य ( भाग्य ) देते हैं यदि छांटे हों पीले भूरेरंगके, मोटे, रूखे, हों अथवा अतिही छोटे हों तो वैधव्य बंधन आदि दुःख देते हैं ॥ ५ ॥

मशकोपि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति स मध्य-
गोभ्रुवोर्वा ॥ तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं
पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ ६ ॥

जिसके मस्तकमें (मसा ) चर्मविकारसे छोटा व्रण सरीखा हो अथवा वह भ्रुकुटीके बीचमें हो तो सुख, अतिधनी, अनेकभोग, और पतिपुत्रका सुख पाती है ॥ ६ ॥

मशकोपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एवमि-
ष्टदः स्यात ॥ हृदयं तिलकेन शोभितं लसनेनापि
च राज्यकारणम् ॥ ७ ॥

जिसके गालमें मसा लालरंगका हो तो इष्ट सिद्धि करता है. यदि हृदयमें तिल वा (लसन) लाल वा, नीला चिह्न हो तो राज्य देता है ॥ ७ ॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा ॥ जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥ ८ ॥

जिस सुभ्रु स्त्रीके स्तनमण्डलमें लाल रंगका तिल हो तो उसके चार कन्या और ३ पुत्र होवें यह पूर्व शास्त्रोंमें कहा है ॥ ८ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलांछनं शुभदृशस्तिलकं कमल प्रभम् ॥ प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विध वा तदनंतरम् ॥ ९ ॥

जिस सुभ्रु स्त्रीके वामस्तनमें लालरंगका लांछन हो वह प्रथम युवावस्थामें गुणवान् पंडित पुत्रको उत्पन्न करके विधवा हो जावै॥९॥

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशस्तिलकं गुददक्षिणे ॥ नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरंजनयेदलम् ॥ १० ॥

जिस सुंदर भ्रुकुटिवालीस्त्रीके छोटेभ्रमरोंके समूहसमान रंगका (कृष्ण) तिल गुद द्वारके दाहिने हो तो वह राजाकी स्त्री हो उसके घरमें लक्ष्मीका वास रहै तथा इसका पुत्रभी निश्चय राजाही होवै ॥ १० ॥

मशकोपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकांतिरर्थदायी ॥ अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ ११ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके नासिकाके अग्रभागमें लाल रंगका मसा हो तो धन देता है यदि वही मसा भ्रमरपक्ष यद्वा नवीन मेघके रूपको धारण किये हो तो पतिको मारती है विशेषतः व्यभिचारिणी होती है.॥ ११ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ॥
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥ १२ ॥

जिन नम्र भ्रुकुटिवाली स्त्रियोंके नाभीके नीचे तिल अथवा लांछन प्रकट होवै तो सौभाग्य जनाता है अथवा मसा हो तौ भी ऐसाही फल करता है ॥ १२ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कंठगतं तिलकं तदा ॥ श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशी मशकामललांछनैः ॥ १३ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके हाथके तलुवामें, गालमें, अथवा कंठमें यद्वा कानके नीचे, तिल हो तो वह स्त्री पतिकी प्यारी होवै ऐसेही मसा आदि निर्मल लांछनसे जानना ॥ १३ ॥

भालस्थेन त्रिशूलेन शंभुना निर्मितेन वै ॥
यस्याः सालीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम् ॥१४॥

जिस भाग्यवतीस्त्रीके माथेमें शिवजी कृपाकरके त्रिशूलाकार रेखाका चिन्ह करदें तो वह हजारहों ( आली ) सखियोंकी स्वामिनी होवे अर्थात् अतीव ऐश्वर्यवती होवे ॥ १४ ॥

किटकिटे तिलकं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने तु

रदावली ॥ महदमंगलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः ॥ १५ ॥

जिस सुदृशी स्त्रीके दोनों पंक्तिके दांत सोयेमें किट किट शब्द करें अर्थात् दांत परस्पर लड़ें तो उसके पतिको वही अमंगल होताहै यह विशेष दुर्लक्षण है शरीरके लक्षणोंके जाननेवाले पंडित लोगोंने कहा है ॥ १५ ॥

शकटवद्यदि योनिलल्लाटगो मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत् ॥ वरदुकूलमणिव्रजमंडिता क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ॥ १६ ॥

जिस मृगनयनीके माथेपर कोमल छोटे केशोंसे बना हुआ गाड़ी अथवा ( योनि ) भगकासा आकार हो तो वह श्रेष्ठवस्त्र, अनेक रत्नसमूहोंसे शोभित, अनेक ( सखी ) दासिकायोंसे युक्त राजरानी होवे ॥ १६ ॥

विलसति भगभाले दक्षिणावर्तरूपः कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसंघः ॥ नरपतिकुलभर्तुः कामिनीमानिनीनामिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात् ॥ १७ ॥

पूर्व श्लोकमें जो माथेपर बारीककेशोंसे भगका चिह्न कहाहै वह यदि ( दक्षिणावर्त्त ) दाहिनी ओरको घुमा हो तो वह मृगनयनी राजाधिराजकी (कामिनी) प्रिया होवे यौवनगर्विता स्त्रियोंमे "वदान्या" श्रेष्ठा होवे विशेषतः वही स्त्री धन्या है ॥ १७ ॥

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहंत्री कुरूपा पृष्ठावर्ता कठिनहृदया स्वामिहंत्री कुलघ्नी ॥ आवर्तौ वा भवत उदरे द्वाविहैकोपि यस्याः सापि त्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात् ॥ १८ ॥

बारीक कोमल रोमोंका पुंज होकर मुडा हुआ जलका आवर्त्त भौंरा जैसा कंठमें हो तो बहुतपतिकरनेवाली,पतिमारनेवाली,कुरूपा होवै पीठमें हो तो कठोरहृदय (कर्कशा, निर्दया) और भर्त्ताको मारनेवाली कुलका नाशकरनेवाली होतीहै जिसके पेटमें दो अथवा एक भी भौंरा हो वहभी स्त्रियोंके सामुद्रिकलक्षणजाननेवाले चतुरोंको दूरहीसे वर्जित करनी चाहिये ॥ १८ ॥

सीमंते च ललाटे वा कंठे वापि नतभ्रुवः ॥
लोम्नामावर्त्तको दक्षी वामी वैधव्यसूचकः ॥ १९ ॥

माथेके ऊपर केश प्रांतस्थानमें अथवा माथेमें अथवा कंठमें जिस सुभ्रुके (रोमावर्त्त) भौंरा दाहिने ओर अथवा बायें ओर घुमाववाला हो तो पतिव्रता, सौभाग्यवती और वाम भागमें यद्वा वामभागके ओर घुमाववाला हो तो वैधव्य जनानेवाला होताहै ॥ १९ ॥

याभिरेव वरदो महेश्वरः पूजितः किल पुरा व्रतादिभिः॥ पार्वती च परिपूजिता मुदा भक्तियोगविधिना सुवासिनी ॥ २० ॥ भूषितामलविभूषणादिभिः क्षालितं वपुरनेकधा पुरा ॥ तीर्थराजपयसा भवंति ता लक्षणैरिह शुभैः सुलक्षणाः ॥ २१ ॥

जिन स्त्रियोंने पूर्वजन्ममें व्रतादिकोंसे शिवजीका पूजन किया हो

तथा प्रसन्नतापूर्वक पार्वतीजीकाभी पूजन किया हो और भक्ति भावसे, योगसाधनविधिसे आराधन कियाहो ( सुवासिनी ) सौभाग्य वतीका पूजन उमाव्रतआदियोंसे किया हो उनको वस्त्र. भूषणादि अलंकार दियेहैं अथवा तीर्थराज प्रयागादियोंके जलसे शरीर अनेक वार प्रक्षालित किया हो वेउक्त शुभलक्षणोंसे युक्त लक्षित, सलक्षणा होती हैं अर्थात् जिन्होंने पहिले बडे पुण्य कियेहैं वही भाग्य, ऐश्वर्यवती होतीहैं उन्होंके उक्त शुभचिह्न, लक्षण होतेहैं॥२०॥२१॥

कृतं नहि तपो यया नगजया समाराधितो हरिर्नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम् ॥ धनं नहिधरामरे परममर्पितं तर्पितं गुरोः कलमिहांगना भवति सै व दीनांगना ॥ २२ ॥

जिस स्त्रीने पार्वतीजीका तप न किया, अथवा विष्णुका भले प्रकार आराधन नहीं किया- सूर्यके व्रत नलिये,तीर्थोंमें नाफिरे,ब्राह्मणोंको धन नहीं दिया गुरुका कुलतृप्त नहीं किया, वह इस संसारमें ( दीना ) दुःखदरिद्रयुक्त दुर्लक्षणों सहित होती है ॥ २२ ॥

यतः सुलक्षणा रेखायोपा हीनायुपं पतिम् ॥
दीर्घायुपं सुचरितैः प्रकरोति सुखास्पदम् ॥ २३ ॥

जिससे कि सुलक्षणरेखाओंवाली स्त्रीका पति अल्पायुभी हो तो यह अपने शुभलक्षणोंके प्रभावसे एवं अपने सुचरित्रोंसे उसे दीर्घायु तथा सुखका स्थान करदेती है ॥ २३ ॥

दीर्घायुपं पतिं हंति कुयोगैश्च कुलक्षणैः ॥
अतःसुलक्षणा कन्या परिणेया विचक्षणैः ॥ २४ ॥

जिसस्त्रीके कुयोग एवं कुलक्षण (उक्तलक्षणोंमें) से होतेहैं वे दी-

घायु पतिकोभी नाशकरके विधवा होती है तस्मात् जाननेवालों ने सुलक्षणा कन्यासे विवाह करना दुर्लक्षणासे नहीं करना ॥२४॥

कुलक्षणविलक्षिता यदिसुताऽत्र संजायते श्रुतिस्मृति पथानया परमसोमवारव्रतम्॥विधाय तदनंतरं रहसि कारयित्वाच्युतद्रुमेण हरिणा कृती शुभघटेन पाणिग्रहम् ॥ २५ ॥

जिसके घरमें कुलक्षणोंसे युक्ता कन्या उत्पन्न होवे उसने वेद तथा धर्मशास्त्रके अनुसार सोमवारका उत्तम व्रत कन्यासे करावना इसके उपरांत एकांतमें विष्णुप्रतिमा तथा ( पीपल ) अश्वत्थवृक्ष घटमें स्थापन करके उनके साथ विवाह विधिसे विवाह करना२५॥

शुभेहनि कुमारिकाकरनिपीडनं कारयेद्वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषायते।।इदं तु बहुसंमतं मुनिवरेण गीतं पुनः प्रमाणपटुनाहृतं प्रियविनोदकंदप्रदम् ॥ २६ ॥

ऐसे प्रतिमाविवाह वा घटविवाह करनेके उपरांत शुभदिन मुहूर्त्तमें उस कन्याका विवाह चिरजीवी ग्रहवाले वरके साथ विधिसे करना इसमें पुनर्विवाहका दोष नहीं होता और दुर्लक्षण एवं वैधव्य योगोंका फल निराकरण होजाताहै. यह विधि बहुत आचार्य्योंके संमत है. श्रेष्ठमुनिने वर कन्याके प्रसन्नताके निमित्त यह विधि अनेकाचार्य्य संमतसे कही है ॥ २६ ॥

कुलक्षणैः कुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा ॥
तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥ २७ ॥

सामुद्रिकोक्तकुलक्षणोंसे यद्वा जातकोक्तकुयोगोंसे लक्षित

जो कन्या हो उसका पूर्वोक्तविधिसे प्रतिमाविवाह करना इससे सुहाग बढ़ता है दुर्लक्षण दुर्योगोंका उपाय यही है ॥ २७ ॥

जीवनाथविदुषात्रकामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे मया ॥ स्कंदकुंभभवयोर्विवादजं व्यासगीतमखिलं प्रकाशितम् ॥ १२८ ॥

इति श्रीजीवनाथविरचिते भावकुतूहले सामुद्रिकाध्यायःदशमः ॥ १० ॥

ग्रंथकर्त्ता आचार्य पंडित जीवनाथ कहता है कि मैंने बुधजनोंके मनप्रसन्न करनेके लिये इतने स्त्री लक्षण स्कंद और अगस्तिके प्रश्नोत्तर व्यास देवजीके कहेअनुसार समस्त प्रकाशित किया है १२८॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

---

अथ शयनादिद्वादशावस्थाविचारः ।

प्रथमंशयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ॥ नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमनैस्ततः ॥ १ ॥ सभायां च ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ॥ नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्थानभःसदाम् ॥ २ ॥

अब ग्रहोंकी अवस्था कहते हैं- शयन १ उपवेशन २ नेत्रपाणि ३ प्रकाश ४ गमन ५ आगमन ६ सभा ७ आगम ८ भोजन ९ नृत्य लिप्सा १० कौतुक ११ निद्रा १२ ये अवस्थाओंके नाम हैं ॥ १ ॥ २ ॥

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्या गुणिता ग्रहाणाम् ॥ निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युतार्कतष्टाशयनाद्यवस्था ॥ ३ ॥

जिस नक्षत्रमें ग्रह हो उसकी अश्विन्यादिगणनासे जो संख्याहो उसे

ग्रहकी संख्यासे गुनके पुनः ग्रहकी अंशसंख्यासे गुनाकर अपनी इष्टघटी, जन्मनक्षत्र, लग्नकेसंख्याओंसे युक्तकरके बारहसे भागलेना शेष जोरहै वह अवस्था जाननी जैसे ( १ ) शेषमें शयनावस्था ( २ ) में उपवेशन ( ३ ) नेत्रपाणि इत्यादि ॥ ३ ॥

शेषं शेषहतं स्वरांकसहितं तष्टं पुनर्भानुना संक्षेपं गुणशेषितं खलु भवेद्दृष्ट्याद्यवस्था त्रिधा ॥ पंचद्विद्विगुणाक्षरामगुणवेदाः क्षेपकांका रवेः प्राचीनैर्यवनादिभिः समुदितास्तेमी निबद्धा मया ॥४॥

उक्त विधिसे जो शेष रहे उसे उसीसे गुनाकर स्वरांक जोड़ना ( यह स्वरांक आगे लिखेंगे ) पुनः ( १२ )से शेष करके जिस ग्रह की अवस्था अभीष्टहै उसका ( वक्ष्यमाण ) क्षेपकांक जोडना तदनंतर ( ३ )से शेष करके एक ( १ )शेष रहे तो दृष्टि, ( २ ) रहें तो चेष्टा ( ० ) शेष रहे तो विचेष्टा, जाननी और सूर्यके ( ५ ) चंद्रमाके ( २ ) मंगलके ( २ ) बुधके ( ३ )बृहस्पतिके ( ५ ) शुक्रके ( ३ ) शनिके ( ३ ) राहुके ( ४ )क्षेपकांकहैं इतने अंक यवनादि प्राचीनआचार्य्योंके कहेहैं मैंने यहां लिखेहैं उपपत्ति इनकी ज्ञात नहीं यह ग्रंथ कर्त्ता कहता है ॥ ४ ॥

स्वर शास्त्रमते स्वरांकचक्रम्।

| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|
| अ | इ | उ | ए | ओ |
| क | ख | ग | घ | च |
| छ | ज | झ | ट | ठ |
| ड | ढ | त | थ | द |
| ध | न | प | फ | ब |
| भ | म | य | र | ल |
| व | श | प | स | ह |

ऊपर जो स्वरांक कहा वह इस चक्रस्थ क्रमसे लेना जैसे अका १ इके २ उके ३ एके ४ ओके ५ नामके ( प्रधान ) आदि अक्षरमें जो स्वर हो उसका अंकलेते हैं नाम प्रमाणभी 'वहीहै जिस नामके पुकारनेसे सोता मनुष्य जाग उठे.

अवस्थाका उदाहरण ॥ किसीका जन्म पौषशुक्लपंचमी शुक्रवार मिथुनलग्न धनिष्ठानक्षत्रके चतुर्थचरणमें है-इष्टघटी२६।०है.सूर्य मूलनक्षत्रमें चंद्रमा धनिष्ठामें मंगल श्रवणमें बुध पूर्वाषाढामें बृहस्पति आर्द्रामें शुक्र पूर्वाषाढामें शनि मूलमें राहु पूर्वाफाल्गुनीमें केतु पूर्वा भाद्रपदामें है सूर्य ७ अंश चंद्रमा ४ मंगल ११ बुध २६ बृहस्पति ११ शुक्र २५ शनि ७ राहु केतु २३ अंशपरहैं प्रथम सूर्य मूलनक्षत्रमें है इसकी संख्या (१९) सूर्यकी संख्या (१) सेगुना १९ धनके ७ अंश पर होनेसे ७ से गुनादिया १३३ इष्ट २६ जन्मनक्षत्र २३ लग्न मिथुन ३ इनको जोड गुणित संख्यामें मिलाया १८५ रवि १२ से शेष किया शेष ५ शयनादिगणनासे पाचवीं गमनावस्था सूर्यकी हुई. पुनः प्रसिद्धनाम गुणानंद आद्याक्षरोत्तरवर्ती स्वर उकारके अधो पंक्तिमें संख्या ३ पूर्वागतशेष ५ से शेष ५ गुनादिया २५ स्वरांक ३ जोडके २८ पुनः १२ से शेष किया शेष ४ सूर्यक्षेपक ५ जोडनेसे ९ तीन ३ से शेष किया शेष० रहा. इससे सूर्यकी गमनावस्थामें विचेष्टाअवस्था हुई एवंप्रकारसे चंद्रमाकी उपवेशावस्थामें विचेष्टा, मंगल प्रकाशमें विचेष्टा, बुधआगममें दृष्टि बृहस्पति नृत्यलिप्सामें विचेष्टा, शुक्र प्रकाशमें दृष्टि, शनि गमनमें विचेष्टा राहु निद्रामें दृष्टि, केतु सभामें चेष्टा ॥

## अथावस्था फलानि ।

त्रिकोणं वा कर्मण्यपि नयनपाणौ दिनमणेः फलं शस्तं ज्ञेयं मदनसदने नंदनपदे ॥ प्रकाशे मार्तण्डे मृतिपदमपत्यं जनिमतां तथा जायायातिव्ययमदनमाने च जनने ॥ १ ॥ पुण्यबाधाकरः पुण्यभे भोजने कौतुके वैरिभे वैरिहन्ता रविः ॥ सप्तमे पंच

मे तत्रगो वा भवेदंगनापुत्रहा लिंगरोगप्रदः ॥ २ ॥

अब अवस्थाओंके फल कहते हैं प्रथम सूर्यके फल हैं कि सूर्य त्रिकोण ५।९ वा १० भावमें नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो शुभ फल देताहै जो ७।८ भावमें प्रकाशावस्थामें हो तो जन्मियोंके पुत्रहानि होवे तथा स्त्रीहानि हो ऐसेही फल १२।७।१० स्थानोंमें भी उक्तअवस्थाके जन्ममें जानना १ यदि ९ भावमें भोजनावस्थामें हो तो पुण्यमें बाधा डालता है कौतुकावस्थामें छठा हो तो वैरिहन्ता होताहै यदि इसी अवस्थामें ७।८ भावमें हो तो स्त्रीपुत्र हानि और लिंगमें रोग करता है ॥ १ ॥ २ ॥

चंद्रस्य द्वादशावस्था फलंशुक्लदले शुभम् ॥
अशुभंकृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥

चंद्रमाके बारहोंअवस्थाओंका फल शुक्लपक्षमें शुभ कृष्णपक्षमें अशुभ सर्वत्र उत्तम ज्योतिषियोंने जानना ॥ ३ ॥

मदननंदनगोवनिनंदनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयं॥
प्रथमतः कुरते रिपुणेक्षितोरिपुगृहेकरभंगमनंगतः४
यदियुतः शनिनापि च राहुणा शिरसि रोगकरो धरणीसुतः॥तनुगतः शयने नयने गदं वितनुते नितरा क्षतमंगिनाम् ॥५॥ अंगारकोंगे यदि नेत्रपाणौकरोत्यनंगातिशयेनभंगम्॥ भुजंगदंतक्षतपावकांबुभयं नगे हानिमिहांगनायाः ॥ ६ ॥ प्रकाशने पंचमसप्तमस्थः सुतं निहंत्याशु निहंति वामाम्॥ पापान्वितः पापखगांतरालेकुकार्मिणां केतुवरंकरोति ॥ ७ ॥

मंगलके अवस्थाफल यहैं कि भौम शयनावस्थामें सप्तम भाव-

25201

में हो तो स्त्रीहानि पंचम हो तो पुत्रहानि करता है यदि शत्रुभावमें शत्रुदृष्ट उक्तअवस्थामें हो तो कामदेवसंबंधीक्लेश यद्वा कामदेवव्याजसे हाथ टूट जावे ४ यदि शनिसे वा राहुसे युक्तभी हो तो शिरमें रोग करताहै तथा निरंतर शरीरियोंको हानिही देताहै॥५॥यदि मंगल लग्नका नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो कामदेवके संबंधी कार्यसे शरीरके अंगभंग करताहै. सर्पभय, दंतरोग, अग्नि जलकी भय होवें स्त्रीआदिगृहस्थका सुख न होवे ॥६॥ यदि प्रकाशावस्थामें ५।७ भावमें हो तो पुत्रस्त्रीकी हानि करता है यहां पंचममें पुत्र सप्तममें स्त्रीहानि जानना यदि पापयुक्त, पापग्रहोंके बीचभी हो तो कुकर्मियोंमें श्रेष्ठ "पापध्वज" पापियोंमें श्रेष्ठ ध्वजा जैसा करताहै॥७॥

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः ॥
सभायामेव कन्यानामाधिक्यं मदने सुते ॥ ८ ॥

बुध नेत्रपाणिअवस्थामें पंचम हो तो पुत्रोंकी हानि होवे. सभावस्थामें हो तो पुत्रप्राप्ति होवे अन्यअवस्थाओंमें ५ । ७ भावोंमें हो तो कन्या बहुत, पुत्र थोडे होवें ॥ ८ ॥

भवति देवगुरौ यदि भोजनेलनुगते मनुजो हि धनुर्द्धरः ॥ नवमपंचमभे धनवर्जितो भवति पापयुतो विसुतो नरः ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें लग्नका हो तो मनुष्य धनुषधारी होवे यदि उक्त अवस्थामें९।५ भावमें हो तो धनरहित और पापयुक्त भी हो तो पुत्ररहित होवे ॥ ९ ॥

तनुगृहे मदने दशमे सितो नयनपाणिगतो यदि जन्मनि ॥ शुभमतीव फलं तनुते बलं दशनभंगमनंगविवर्धनम् ॥ १० ॥

शुक्र १।७।१० भावोंमें नेत्रपाणिअवस्थामें जन्मा हो तो अतीव शुभफल देताहै बलवान् करताहै परंतु दांतोंका भंग और कामदेवकी वृद्धिभी होती है ॥ १० ॥

यत्र कुत्र स्थितो मंदो जन्मकाले विशेषतः ॥
अवस्थानामसदृशं वितनोति शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

सभी समयमें विशेषतः जन्मसमयमें शनि किसीस्थानमें हो तो अवस्थाको नामसदृश फल देताहै ॥ ११ ॥

नवमे मदने वापि राहुराहुरिहांगिनां॥ महांतो निद्रितो वश्यं पुण्यक्षेत्रनिवासिताम्॥१२॥द्वितीयेद्वादशे वापि लाभे वा सिंहिकासुते॥वसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत् ॥ १३ ॥ निजक्षेत्रे तुंगे कविबुधगृहे मित्रभवने स्ववर्गे सद्वर्गे तमसि शयने जन्मसमये ॥ फलं पूर्णं प्राहुः कथितभवनादन्यभवने तदादुष्टप्रांचस्तदिह शिखिनो राहुवदिदम् ॥ १४ ॥

राहु ९।७ भावोंमें जिन शरीरियोंकी निद्रावस्थामें हो तो उनको अवश्य पुण्य क्षेत्रमें निवास मिले यह बडे आचार्य कहते हैं॥ यदि राहु शयनावस्थामें २।१२।११ भावमें हो तो वह मनुष्य निर्द्धन रहकर पृथ्वी भ्रमण करे ॥ राहु यदि अपनी राशि ३।६ अपने उच्च ३ अथवा शुक्र २।७ बुध ३ के राशियोंमें हो अथवा मित्र राशिमें हो यद्वा अपने वा मित्रके अंशादियोंमें शयनावस्थामें जन्मकालका हो तो फल पूर्ण देताहै उक्त भवनोंसे अन्य गृहोंमें हो तो दुष्ट जनोंका पूज्य होवे राहुके समान केतुकाभी फल जानना ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

## अथ विशेषफलानि ।

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडितः॥तदा जाया-विनाशः स्याच्छुभयोगे क्षणान्नहि॥ १५ ॥ निद्रितो रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे ॥ भार्या विनश्यति क्षिप्रं विधिना रक्षितापि चेत्॥ १६ ॥ शुभयोगेक्षणा-देका विनश्यति परा नहि ॥ शुभाशुभदृशाभार्य्या कष्टयुक्ता नृणां भवेत् ॥ १७ ॥

विशेषफल अवस्थाओंके कहते हैं कि यदि कोई पापग्रह निद्राअवस्थामें सप्तमस्थानमें पापपीडित हो तो स्त्रीनाश होवे यदि उसपर शुभग्रहकी दृष्टिहो वा शुभग्रहसे युक्त हो तो स्त्रीकष्ट भोगकर बचजायगी ॥ १५ ॥ निद्राअवस्थावाला कोईभी ग्रह छटेभावमें शत्रुग्रहसहित वा उससे दृष्टहो. अथवा ऐसाही सप्तम स्थानमें हो तो शीघ्रही स्त्री नष्टहोवे यदि विधाताभी रक्षाकरने आवें तौ भी नहीं रहै ॥ १६ ॥ यदि ऐसे ग्रहपर शुभग्रहकी दृष्टिहो अथवा शुभयुक्त हो तो एक स्त्री मरे दूसरीसे गृहस्थसुख होवे यदि शुभ पाप दोनहूंसे दृष्ट वा युक्त हो तो स्त्री कष्टयुक्त रहै ॥ १७ ॥

## पुत्रसुखयोगः ।

अपत्यभावे यदि तुंगगेहे निजालये पापयुतेक्षित-श्चेत् ॥ निद्रागतोपत्यविनाशकारी शुभेक्षितश्चैकसु तस्यहंता ॥ १८ ॥

यदि कोई ग्रह पंचमभावमें अपने उच्च वा अपनी राशिका हो-कर निद्रा अवस्थामें हो तथा पाप ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो संतानका

नाश करता है उस ग्रहपर शुभ ग्रहकीभी दृष्टि हो तो एक पुत्रकी हानि करता है औरकी नहीं ॥ १८ ॥

अपमृत्युयोगः।

राहुणा सहितौ यस्य निधनस्थौ कुजार्कजौ ॥
अपमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥ १९ ॥
निधनेपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः ॥
तदा मृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात् ॥ २० ॥

जिसके अष्टमस्थानमें राहुसहित मंगल शनि हों इनमेंसे कोई निद्रावस्थामें हो तो उसकी अल्पमृत्यु शस्त्रके कटनेसे होवे इसमें संदेह नहीं ॥ १९ ॥ जिसके अष्टमभावमें शुभग्रहभी पाप अथवा शत्रुग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो उसका मृत्यु संग्राममें शस्त्रसे होवे यहांभी संबंधसे निद्रावस्था विचारणीय है ॥ २० ॥

अथारिकृततीर्थकृतमृत्युयोगौ।

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः शयानो वा मृत्युं व्रजति रिपुकोपेन मनुजः॥ शुभैर्दृष्टो युक्तो निजपतियुतो वांतसमये नरो गंगामेत्य व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥ २१ ॥

यदि कोई ग्रह पापयुक्त अष्टमस्थानमें शयनावस्थामें हो तो शत्रुके कोपसे मृत्यु पावे और वही ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो अथवा अष्टमेश अष्टम हो तो मृत्यु समयमें वह मनुष्य गंगापायकर विष्णुकी ( सायुज्यपद ) मुक्तिपद पावे ॥ २१ ॥

अथ पुण्यक्षेत्रलाभयोगः।

यदा पश्येदंगं तनुभवननाथोऽष्टमपतिर्मूर्ति धर्माधी-

शो जनुषि च तपःस्थानमथवा ॥ शुभाभ्यामाक्रांतं नवमभवनं पापरहितं वरक्षेत्रं प्राप्य व्रजति मनुजो मोक्षपदवीम् ॥ २२ ॥

इति श्रीभावकुतूहलेस्थानवशेनावस्थाफल-
कथनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नको, अष्टमेश अष्टमभावको और नवमेश नवम भावको देखे अथवा इनमेंसे एकभी अपने स्थानका देखनेवाला हो तथा शुभग्रहोंसे युक्त पापोंसे रहित नवम हो तो मरण समयमें ( उत्तम क्षेत्र ) पुण्य स्थान पायके मुक्तिपदको प्राप्त होवे ॥ २२ ॥

इति महीधरकृतायां भावकुतूहलभाषायामेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

---

## अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलानि ।
### ( तत्रादौ सूर्यस्य )

मंदाग्निरोगी बहुधा नराणां स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्तकोपः॥ व्रणं गुदे शूलमुरःप्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते॥१॥

शयनादि १२ अवस्थाओंके प्रत्येक फल कहते हैं कि यदि सूर्य शयनावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा ( मंदाग्नि ) क्षुधामंद पाचन शक्ति न्यून रहे पैर स्थूल हों पित्तका विशेपतः कोप रहे गुदामें व्रण होवे हृदयमें शूल रहे ॥ १ ॥

दरिद्रता भारविहारशाली विवादविद्याभिरतो नरःस्यात्॥कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तःसूर्येयदाचेदुपवेशनस्थे२

जो सूर्य उपवेशनावस्थामें हो तो दरिद्री रहे पराया भार ढोने-

वाला सर्वदा रहै कलहही विद्या जाने और वह मनुष्य (कठोरचित्त) निर्दयो होवे वित्त उसकी नष्ट होवे ॥ २ ॥

नरः सदानंदधरो विवेकी परोपकारी बलवित्तयुक्तः महासुखी राजकृपाभिमानी दिवाधिनाथे यदि नेत्रपाणौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका सूर्य्य नेत्रपाणि अवस्थामें हो वह सर्वदा आनंदमें रहे विवेकवाला होवे पराया उपकारकरे बलवान् एवं धनवान् रहे बडा सुख भोगता रहे राजकृपासे अभिमान युक्त रहे ॥ ३ ॥

उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता बहुपुण्यकर्त्ता ॥ महाबली सुंदररूपशाली प्रकाशने जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ४ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य प्रकाशनावस्थामें हो वह ( उदार ) देनेवाला चित्तका होवे धनादिसे परिपूर्ण ( संपन्न ) रहे सभामें चातुर्य्य सहित वार्ता करे बहुतसे पुण्य करे बडा बलवान् होवे सुंदररूपवान् होवे ॥ ४ ॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली सदालसी शोधनवर्जितश्च ॥ भयातुरः कोपपरो विशेषाद्दिवाधिनाथे गमने मनुष्यः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य गमनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य परदेश रहनेवाला होवे निश्चय सर्वदा अनेक दुःखोंसे युक्त रहे (अलसी) निरुद्यमी होवे धनसे रहित रहे भयसे आतुर रहे विशेषतासे ( कोप ) गुस्सा युक्त रहे ॥ ५ ॥

परदाररतो जनतारहितो बहुधागमने गमना

भिरुचिः ॥ कृपणःखलता कुशलो मलिनो दिवसा-
धिपतौ मनुजः कुमतिः ॥ ६ ॥

सूर्य जिसके जन्ममें आगमनावस्थामें हो वह पराई स्त्रियोंमें तत्पर रहै बहुत मनुष्योंकी संगतिसे रहित (अकेला) रहे बाहुल्य तासे (गमन) सफरकी इच्छा किया करे (कृपण) मूंजी होवै दुष्टतामें निपुण और मलिनभी होवै ॥ ६ ॥

सभागते हिते नरःपरोपकारतत्परः सदार्थरत्नपूरि
तो दिवाकरे गुणाकरः॥वसुंधरानवांवरा लयान्वितो
महावली विचित्रमित्रवत्सलः कृपाकलाधरःपरः॥७॥

जिस मनुष्यका सूर्य सभावस्थामें हो वह पराये उपकार करनेमें तत्पर रहे सर्वदा धन एवं रत्नोंसे भरा रहे गुणोंकी खान होवे(पृथ्वी) जमीनका मालक होवे नवीन घर और वस्त्रोंसे युक्त रहे वडा बल-वान् होवै अनेक प्रकारके मित्र रक्खे उनका प्रिय होवे दयावान् होवे परम कृपाकी कली उसके हृदयमें जागृत रहे ॥ ७ ॥

क्षोभितो रिपुगणैः सदानरश्चंचलः खलमतिः कृश-
स्तथा ॥ धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे दिनपतौ
यदा तदा ॥ ८ ॥

सूर्य जिसका आगमअवस्थामें हो वह शत्रुसे कंपायमान रहे, चंचल होवै कुटिलबुद्धि, दुष्टता करनेवाला होवै शरीर कृश रहे सत्कर्मधर्मसे रहित रहे मदसे उछलता रहे ॥ ८ ॥

सदांगसंधिवेदना परांगना धनक्षयो वलक्षयःपदे
पदे यदा तदा हि भोजने ॥ असत्पथाच्छिरोन्यथा

तदा वृथान्नभोजनं रवावसत्कथारतिः कुमार्ग-गामिनी मतिः ॥ ९ ॥

सूर्य भोजनावस्थामें जिसका हो उसके सर्वदा शरीरकी संधियोंमें पीडा रहे परस्त्रीके संसर्गसे धन एवं बलका क्षय पैर पैरपर अर्थात् एवं कुकर्मसे शिरमें रोग रहे खायापिया व्यर्थ जावे यद्वा अन्न पचे नहीं अनिष्टवार्तामें रुचि रहे कुमार्गचलनेकी बुद्धि होवे ॥९॥

विज्ञलोकैः सदा मंडितः पंडितः काव्यविद्यानवद्य प्रलापान्वितः ॥ राजपूज्यो धरामंडले सर्वदा नृत्य-लिप्सागते पद्मिनीनायके ॥ १० ॥

जिसका सूर्य नृत्यलिप्सावस्थामें हो वह सर्वदा विद्या जानने वाले लोगोंसे शोभित रहे पंडित होवे काव्यविद्या जाने बड़ी वाचाल शक्ति होवे राजासे पूजा (आदर) पावे पृथ्विमेंभी पूज्य होवे ॥१०॥

सर्वदानंदधर्ता जनो ज्ञानवान् यज्ञकर्ता धराधीश सद्मस्थितः ॥ पद्मबंधावरातीभपंचाननः काव्यवि-द्याप्रलापीमुदा कौतुके ॥ ११ ॥

सूर्य जिसका कौतुकावस्थामें हो वह सर्वदा प्रसन्नताको धारण करताहै ज्ञानवान्, यज्ञ करनेवाला, राजद्वारमें रहनेवाला होवे शत्रुरूपी हाथियोंके ऊपर सिंहसमान प्रतापी होवे काव्यविद्या जानने वाला अतिवाक् शक्तिवाला मनुष्य होवे ॥ ११ ॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयु-ग्मे ॥ रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानिः कृतिधार्थनाशः ॥ १२ ॥

जिसका सूर्य निद्रावस्थामें हो उसके नेत्र नींदसे भरे हुये रुधि-

रके समान लालरंगके रहें विदेशमें निवास पावे और स्त्रीहानि एवं कितनेही वार धननाश होवे ॥ १२ ॥

## अथ चंद्रस्य ।

जनुः काले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते ॥
मानी शीतप्रधानीच कामी वित्तविनाशकः ॥ १ ॥

जिसके जन्म समयमें चंद्रमा शयनावस्थामें हो वह (मानी) इज्जतवाला होवे शरीरमें शीतप्रधान रहे अतिकामी होवे धनका नाश अपने हाथसे किसी व्यसनमें करे ॥ १ ॥

रोगार्दितो मंदमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः ॥ अपायकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

जिसका चंद्रमा उपवेशनावस्थामें हो वह रोगसे पीडित रहे (मंद) जडबुद्धि होवे विशेषतः धनसे हीन रहे कठोरस्वभाव होवे परायानाशकरे परायेधन लूटनेवालाभी वह मनुष्य होवे ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत् ॥
अनल्पजल्पको धूर्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥ ३ ॥

चंद्रमा जिसका नेत्रपाणिअवस्थामें हो वह महारोगी राजरोग आदि बडे रोगवाला मनुष्य होवे तथा बहुत वाचाल धूर्त होवे और सर्वदा कुकर्मोंमें तत्पर रहे ॥ ३ ॥

यदा राकानाथे गतवति विकाशं च जनने विकाशं संसारे विमलगुणराशेरवनिपात् ॥ नवाशालामाला-करितुरगलक्ष्मा परिवृता विभूषा योषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम् ॥ ४ ॥

यदि जन्ममें चंद्रमा विकाशावस्थामें हो तो मनुष्य संसारमें निर्मलगुणोंके समूहसे ( विकसित ) प्रफुल्लित रहे राजासे नवीन मंदिर, रत्न आदियोंकी माला, हाथी घोडे धनसंयुक्तभूषण एवं स्त्रियोंसे नित्य सुख पावे तीर्थयात्रा करे ॥ ४ ॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरा भवेत् ॥ सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानो बलक्षपक्षे गमने भयातुरः ॥ ५ ॥

उक्त अवस्थाका वा अन्य चंद्रमा यदि कृष्णपक्षका हो तो विशेषतः मनुष्य ( कठोर ) अतिक्रूर स्वभाव होवे सर्वदा नेत्ररोगसे पीडित रहे शुक्लपक्षका होतो गमनमें भयमान् रहे ॥ ५ ॥

विधवागमने मानी पादरोगी नरो भवेत् ॥
गुप्तपापरतो दीनो मतितोषविवर्जितः ॥ ६ ॥

चंद्रमा आगमनावस्थामें हो तो ( मानी ) इज्जत यद्वा गर्ववाला होवै पैरोंमें कुछ प्रकार रोग रहे गुप्तपाप करनेमें तत्पर रहे दुर्बल, दरिद्री होवे बुद्धि और संतोषसे वर्जित रहे ॥ ६ ॥

सकलजनवदान्यो राजराजेंद्रमान्यो रतिपतिसमकांतिःशांतिकृत्कामिनीनाम् ॥ सपदि सदसि याते चारुबिंबे शशांके भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥ ७ ॥

चंद्रमा सभावस्थामें हो तो मनुष्य समस्त मनुष्योंमें (वदान्य) चतुर होवे राजा तथा चक्रवर्तियोंका माननीय होवे कामदेवके समान सुंदरकांति होवे युवास्त्रियोंको कामक्रीडामें शांति करनेवाला होवे समस्तधनोंसे संपन्न रहे प्रेमकला जाननेवाला होवे गुणोंको पहिचाने इतने पूरे फल पूर्ण चंद्रमाके हैं क्षीणमें पूरे नहीं होते ॥ ७ ॥

विधवागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः ॥
कृष्णपक्षे द्विभार्यःस्याद्रोगी दुष्टतरो नरः ॥ ८ ॥

चंद्रमा आगमनावस्थामें हो तो अतिबोलनेवाला धर्मसे परिपूर्ण होवै यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा उक्त अवस्थामें हो तो दो स्त्री होवैं रोगी रहै अतिदुष्ट स्वभाव होवै ॥ ८ ॥

भोजने जनुषि पूर्णचंद्रमा मानयानजनतासुखं नृणाम् ॥ आतनोति वनितासुतासुखं सर्वमेव न सिते तरे शुभम् ॥ ९ ॥

जन्मकालमें जिनका चंद्रमा भोजनावस्थामें पूर्णमंडल हो तो मानवाला होवै सवारी तथा मनुष्योंका सुख उन मनुष्योंको होवै तथा स्त्रीसुख कन्यासुखभी होवै परंतु इतने फल पूर्णचंद्रमाके हैं क्षीणमें शुभफल नहीं होते ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते चंद्रे सबले बलवान्नरः ॥
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत् ॥१०॥

चंद्रमा नृत्यलिप्सा अवस्थामें ( बलसहित ) पूर्णमंडल हो तो मनुष्य बलवान् होवै ( गीत ) गायन जाने शृंगारादिरसोंकोभी जाने कृष्णपक्षका हो तो पाप करनेवाला होवै ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति चंद्रे भवति नृपत्वं वा धनपत्वं॥
कामकलासु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वं ११॥

चंद्रमा कौतुकावस्थामें होतो मनुष्य राजा वा राजाके तुल्य होवै अथवा धनका मालिक होवै और ( कामकला ) रति क्रीडामें सर्वदा चातुर्य रक्खे वारांगनाओंके साथ रतिक्रीडा, रमणमें चातुर्यता पावै ॥ ११ ॥

निद्रागतं जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुते महत्त्वम् ॥ यदा गुणाः संचितवित्तनाशः शिवालये रौति विचित्रमुच्चैः ॥ १२ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें चंद्रमा निद्रावस्थामें पूर्ण मंडल यद्वा बृहस्पतियुक्त हो तो (महत्त्व) बडप्पन पावे कृष्णपक्षका हो तो संचय किया हुआ धनादिका नाश होवे गुण औगुण होवें. दुःखसे (शिवालय) देवमंदिर यद्वा स्यारोंके स्थान, जंगलमें अथवा श्मशानमें अनेकप्रकारके स्वरोंसे ऊंचा रोदनकरे अर्थात् शोक, दरिद्रसे ग्रस्त होवे ॥ १२ ॥

## अथ भौमस्य फलम् ।

शयने वसुधापुत्रे जनुरंगे जनो भवेत् ॥
बहुना कंडुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥ १ ॥

जन्ममें मंगल जिसका शयनावस्थामें हो उसके अंगोंमें बहुतसी (कंडू) खुजली रहाकरे विशेषतः (दद्रु) दादभी होवे ॥ १ ॥

बली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरांप्रगल्भः॥ धनेन पूर्णो निजधर्महीनो धरासुते चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

मंगल उपवेशनावस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् होवे पापकर्ममें तत्पर, झूंठ बोलनेवाला, निरंतर वाग्वादचतुर, धनसे परिपूर्ण, धर्महीन रहे ॥ २ ॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते ॥
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता ॥ ३ ॥

यदि मंगल नेत्रपाणिअवस्थाके लग्नमें हो तो मनुष्योंको सर्वदा दरिद्रता रहे अन्यभावमें हो तो नगरके स्वामि होवे ॥ ३ ॥

प्रकाशो गुणस्यापि वासः प्रवासे धराधीशभर्तुः सदा मानवृद्धिः ॥ सुते भूसुतं पुत्रकान्तावियोगो युते राहुणा दारुणा वा निपातः ॥ ४ ॥

मंगल प्रकाशावस्थामें हो तो परदेशमें नित्य निवास होवे राजासे सर्वदा मान बढतारहै यदि उक्तअवस्थाका मंगल पंचम भावमें हो तो स्त्री पुत्रका ( वियोग ) विछोह पावे यदि उसके साथ राहुभी हो तो वृक्षसे गिरपडे ॥ ४ ॥

गमने गमनं कुरुतेनुदिनं व्रणजालभयं वनिताकलहम् ॥ बहुदद्रुककंडुभयं बहुधा वसुधातनयोवसुहानिमरेः ॥ ५ ॥

मंगल गमनावस्थामें हो तो प्रतिदिन ( गमन ) सफर करताहै अनेकप्रकारके ( व्रण ) फोडा, फुन्सीका भय, स्त्रीकलह करता है और दाद, खुजलीभी बहुत रहते हैं. शत्रुसे धनहानि होती है॥५॥

आगमने गुणशालीनामणिमाली कराल करवाली ॥ गजगंता रिपुहंता परिजनसंतापहारको भौमे ॥ ६ ॥

मंगल आगमनावस्थामें हो तो पुरुष मणियोंकी माला पहिने तीक्ष्ण खड्गोंकी पांति उसके आगे चले हाथीकी सवारीकरे शत्रुको मारे दुःखी मनुष्योंका संताप हरण करनेवाला होवे ॥ ६ ॥

तुंगे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः कोणे भूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान् ॥ अंतेपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगे वश्यं

राजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः ॥ ७ ॥

मंगल सभावस्थामें उच्चराशिका यद्वा केंद्रका हो तो युद्ध विद्या की समस्त युक्तिजाने तथा धर्मकाध्वज अर्थात् बड़ा धर्मात्मा और धनवान्, धनका स्वामी होवे यदि ९ । ५ स्थानमें हो तो पुरुष ( विद्याहीन ) मूर्ख होवे बारहवें स्थानमें हो तो स्त्री, पुत्र, मित्रोंसे रहित रहे उक्तस्थानोंसे अन्यमें हो तो अवश्य राजाके सभाका पंडित होवे तथा बहुत धनवान्, मानवाला दानी भी होवे ॥ ७ ॥

आगमे भवति भूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः॥
कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेककातरमतिः कुसंगमी ॥ ८ ॥

मंगल आगमावस्थामें हो तो धर्म कर्म से रहित रोगसे आतुर रहे. कानके नीचे बडा शूलरोग रहै कायर तथा कुसंगी होवै ॥ ८ ॥

भोजने मिष्टभोजी च जनने सबले कुजे ॥
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥ ९ ॥

जन्ममें बलवान् मंगल भोजनावस्थामें हो तो मिष्टान्न खाने वाला होवे तथा सर्वदा नीचकर्म करे ( मान ) अहंकार वा इज्जतसे रहितरहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिंदिराराशिरा-
याति भूमेः पतेः ॥ स्वर्णरत्नप्रवालैः सदा मंडिता
वासशाला विशाला नराणांभवेत् ॥ १० ॥

मंगल नृत्यलिप्साअवस्थामें हो तो मनुष्योंको राजासे बहुत ( लक्ष्मी )धन आवे तथा रहनेका गृह सोना, रत्न, मूंगा आदियोंसे शोभित और बहुतभारी होवे ॥ १० ॥

कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः ॥ उच्चगे नृपतिगेहपंडितो मंडितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥ ११ ॥

मंगल कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य (खेल) तमासा करनेवाला वा उसमें प्रेम रखनेवाला होवे मित्र पुत्रोंसे परिपूर्ण रहे यदि मंगल उच्चकाभी हो तो राजाके दर्बारका पंडित होवे और बहुत गुणवान् पंडित श्रेष्ठोंसे शोभित रहें ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः ॥
धूर्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीडितः ॥ १२ ॥

मंगल निद्रावस्थामें हो तो क्रोधी होवे बुद्धि तथा धनसे वर्जित रहे धूर्त होवे धर्मसे भ्रष्ट रहे और रोगसे पीडित रहे ॥ १२ ॥

## अथ बुधावस्थाफलानि ।

क्षुधातुरोभवेदंगे खंजो गुंजानिभेक्षणः ॥
जन्मभे लंपटो धूर्तो मनुजः शयने बुधे ॥ १ ॥

बुध शयनावस्थामें लग्नका हो तो भूँखसे सर्वदा आतुर रहे गंजा शिर होवे नेत्र लाल गुंजाके समान होवे ( लंपट ) झूठा बकवाद करनेवाला और धूर्तभी होवे ॥ १ ॥

शशांकपुत्रे जनुरंगगेहे यदोपवेशे गुणराशिपूर्णः ॥ पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः ॥ २ ॥

बुध जन्ममें लग्नका उपवेशावस्थामें हो तो समस्त गुणोंके समूहसे पूरित रहे पापयुक्त हो अथवा पापदृष्ट हो तो दरिद्री होवे यदि मित्रराशि वा उच्चराशिमें हो तो मनुष्य सुखी रहे ॥ २ ॥

विद्याविवेकरहितो हिततोयहीनो मानी जनो भवति चंद्रसुतेक्षिपाणौ ॥ पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्यः ॥ ३ ॥

बुध नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य विद्या एवं ( विवेक ) सदसज्ज्ञानसे रहित होवे भलाई किसीकी नकरे संतोषभी न रक्खे गर्ववाला होवे यदि उक्त बुध पंचम भावमें हों तो स्त्री पुत्रके सुखसे हीन रहे कन्या संतति होवे राजद्वारका पंडित तथा श्रेष्ठ होवे॥३॥

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता विकासने चंद्रसुते मनुष्यः ॥ अनेकविद्यार्णवपारगंता विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता ॥ ४ ॥

बुध विकासनावस्थामें हो तो मनुष्य (उदार) देनेवाला, दयावान्, निश्चयसे पुण्य करनेवाला और अनेक विद्याओंके समुद्रके पार पहुँचनेवाला विवेक ज्ञानसे परिपूर्ण दुष्टोंके ( गर्व ) घमंडके तोडनेवाला होवे ॥ ४ ॥

गमनागमने भवतो गमने बहुधा वसुधावसुधाधिपतः ॥ भवने च विचित्रमलं रमया विदिन्दुश्च जनुःसमये नितराम् ॥ ५ ॥

बुध गमनावस्थामें हो तो नित्य ( गमागम ) जाना आना होता रहे बहुतायत करके राजासे भूमि मिले तथा जन्ममें उक्त बुध मनुष्यके घरमें अनेक प्रकारकी शोभा, लक्ष्मी निरंतर करता है ॥५॥

सपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले सदसि धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यवृद्धिः ॥ धनपतिसमतावा भूपता मंत्रिता वा हरिहरपदभक्तिः सात्विकी मुक्तिरद्धा ॥६॥

बुध जन्मकालका सभावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा धनकी संपन्नता रहे पुण्यकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे धनमें कुबेर समानता पावे अथवा ( राजत्व ) हाकमी मिले यद्वा ( मंत्रिता ) वजीरी मिले और विष्णु एवं शिवकी भक्तिसे साक्षात् सात्विकी मुक्ति होवे ६

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा चंद्रजे भवति हीनसेवया ॥ अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता बालिका भवति मानदायिका ॥ ७ ॥

यदि मनुष्योंके जन्ममें बुध आगमावस्थामें हो तो नीचजनकी सेवा करनेसे कार्यसिद्धि होवे तथा दोपुत्र होवे और एक कन्या अति सुलक्षणा सन्मान देनेवाली होवे ॥ ७ ॥

भोजने चंद्रजे जन्मकाले यदा जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः ॥ राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मतेरंगसंगा न जाया न माया सुखम् ॥ ८ ॥

बुध भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्योंको सर्वदा ( विवाद ) कलहसे धनहानि, कार्यहानि होवें राजाके भयसे ( कृशत्व ) माडापन आवे बुद्धि चंचल रहे स्थिर न रहे तथा स्त्रीका सुख और धनका सुखभी न होवे ॥ ८ ॥

नृत्यलिप्सागते चंद्रजे मानवो मानयानप्रवालव्रजैः संयुतः ॥ मित्रपुत्रप्रतापैः सभापंडितः पापभेवा रवा मारतेलंपटः ॥ ९ ॥

जिसका बुध नृत्यलिप्सा अवस्थामें जन्मका हो वह मनुष्य(मान) इज्जत सवारी, मूंगा आदिरत्नसमूहसे युक्तरहे तथा मित्र, पुत्र, संयुक्त रहे प्रतापवान् होवे सभामें ( पंडित ) चतुर होवे यदि पाप राशि

नीच शत्रु आदिमें हो तो (वारांगना) पतुरियाके साथ रतिक्रीडा- में लंपट (व्यसनी) होवे ॥ ९ ॥

कौतुके चंद्रजे जन्मकाले नृणामंगभे गीतविद्यान- वद्या भवेत् ॥ सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥ १० ॥

जिन मनुष्योंके जन्ममें बुध कौतुकावस्थामें लग्नका हो उन- को अनर्गल गायन विद्या आवे यदि उक्त बुध ७।८ भावमें हो तो वारांगनासे प्रीति होवे. नवम भावमें हो तो सारा जन्म पुण्य करते बीते अंतमें सद्गति (मुक्ति) होवे ॥ १० ॥

निद्राश्रितं चंद्रसुतेन मुद्रासुखं सदा व्याधिसमा- धियोगः ॥ सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो निजेन वादोधनमाननाशः ॥ ११ ॥

बुध निद्रावस्थामें हो तो सर्वदा मोहर, रुपया आदिके कृत्यसे सुख मिले और रोगकी समाधि सर्वदा रहे, भ्रातृपक्षसे (विकलता) चिंतारहे बडा संताप रहे अपने मनुष्योंसे कलह होतारहै, धन एवं मानका नाश होवे ॥ ११ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम्।

वचसामधिपे तुजनुः समये शयने बलवानपि ही- नरवः ॥ अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः सुतरामरि- भीतियुतो मनुजः ॥ १ ॥

जन्म समयमें बृहस्पति शयनावस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् हुयेमेंभी (स्वरहीन) अल्प आवाजवाला होवे. शरीर अति गौरव- र्ण, ठोडी लंबी होवे शत्रुकी भय निरंतर बनी रहे ॥ १ ॥

उपवेशं गतवति यदि जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः॥ क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजंघाकरव्रणयुक्तः॥२॥

बृहस्पति यदि उपवेशावस्थामें हो तो बडा वाचाल बडे ( गर्व ) घमंडसे भरा होवै. तथा राजा वा राजतुल्य होवे. परंतु शत्रुसे सर्वदा संतापयुक्त रहे और पैर, जंघा, मुख, हाथोंमें व्रण फोडा आदि रोग रहा करे ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ गते देवराजार्चिते रोगयुक्तो वरार्थश्रिया ऽशोभितः॥गीतनृत्यप्रियः कामुकः सर्वदा गौरवर्णो विवर्णोद्भवप्रीतियुक् ॥ ३ ॥

बृहस्पति नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य रोग[illegible] श्रेष्ठ धन, एवं शोभासे रहित रहे. गीत नाच रंगको प्रियमाने [illegible]कामी सर्वदा रहे. गोरारंग शरीरका होवे कुरूपोंसे अथवा ( वर्णबाह्य ) विजातीय मनुष्योंसे प्रीति रक्खे ॥ ३ ॥

गुणानामानंदं विमलसुखकंदं वितनुते सदा तेजः पुंजंव्रजपतिनिकुंजं प्रतिगमम् ॥ प्रकाशं चेदुच्चैर्द्दुतमुपगतो वासवगुरुर्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वंतनुभृताम् ॥ ४ ॥

बृहस्पति प्रकाशावस्थामें हो तो मनुष्यको गुणोंके आनंद वाला, निर्मल सुखका भाजन करताहै. सर्वदा तेजका पुंज सदृश बनाये रहताहै श्रीकृष्णके समान ( कुंज ) वन उपवनोंमें विहार करताहै अथवा भक्तिसे भगवान्के भवनमें प्राप्त होताहै. समस्त लोकोंमें श्रेष्ठता पावै. समृद्धिमें कुबेरके समान होताहै. इतने पूरेफल मनुष्योंको बृहस्पतिके प्रकाशावस्था उच्चादिगतिमें होते हैं ॥ ४ ॥

साहसी भवति मानवः सदा मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा ॥ पंडितो विविधवित्तमंडितो वेदविद्यदि गुरौ गमंगते ॥ ५ ॥

बृहस्पति गमनावस्थामें हो तो मनुष्य सर्वदा साहसी तथा मित्र, पुत्र, सुखसे परिपूर्ण रहे पंडित होवे अनेक प्रकारके धनोंसे शोभित रहे ॥ ५ ॥

आगमने जनतावरजाया यस्य जनुःसमये हरिमाया ॥ मुंचति नालमिहालयमद्धा देवगुरौ परितः परिबद्धा ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो उसके बहुत मनुष्य रहें स्त्री श्रेष्ठ मिले उसके घरको साक्षात् लक्ष्मी कदापि नछोड़े चारों ओरसे बँधी हुई जैसी रहे ॥ ६ ॥

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाग्रः सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः॥ गजतुरगरथाढ्योदेवताधीशपूज्ये जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवःस्यात् ७

बृहस्पति जन्ममें सभावस्थामें हो तो बृहस्पतिके समान ( शास्त्रवक्ता ) पंडित होवे ( श्वेत ) कांतिमान् मोतियोंसे युक्त रहे. धन, मणि, सवारी, आदियोंसे सर्वदा परिपूर्ण रहे. हाथी, घोडे, रथोंसे युक्त रहे और वह मनुष्य अनेक विद्याओंसे(गर्वित) भराहुआ रहे ॥ ७ ॥

नानावाहनमानयानपटली सौख्यं गुरावागमे भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ॥ क्षोणीपालसमानतानवरतं चातीव हृद्या मतिः काव्यानंदरतिः सदा हितगतिःसर्वत्र मानोन्नतिः ८॥

बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो अनेक प्रकार(वाहन)हाथी घोडे रथ ( यान ) पालकी आदियोंके समूहका सुख होवे तथा ( सेवक ) नौकर, पुत्र, स्त्री, मित्रोंका सुख मिले विद्या अतुल आवे राजाके समान ऐश्वर्यमें सर्वदा रहे अति रमणीय बुद्धि होवे काव्यरसके आनंदमें प्रेमरहे सर्वदा हितकारी चालरहे सर्वत्र मानकी उन्नती होती रहे ॥ ८ ॥

भोजने भवति देवता गुरौ यस्य तस्य सततं सुभोजनम् ॥ नैव मुंचति रमालयं तदा वाजिवारणरथैश्च मंडितम् ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें जिसका हो उसको उत्तम पदार्थ भोजनको मिलते रहें तथा उसके घरको लक्ष्मी कदापि नछोडे हाथी घोडे रथोंसे घर शोभित रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवंद्ये सदा धर्मवित् ॥ तंत्रविज्ञो बुधैर्मंडितःपंडितः शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥ १० ॥

बृहस्पति नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो मनुष्य राजमानवाला,धनवान,सर्वदा धर्म जाननेवाला तंत्रशास्त्र, वा युक्तियाँ जाननेवाला पंडितोंसे युक्तरहे आपभी पंडित होवे ( शब्दविद्या ) न्याय व्याकरणादि निपुण तत्काल उपस्थितिवाला होवे ॥ १० ॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनः सदा निजान्वयाब्जभास्करः कृपाकलाधरःसुखी ॥ निर्लिपराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा युतो महाबली धराधिपेन्द्रपद्ममंडितः ॥ ११ ॥

बृहस्पति कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य ( खेल ) तमासा करने

वाला होवे सर्वदा बडे धनसे युक्त रहे अपनेवंशरूपी कमलके विकाशनमें सूर्यसदृश होवे कृपाकला, दया धारण करनेवाला होवे सर्वदा सुखी रहे नम्र पुत्रसे यद्वा पुत्र, भूमि और नम्रतासे युक्त होवे बडा बलवान शरीर होवे राजद्वारको शोभादेनेवाला होवे ॥ ११ ॥

गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि ॥
दरिद्रता परिक्रांतं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ १२ ॥

जिसका बृहस्पति निद्रावस्थामें हो तो उसको समस्त कामोंमें मूर्खता आवै दरिद्रतासे दबारहे. पुण्यभी उसके घरमें न रहे ॥ १२ ॥

## अथ शुक्रस्य फलम् ।

जनो बलीयानपि दंतरोगी भृगौ महारोषसमन्वितः स्यात् ॥ धनेन हीनः शयनं प्रयाते वारांगनासंगमलंपटश्च ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र शयनावस्थामें हो वह मनुष्य बलवान होवे बडे क्रोध ( गुस्सा ) वाला तथा धनसे रहित रहे दांतोंमें रोग रहा करे (वारांगना) वेश्याओंके संग करनेमें ( लंपट ) व्यसनी होवै॥ १॥

यदिभवेदुशना उपवेशने नवमणिव्रजकांचनभूषणैः॥ सुखमजस्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि मानसमुन्नतिः ॥ २ ॥

यदि शुक्र उपवेशनावस्थामें हो तो नवीन मणियोंके समूह एवं सुवर्णके भूषणोंके सौख्य वारंवार रहे शत्रुओंकाभी वारंवार क्षय होवे राजासेभी आदरपूर्वक मानकी उन्नति होवे ॥ २ ॥

नेत्रपाणिं गते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य तस्य ध्रुवम् ॥ नेत्रपातो धनानामलं चान्यभे वासशाला विशाला भवेत्सर्वदा ॥ ३ ॥

यदि शुक्र नेत्रपाणिअवस्थामें लग्न, सप्तम, दशममें हो तो उस मनुष्यका नेत्र गिरे तथा निश्चय धनभी क्षय होवे यदि अन्य भावोंमें हो तो उसके निवासका गृह बहुत बडा सर्वदा रहे ॥ ३ ॥

स्वालये तुंगभे मित्रभे भार्गवे तुंगमातंगलीला- कलापी जनः ॥ भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते का- व्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥ ४ ॥

प्रकाशावस्थाका शुक्र जिस मनुष्यके स्वराशि २।७ उच्चराशि ( १२ ) अथवा मित्रराशिमें हो वह उन्मत्त हाथियोंके लीला( क्री- डा ) का प्रेमी होवै तथा राजाके समान ऐश्वर्यवान् होवै काव्य शृंगारआदि कलाओंमें निपुण,खेल,नाच,गायन जाननेवाला होवै४॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति ॥
अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥ ५ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र गमनावस्थामें हो उसकी माता शीघ्रही मरजाती है. तथा शत्रुका उसको ऐसा भय रहे कि कभी अपने मनुष्योंमें रहे कभी उनसे पृथक् होनापड़े ॥ ५ ॥

आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः ॥
स तु तीर्थभ्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगीच ६॥

शुक्र आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य बहुत धनका स्वामि होवे तथा तीर्थयात्रा करनेवाला, नित्य ( उत्साही ) उद्यमी, होवै और हात पैरोंमें रोगभी रहे ॥ ६ ॥

अनायासेनालं सपदि महसा याति सहसा प्रगल्भ- त्वं राज्ञः सदासिगुणविज्ञः किल कवौ॥सभायामाया ते रिपुनिवहंहता धनपतेः समत्वं वा दंतावलतुरग- गंता नरवरः॥ ७ ॥

यदि शुक्र सभावस्थामें (तेजमान) उदयका, बलवान् हो तो अकस्मात् ही चतुरता आवे राजाके सभामें (प्रगल्भ) चतुराईसे बात करनी आवे गुणोंका जानने पहचाननेवाला होवे तेजस्वीहोवे शत्रुके समूहको मारनेवाला होवे धनमें कुबेरकी तुल्यता रक्खे अथवा हाथी घोडोंकी सवारीमें चलनेवाला, मनुष्योंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ७ ॥

आगमे भार्गवे नागमो जन्मिनामर्थराशेररातेरतीव क्षतिः ॥ पुत्रपातो निपाते जनानामपि व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ ८ ॥

शुक्र आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको धनका आगम न होवै अर्थात् दरिद्री रहे शत्रुसे बहुत हानि होवे. बहुतसे मनुष्योंके समुदाय रक्षक हुयेमेंभी पुत्रका शोक मिले रोगकी भय रहे प्यारे स्त्रीके भोगकी हानि होवे ॥ ८ ॥

क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्यादनेकधारातिभयार्दितश्च ॥ कवौ यदा भोजनगे युवत्यां महाधनी पंडितमंडितश्च ॥ ९ ॥

शुक्र भोजनावस्थामें हो तो क्षुधासे सर्वदा आतुर रहे अर्थात् भूंखसहन नकरसके रोगसे पीडित रहे, अनेक प्रकार शत्रुसे दुःखी रहे स्त्रीसहित यद्वा स्त्रीके प्रतापसे बडा धनवान्होवे पंडित जनोंसे सुशोभित रहे ॥ ९ ॥

काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः सर्वदा नृत्यलिप्सा गते भार्गवे ॥ शंखवीणामृदंगादिगानध्वनिव्रातनै पुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥ १० ॥

शुक्र नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो अनर्गल काव्यविद्या आवे बुद्धि सर्वदा (मनोहर) रमणीय रहे शंख वीणा मृदंग आदि बाजे

एवं गायनकी ( ध्वनि ) शब्दोंमें निपुणता होवे धन इसका सर्वदा बढताही रहे ॥ १० ॥

कौतुकभवनंगतवति शुक्रे शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वम् ॥
हृद्या विद्या भवति च पुंसः पद्मानिवसति पद्मोदरतः ११

शुक्र कौतुकावस्थामें हो तो इंद्रके समान ऐश्वर्य, पृथ्वीमें श्रेष्ठत्व पावे सभामें बडप्पन मिले तथा उस पुरुषको रमणीयविद्या आवे लक्ष्मी उसके घरमें आदरपूर्वक निवास करे सर्वतः शोभायुक्त रहे यद्वा लक्ष्मी कमलमें रहती हो वह कमलका वास छोडकर इस मनुष्यके घरमें निवास करे ॥ ११ ॥

परसेवारतो नित्यं निद्रामुपगते कवौ ॥
परनिंदापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ॥ १२ ॥

निद्रावस्थामें शुक्र हो तो सर्वदा पराया सेवक रहे पराई निंदा करनेमें तत्पर होवे वीरता रक्खे अति बोलनेवाला ( वाचाल ) होवे तथा सारी पृथ्वीमें फिरता रहे ॥ १२ ॥

अथ शनेः प्रत्यवस्थाफलानि ।

क्षुत्पिपासा परिक्रांतो विश्रांतःशयने शनौ ॥
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥ १ ॥

शनि जिसका शयनावस्थामें हो वह सर्वदा भूंख, प्याससे दवा-रहे पहिली अवस्था ( छोटी उमर ) में रोगी रहे पीछे भाग्य वंतोंमें श्रेष्ठ होवे ॥ १ ॥

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे करालकारातिजनानुतप्तः ॥ अपायशाली खलु दद्रुमाली नरोभिमानी नृपदंडयुक्तः ॥ २ ॥

शनि उपवेशनमें हो तो वडे प्रचंड शत्रुजनोंसे (संतप्त ) दुःखी

रहे सर्वथा धनादिका नाश करता है तथा निश्चयहै कि उसके शरीरमें (दद्रु) दाद बहुत होवै और वह मनुष्य बडा (अभिमानी) घमंडखोर होवे राजासे दंड वारंवार पावे ॥ २ ॥

नयनपाणिगते रविनंदने परमया रमया परया युतः ॥ नृपतितो हिततो मतितोषकृद्बहुकलाकलितोविमलोक्तिकृत् ॥ ३ ॥

शनि नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो अतिसुंदर, परम रमणीय पराईस्त्रीसे युक्त रहे राजासे प्रेमपूर्वक प्रसन्नता पावै अनेक (कला) विद्या वा तरकीबें जाने निर्मल वाणी बोले ॥ ३ ॥

नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोदमाली ॥ प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपानुरक्तो हरपादभक्तः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका शनि प्रकाशावस्थामें हो वह अनेक प्रकारके गुणोंके समूहको जाने कुछ (ग्राम) गांव तथा धन उसके आधीनतामें रहे सर्वदा सुबुद्धिके विनोदवाला होवे सुंदरकांति होवे दयावान् एवं श्रीभगवानके चरणोंका भक्त रहे ॥ ४ ॥

क्तः ॥ भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमनाऽपि यदा-श्रयभावम् ॥ ६ ॥

शनि आगमावस्थामें जिसका हो वह पैरोंके रोगकी भयसे युक्त रहे पुत्र, स्त्रीके सुखसे हीन रहे (दीन) दुर्बल मनकरके सर्वदा पृथ्वी विचरता रहे पराये चरणोंके आश्रयमें रहे ॥ ६ ॥

रत्नावली कांचनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं व्रजति प्रमोदम् ॥ सभागते भानुसुते नितांतं नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः ॥ ७ ॥

शनि सभावस्थामें हो तो रत्नोंकी (पंक्ति) लड़ियाँ, सुवर्ण, मोतियोंके समूहोंसे सर्वदा आनंदित रहे तथा सभी समयमें मनुष्य नम्रतासे परिपूर्ण होवे तथा बडा तेजस्वी होवे ॥ ७ ॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबंधुतनये यदा तदा ॥ मंदमेव गमनं धरातले याचनाविरहिता मतिः सदा ॥ ८ ॥

यदि शनि आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको वारंवार रोग होते रहें संसारमें (मंदगति) ढीलीचाल चले तथा सर्वदा बुद्धि (याचना) माँगनेसे रहित रहे ॥ ८ ॥

संगते जनुपि भानुनंदने भोजने भवति भोजनं रसैः ॥ संयुतं नयनमंदताज्ञतामोहतापपरिताऽपिता मतिः ॥ ९ ॥

- शनि भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्यको भोजन उत्तम षड्रसोंसे मिले नेत्रोंकी दृष्टि मंद (अल्प) होवे अज्ञान एवं चिन्ता संतापोंसे बुद्धि संतप्त रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते मंदे धर्मात्मावित्तपूरितः ॥
राजपूज्योनरो धीरो महावीरो रणांगणे ॥ १० ॥

शनि जिसका नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो वह धर्मात्मा तथा धनसे परिपूर्ण होवै राजासे (पूजा) आदर पावै बडा धैर्यवान् होवै और रणभूमिमें बडी वीरता करनेवाला होवै ॥ १० ॥

भवति कौतुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसु-
पूरितः ॥ अतिसुखी सुमुखीसुखपूरितः कवितयाम
लया कलया नरः ॥ ११ ॥

शनि कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य भूमि एवं धनसे संपन्नरहे सर्व प्रकार अतिसुखी होवै सुरूपास्त्रीके सुखसे पूर्णरहे निर्मल कविताकी कलासेभी पूर्णरहे. कविता जाने एवं कवितारसज्ञ होवै ११॥

निद्रागते वासरनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः ॥
पराक्रमी चंडविपक्षहंता सुवारकांतारतिरीतिविज्ञः १२

शनि निद्राअवस्थामें हो तो मनुष्य सर्वदा धनवान् होवै उत्तम गुणोंसे युक्तरहे पराक्रम करनेवाला होवै बडे प्रचंडशत्रुओंकोभी मारडाले सुंदर वारांगनाओंके साथ (रति) क्रीडाकी विधि जाने १२

## अथ राहोः प्रत्यवस्थाफलानि।

गदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं
प्रयाते ॥ वृपेथ युग्मेपि च कन्यकायामजे समाजो
धनधान्यराशेः ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें राहु शयनावस्थामें हों परंतु वृप, मिथुन, कन्या, मेपराशिमें हो तो अन्न, धनकी (राशि) समुदाय मिलते रहें उपलक्षणसे अन्य राशियोंमें इतना फल नहीं देता॥ १ ॥

उपवेशनमिह गतवतिराहौ दद्रुगणेनजनः परितप्तः ॥ राजसमाजयुतो वहुमानी वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात् ॥ २ ॥

जिसका राहु उपवेशनावस्थामें हो वह अनेकप्रकार ( दद्रु ) दादआदियोंसे संतप्तरहे तथा बडे मानवाला, राजाकी सभामें वैठनेवाला होवै परंतु धनके सुखसे सर्वदा रहितरहे ॥ २ ॥

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीडिते ॥
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ॥ ३ ॥

राहु नेत्रपाणिअवस्थासे हो तो नेत्र सर्वदा रोगसे पीडितरहे और सब शत्रु, चोर, आदि दुष्टजनोंका भय, धनका क्षय होवै ॥३॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभानृणां धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदाविदामगाविह ॥ धराधिपाधिकारिता यशोलता तता भवेन्नवीननीरदाकृतिर्विदेशतोमहोन्नतिः ॥ ४ ॥

राहुकी स्थिति प्रकाशनावस्थामें ( शुभासन ) १।२।३।६ राशियोंमें हो तो मनुष्योंको उत्तम धनकी ( उन्नति ) वृद्धिहोवै ऐसेही सद्गुणोंकी वृद्धि होवै सर्वदा पांडित्य,चातुर्यता होकर राज्याधिकारिता मिले यशरूपीलता बहुत फैले नवीन ( मेघ ) बादलोंकीसी आकृति होवै परदेशसे वडी उन्नति मिले ॥ ४ ॥

गमने च यदाराहौ वहुसंतानवान्नरः ॥
पंडितो धनवान् दाताराजपूज्यो नरो भवेत् ॥ ५ ॥

राहु गमनावस्थामें हो तो मनुष्य वहुतसंतानवाला होवै पंडित, तथा धनवान्, उदार और राजपूज्यभी होवै ॥ ५ ॥

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः ॥
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥ ६ ॥

राहु आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य क्रोधी होवै सर्वदा बुद्धि एवं धनसे रहित रहे ( कुटिल ) अनारी होवै ( कृपण ) मूंजी होवै और सर्वप्रकारसे अतिकामी होवै ॥ ६ ॥

सभागते यदा राहौ पंडितः कृपणो नरः ॥
नानागुणपरिक्रांतो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥ ७ ॥

राहु सभावस्थामें हो तो मनुष्य पंडित, अनेकगुणोंसे युक्त, एवं धन सुखसे युक्तरहे परंतु ( कृपण ) मूंजी होवै ॥ ७ ॥

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलं सदारातिभीत्या महत् ॥ बंधुवादो जनानां निपातो भवेद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥ ८ ॥

राहु आगमावस्थामें जिसका हो वह सर्वदा शत्रुके भयसे व्याकुल रहे जातभाइयोंमें कलह रहे कुटुंबमें मनुष्य न रहे धनकी हानि होवै मूर्खता रहे. शरीर ( कृश ) माडाभी रहे ॥ ८ ॥

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् ॥
मंदबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका राहु भोजनावस्थामें हो वह भोजनसे विकल रहे अर्थात् भोजनप्राप्ति कठिनतासे होवै बुद्धि जड होवै कार्य करनेमें डरे अलसी होवै स्त्रीपुत्रोंके सुखसे वर्जितरहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम् ॥
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्द्धनधर्मक्षयो नृणाम् ॥ १० ॥

राहु नृत्यलिप्साअवस्थामें हो तो मनुष्योंको वडे वडे रोगवढें नेत्रोंमें रोगरहे शत्रुकी भयहोवै धनका और धर्मका क्षय होवै॥१०॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् ॥
परदाररतो नित्यं परवित्तापहारकः ॥ ११ ॥

राहु कौतुकावस्थामें जिस मनुष्यका हो वह (स्थान) गृह भूमिसे रहितरहे सर्वदा पराईस्त्रीसे रमितरहे पराये धनका हरण करनेवाला होवै ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः ॥
कांता संतानवान् धीरो गर्वितो बहुवित्तवान् ॥१२॥

राहुनिद्रावस्थामें हो तो मनुष्य अनेक गुणोंके समाजसे युक्त होवै. स्त्रीपुत्रवाला होवै धैर्यवान् ( गर्वित ) घमंडखोर और बहुत धनवान् होवै ॥ १२ ॥

अथ केतोरवस्थाफलानि ।

मेषे वृषेथ वा युग्मे कन्यायां शयनंगते ॥
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्द्धनम् ॥ १ ॥

केतु, मेष,वृषभ,मिथुन,कन्या, राशिमेंसे किसीमें शयनावस्थामें हो तो धनकी समृद्धि होवै. अन्य राशियोंमें हो तो रोगवढे ॥ १ ॥

उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्द्धनम् ॥
अरिव्रातनृपव्यालचौरशंकासमंततः ॥ २ ॥

केतु उपवेशावस्थामें हो तो (दद्रु) दादका रोग बढे शत्रुसमूह, राजा, सर्प, चोरोंसे भयकी शंका होवै ॥ २ ॥

नेत्रपाणिं गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते ॥ दुष्टसर्पा-

दिर्भीतिश्च रिपुराजकुलादपि ॥ वित्तं विनाशमा-
याति मतिश्च चपला भवेत् ॥ ३ ॥

केतु नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो नेत्रोंमें रोग रहे दुष्टजंतु सर्पादियोंका भय होवै तथा शत्रुसे, राजकुलसे भय होवै धनका नाश होवै बुद्धि चंचल रहे ॥ ३ ॥

प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः ॥
राजमानं यशोलाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

केतु प्रकाशावस्थामें हो तो अन्न धनकी वृद्धि होवै राजासे मान मिले यश बढे विदेशमें सौख्य होवे ॥ ४ ॥

गमने तु यदा केतौ पुत्रसंपत्तिमान्नरः ॥
पंडितो राजमानी च धनेन परिपूरितः ॥ ५ ॥

केतु गमनावस्थामें हो तो पुत्रोंकी संपत्तिवाला मनुष्य होवै तथा पंडित होवै राजासे मान पावे धनसे परिपूर्ण रहे ॥ ५ ॥

केतावागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान् ॥
कामी धीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः ॥ ६ ॥

केतु आगमावस्थामें हो तो पुरुषकी दुष्टबुद्धि होवै लक्ष्मी रहित रहे कामी होवै सद्बुद्धि तथा धर्मकर्मसे हीन रहे क्रोधी और ठगुआ होवै ॥ ६ ॥

सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः ॥
कृपणो लंपटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः ॥ ७ ॥

केतु सभावस्थामें हो तो बडा वाचाल होवे (गर्वित) बडा मिजाजी होवै ( कृपण ) सूम होवै झूँठ बोलनेवाला, ठगोरी करनेवालाभी होवै धूर्तता करे विद्यामें भी निपुण होवै ॥ ७ ॥

यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ॥
बंधुवादरतो दुष्टो रिपुरोगनिपीडितः ॥ ८ ॥

केतु यदि आगमनावस्थामें हो तो पाप कर्मोंका (ध्वजा) श्रेष्ठ वह मनुष्य होवे बंधुजनोंमें विवाद करता रहै दुष्टता करे शत्रुसे तथा रोगसे पीडित रहे ॥ ८ ॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः ॥
दरिद्रो रोगसंतप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ॥ ९ ॥

केतु भोजनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य (क्षुधा) भूंखसे पीडित रहै दरिद्री तथा रोगसे संतप्त रहकर पृथ्वीमें भ्रमण करे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत् ॥
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्त्तोनर्थकरो नरः ॥ १० ॥

केतु नृत्यलिप्साअवस्थामें हो तो मनुष्य रोगसे सर्वदा (विकल) कायल रहे आँख उसकी देखनेमें कांपे स्थिर दृष्टि न होवे किसीसे हारे नहीं धूर्त होवे और अनर्थके काम करे ॥ १० ॥

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः ॥
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम् ॥ ११ ॥

केतु कौतुकावस्थामें जिसका हो वह नटिनीके (संभोग) रतिको प्रियमाने (स्थानभ्रष्ट) घरसे निकल जावे दुष्ट आचार करे दरिद्री होकर पृथ्वीमें भ्रमण करे ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत् ॥
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम् ॥ १२ ॥

इति श्रीजीवनाथविरचिते भावकुतूहले
शयनाद्यवस्थाविचाराध्यायः ॥ १२ ॥

केतु निद्रावस्थामें हो तो अन्न तथा धनका सुख मनुष्योंको बहुत होवै अनेक प्रकार गुणोंके चर्चासे खुसीसे दिन कटें ॥ १२ ॥

इति महीधरकृतायां भावकुतूहलभाषायां ग्रहाणां शयनाद्यवस्थाविचाराध्यायः ॥ १२ ॥

---

## अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाफलानि ।

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः ॥ मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥ १ ॥ फलं तु किंचिद्धि तनोति बालश्चार्द्धं कुमारः प्रयतेन पुंसाम् ॥ युवा समग्रं खचरोथ वृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥ २ ॥

अब बालादि अवस्था कहते हैं कि विषम राशिके ६ अंश प्रथमकेमें ग्रह हो तो बाल अवस्था, ७ से १२ अंशपर्यंत कुमार, १३ से १८ लौं युवा, १९ से २४ पर्यंत वृद्ध, २५ से ३० पर्यंत मृत्यु अवस्था होती है. समराशिमें ग्रह हो तो विपरीत अर्थात् प्रथम ६ अंश पर्यंत मृत्यु, ७ से १२ पर्यंत वृद्ध, १३ से १८ पर्यंत युवा, १९ से २४ लौं कुमार, २५ से ३० पर्यंत बाल अवस्था होती है ॥ १ ॥ इनके फल येहैं कि, बाल अवस्थावाला ग्रह अपना पूर्वोक्त फल थोडा देता है कुमारमें आधा, युवामें समस्त, वृद्धमें अनिष्ट फल और मृत्युवाला मृत्युही देता है ॥ २ ॥

## अथ दीप्ताद्यवस्थाः ।

उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत् ॥
शांतः शोभनवर्गस्थोऽतिशस्तो दीप्तदीधितिः ॥ ३ ॥
लुप्तोस्ते नीचभे दीनः पीडितः पापशत्रुभे ॥
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदतः ॥ ४ ॥

अब अन्य प्रकार दीप्तादि अवस्था कहते हैं कि जो ग्रह अपने उच्च राशिमें है वह दीप्त अवस्थाका एवं अपनी राशि स्वस्थ, मित्रकी राशिमें हर्षित, शुभग्रहके राशि अंशादियोंमें शांत, उदयका शस्त अस्तंगत लुप्त,नीचराशि वा दीन पापराशि वा शत्रुराशिमें पीडित होता है ऐसे दीप्तादि भेदोंमें ग्रहोंके ८ भाव हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥

## अथ दीप्तग्रहफलम् ।

दीप्ते मदोन्मत्तगजेंद्रगंता सदारिहंता वरतीर्थगंता ॥ कांतो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदीप्तवेषोमनुजोमहीपः

दीप्त ग्रहका फल वह है कि मनुष्य मत्तवाले हाथीकी सवारीमें चलने वाला, सर्वदा वैरिको मारनेवाला, श्रेष्ठतीर्थोंमें जानेवाला, सुरूप बुद्धिमान, सर्वदा यशवाला, कांतिमान् राजा करताहै ॥ ५ ॥

स्वस्थे गुणागारजवालयानामुपार्ज्जको वैरिविनाश कर्त्ता ॥ नरोप्युदारो नृपपूजितः स्याद्विशालकीर्तिः कमनीयमूर्तिः ॥ ६ ॥

स्वस्थग्रहवाला मनुष्य गुणोंके भंडार, गृह, धन, सवारी आदियोंका ( उपार्जक ) कमानेवाला, तथा शत्रुका विनाश करनेवाला उदार, राजपूजित,बडी कीर्तिवाला सुहावनी मूर्तिवाला होता है॥६॥

हर्षिते भवति हर्षितः सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा॥ धर्मकृन्मणिगणेन मंडितः परमदैवविपाकविज्जनः७

हर्षित ग्रहका फल ऐसा है कि मनुष्य सर्वदा खुश रहे पुत्रोंसे तथा मित्रोंसे सर्वदा प्रसन्नतापूर्वक परिपूर्ण रहे धर्म करनेवाला होवै मणियोंके समूहसे भूषित रहे पंडित होवै और परमेश्वरको जाननेवाला यद्वा ( दैव ) पूर्वार्जित कर्म अर्थात् कर्मविपाक आदि ज्योतिष जाननेहारा होवै ॥ ७ ॥

शांतेति शांतो युवराजराजो जनो महौजा जनता-
समेतः ॥ अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्तः
खलु वित्तयुक्तः ॥ ८ ॥

शांत ग्रहवाला मनुष्य अतिशांतस्वभाव सर्वदा जवान राजाओं का राजा होवै अथवा (युवराज) भविष्यराजा यद्वा राजा होवै बडा तेजमान होवै बहुत मनुष्योंके साथरहे अनेक प्रकार निर्मल गद्य पद्यसहित विद्याओंके अभ्यासमें तत्पर रहे और निश्चय धनयुक्त सर्वदा रहे ॥ ८ ॥

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः प्रशस्तवेषो गतरोगसं-
घः ॥ विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरो नराणा-
मधिपप्रधानः ॥ ९ ॥

शस्त ग्रहका फल है कि मनुष्य विशेपतासे विद्वानोंका प्रशंसनीय (श्रेष्ठ) होवै सुंदर सुहावना (वेप) सजीला जवान होवै निरोग रहे बडी कीमती मालासे भूपित रहे और निर्मल वाणीकरके मनुष्योंका स्वामि, किंवा (प्रधान) श्रेष्ठ होवै ॥ ९ ॥

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावैः प्रपीडितोरातिकुलेन
मर्त्यः ॥ भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमादशाली
खलु पापमाली ॥ १० ॥

लुप्त ग्रहका फल है कि मनुष्य गुण तथा धर्मके कामोंका लोपकरे अर्थात् निर्गुणी, विधर्मी होवै. शत्रुकुलसे (पीडित) दुःखी रहे गृहस्थसे विरक्तरहे अनेक रोगोंसे युक्तरहे प्रमादी होवै पापकरनेवाला होवै ॥ १० ॥

दीनेति दीनो मतितोपहीनो जनो जनेशादिनि-

पीडितश्च ॥ गुणेन हीनः परदारलीनः परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥ ११ ॥

दीनग्रहवाला मनुष्य अति ( दीन ) गरीब होता है बुद्धिहीन संतोषरहित, गुणहीन, पराई स्त्रीमें आसक्त पराये धन चोरनेवाला ,निषिद्ध भूमिमें फिरनेवाला और राजा आदिसे पीडितभी रहता है ॥ ११ ॥

पीडिते गदनिपीडितः सदा चिंतया च परया समन्वितः ॥ व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमानाधिरोगसहितो विशेषतः ॥ १२ ॥

इति भाव कुतूहले ग्रहावस्था फलाध्यायः ॥ १३ ॥

पीडित ग्रहसे मनुष्य सर्वदा रोगपीडित बडीचिंतासे युक्त (व्यग्र) वे फुर्सत, बडे मदसे उन्मत्त रहता है तथा ( आधि ) मानसी दुःखसे दुःखी विशेषतः रोगी रहता है ॥ १२ ॥

इति महीधरकृतायां भावकुतूहलभाषायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

---

## अथ मारकविचाराध्यायः ।

मारकग्रहसंबंधात् पापकर्त्ता शनिस्तदा ॥
तिरस्कृत्य ग्रहान् सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अब मारकाध्याय कहते हैं समस्त ग्रहोंमें मृत्युकारक यमका भाई होनेसे शनि विशेष है वक्ष्यमाण विधिसे मारकत्व जो ग्रह पावै उसके साथ चार प्रकारोंमेसे किसी प्रकार संबंध शनि पावै तो मारक ग्रहोंको हटायकर आपही मारक होजाता है अपने मारकत्व होनेमें तो क्याही बाकी रहेगा ॥ १ ॥

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहास्त्रिवैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः ॥ भवंति

यदि केंद्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणामतीव शुभदायकाः खलखचारिणो जन्मनि॥ २॥

त्रिकोण ९।५ स्थानोंके स्वामि शुभसंज्ञक एवं शुभ फल देनेहारे और ३।६।११ भावोंके स्वामी पाप संज्ञक एवं क्रूर फल देने वाले पंडितोंने कहे हैं तथा केंद्र १।४।७।१० स्थानोंके स्वामि शुभ ग्रह हों तो शुभ फल नही देते पाप ग्रह हो तो अति शुभ फलदेते हैं यह विचार जन्ममें मुख्य है॥ २॥

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम्॥
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम्॥ ३॥

राहु तथा केतुभी मनुष्योंके जन्ममें जिन जिन भावोंमें हों और जिन जिन भावोंके स्वामियोंसे युक्त हो उन उन भाव संबंधी फल निश्चय देते हैं॥ ३॥

मंदश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः॥
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता पापकृद्यदा॥ ४॥

यदि शनि पापयुक्त होकर मारक ( सप्तमेशद्वितीयेश ) से युक्त उपलक्षणसे दृष्टभी हो तो समस्त ग्रहोंके फलोंको हटायके मारने वाला हो जाता है क्योंकि यह ( पापकृत् ) यमही है॥ ४॥

अल्पमध्यमपूर्णायुः प्रमाणमिह योगजम्॥
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिंतना॥ ५॥

प्रथम अल्प, मध्यम, पूर्ण आयुका विचार वक्ष्यमाण योगोंसे करके तब मारकका विचार करना जैसे योगसे पूर्णायु है और मारक दशा अल्प वा मध्यमायुके समयमें हो तो अरिष्टमात्र होगा मृत्यु नहीं होगी. ऐसेही मारकयोग अल्पायु समयमें हो तथा मार-

क दशा पूर्णायु समयमें हो तो ऐसेही जानना जब मारक दशा और योगायुभी तुल्य समयपर हो तब मृत्यु होती है ॥ ५ ॥

चेदंगपो यदिरवेरिरिव हीनं पूर्णं सुहृद्यदि समः सममायुराहुः ॥ बालग्रहो हितसमारिपदेपि पूर्णं मध्यं च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः ॥ ६ ॥

योगसे अल्प मध्यम दीर्घ आयु कहते हैं कि यदि लग्नेश सूर्यका शत्रु हो तो अल्पायु, मित्र हो तो पूर्णायु, सम हो तो मध्यमायु होती है अथवा लग्नेश मित्रगृही हो तो पूर्ण समके राशिमें हो तो मध्यम और शत्रुराशिमें हो तो अल्प आयु होती है यह जातकोंके तत्व जाननेवाले कहते हैं आयुका प्रमाण ४० अल्प ८० पर्यंत मध्यम १२० पर्यंत पूर्ण हैं परंतु कलिकालमें लोभमोहादि तथा अनाचार, कुपथ्य झूठ कूट आदियोंके करनेसे मनुष्योंकी परमायु ६० के लग भगही हो जाती है इस व्यवस्थामें इसके ३ भाग२० पर्यंत अल्प ४० लों मध्यम ६० पर्यंत पूर्ण आयु जाननी ॥ ६ ॥

अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैरायुरुदाहृतम् ॥
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ७ ॥

लग्नसे अष्टम तथा तृतीय आयु स्थान पंडितोंने कहे हैं इनसे बारहवें अर्थात् लग्नसे दूसरा और सप्तम स्थान मारक संज्ञक कहे हैं यहां ग्रंथकर्ताने तृतीयभी आयु स्थान कहा किंतु यह अन्य ग्रंथोंमें न होनेसे अयुक्त है ॥ ७ ॥

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः ॥
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं दिशेत् ॥ ८ ॥

मारकभावका स्वामि मारक स्थानमें हो तो उसकी दशा दशांतरमें मृत्यु होती है परंतु वह ग्रह ( पाप )३।६।११।८ भावेशसे

भी संबंध रखता हो और पाप ग्रहोंकी दशामें यदि पापयुक्त होकर मारकसेभी संबंध रक्खें तो उनकी दशादिमेंभी मृत्यु होती है ॥८॥

असंभवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ॥
अभावे व्ययभावेशसंबंधिग्रहभुक्तिषु ॥ ९ ॥

मारक ग्रहकी दशाके ( असंभव ) वर्त्तमान न होने एवं बहुत दूर मारक ग्रहदशा होनेमें अथवा मारक दशा भुक्त हो जानेमें व्ययाधीशके दशामें मनुष्योंको मृत्यु हो जाती है उसकाभी पूर्वोक्त प्रकारोंसे अभाव हो तो व्यय भावेशके साथ जो ग्रहसंबंध करता हो अथवा मारकेशसे जो संबंध करता हो उसकी दशामें मृत्यु होती है ९

तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ॥
दुष्टतारापतेः पाके निर्वाणं कथितं बुधैः ॥ १० ॥

पूर्वोक्तके अभावमें अष्टमेशकी दशामें मरण होता है अथवा दुष्टराशि ८।२ पतिकी दशामें यद्वा पापग्रहदशामें मृत्यु पंडितों- ने कही है ॥ १० ॥

## अथ राजयोगाः ।

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि ज-
न्मिनः ॥ अतिविचित्रमणिव्रजमंडितो वसुमतीवि-
भुतां स नरो व्रजेत् ॥ ११ ॥

अबराजयोग कहते हैं कि, जिसके जन्ममें नवमभावका स्वामि पंचम भावमें तथा सुतेश नवम स्थानमें हो तो बहुत मूल्यके अनेक प्रकार ( मणि ) रत्नोंसे भूषित होकर पृथ्वीका राजा होवे ॥ ११ ॥

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ॥
त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ॥ १२ ॥

जिसके जन्ममें दशमेश पंचम स्थानमें पंचमेश दशम स्थानमें त्रिकोण९।५ भावेशमें दृष्ट हो तो निश्चय राजा होता है ॥ १२ ॥

राज्येशांगपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः॥ पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपेनांगगो दृष्टो वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम्॥१३॥

जिसके जन्म लग्नसे दशमेश, लग्नेश, चतुर्थेश, पंचमेश, नवमेश-से युक्त वा दृष्ट हों तथा बलवान्‌भी हों तो वह मनुष्य राजा होवे और पंचमेश यदि नवमेश तथा लग्नेशसे युक्त होकर लग्नमें हो अथवा दशममें यद्वा चतुर्थ स्थानमें नवमेश लग्नेशसे युक्त वा दृष्ट हो तो निश्चय राजा होवे ॥ १३ ॥

यत्र कुत्रापि केंद्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः ॥
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥ १४ ॥

केंद्र १।४।७।१० का स्वामी किसी भावमें त्रिकोण ५।९ से युक्त हो बलवान्‌भी हो तो मनुष्य राजा होवे धनवान्‌भी होवे परंतु शरीर निर्बल रहे ॥ १४ ॥

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते ॥
पंचमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥ १५ ॥

लग्नेश नवममें अथवा बृहस्पतिकी राशि ९।१२ में वा दशम स्थानमें शुक्रसहित हो तथा पंचमेश उसे देखे तो राजाका पुत्र राजा होवे अन्य नहीं ॥ १५ ॥

अथ धनिकयोगाः ।

पंचमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा ॥
मौक्तामणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥ १६ ॥

शुक्र अपनी राशि २।७ का पंचम स्थानमें हो लाभ भावमें शनि हो तो मणियोंके समूहका भोगनेवाला सुवर्णका भोगनेवाला राजा होवै ॥ १६ ॥

कर्कटे तु कलानाथे पंचमे लाभगे शनौ ॥
नानाधनसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥ १७ ॥

चंद्रमा कर्क राशिका पंचम भावमें शनि लाभभावमें हो तो अनेक प्रकार धनोंकी समृद्धि धर्मकी वृद्धि और राजत्वभी होवै ॥१७॥

पंचमे तु मृगे कुंभे समंदे यस्य जन्मनि ॥
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मलग्नसे शनि १०।११ का पंचमभावमें तथा बुध ग्यारहवें भावमें हो उसको सर्व प्रकारसे धनकी वृद्धि होती रहै॥१८॥

पंचमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ॥
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ॥ १९ ॥

सूर्य सिंहराशिका पंचमभावमें हो बृहस्पति लाभ ११ भावमें हो सर्वदा वाहन हाथी घोडे आदि, तथा सुवर्ण रत्नोंका स्वामि अकस्मात्भी होवै ॥ १९ ॥

पंचमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि ॥
लाभगाविंदुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमो नरः ॥ २० ॥

पंचममें बृहस्पति अपनी राशि ९।१२ का हो तथा लाभ भावमें चंद्रमा मंगल हो तो मनुष्य इस जन्म योगसे राजाके समान होवै २०

रविक्षेत्रगते लग्ने रविणा संयुते सति ॥
गुरुभौमयुते वापि धनाधिक्यं दिने दिने ॥ २१ ॥

सूर्य्य लग्नमें सिंहका हो अथवा बृहस्पति मंगल करके युक्तभी हो तो दिनोदिन धनकी अधिकता होती रहै ॥ २१ ॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु सचंद्रे यदि जन्मनि ॥
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥२२॥

जिसके जन्ममें कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमाभी हो मंगल बृहस्पति से युक्त हो तो अकस्मात् धनका स्वामि होवै ॥ २२ ॥

कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि ॥
ज्ञ शुक्रमंदसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें लग्नका मंगल अपनी राशि १।८ का बुध शुक्रशनिसे युक्त हो वह कुबेरके समान धनवान् होवै ॥ २३ ॥

गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति ॥
चंद्रांगारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचंचला ॥ २४ ॥

बृहस्पति लग्नमें अपनी राशि ९।१२ का हो तथा चंद्रमा मंगलसेभी युक्त जिस मनुष्यका हो उसके घरमें लक्ष्मी स्थिर रहे ॥२४॥

कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि ॥
संयुते शुक्रमंदाभ्यां वृष्टे वाधानिको भवेत् ॥ २५ ॥

जिसके जन्ममें मिथुन वा कन्याका बुध लग्नका शुक्र शनिसे युक्त वा दृष्ट हो वह धनवान् होवै ॥ २५ ॥

शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि ॥
चंद्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥ २६ ॥

जन्ममें जिसका शुक्र लग्नमें अपनी राशि २।७ का बुध शनिसंयुक्त हो अथवा दृष्ट हो तो धनका स्वामि होवै ॥ २६ ॥

## अथ दरिद्रयोगाः।

त्रिकोणपतिसंबंधी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः ॥
स षड्ष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥ २७ ॥

अब दरिद्री योग कहते हैं.जो जो धनदेनेवाला ग्रह है वह त्रिकोण ५।९ भावेशोंसे संबंधी होकर छठे आठवें बारहवें भावोंके स्वामियोंसेभी युक्तहो तो धनका नाश करके दरिद्री करते हैं ॥ २७ ॥

रिपुभावपतौ लग्ने लग्नेशे रिपुभावगे ॥
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्द्धनो भवेत् ॥२८॥

षष्ठेश लग्नमें लग्नेश छठे भावमें हो इनपर मारकेशकी दृष्टि हो अथवा उससे दृष्ट हो तो मनुष्य (निर्द्धन) धनरहित होवे ॥२८॥

चंद्रादित्यौ यदालग्ने वांगपे निधनालये ॥
मारकेणयुते दृष्टे नरो भवति निर्द्धनः ॥ २९ ॥

सूर्य चंद्रमा लग्नमेंहो अथवा लग्नेश अष्टमभावमें हो इनपर मारक ग्रहकी दृष्टिहो वा मारकसे युक्त हो तो मनुष्य निर्द्धन होवे २९

यदांगनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतो थवा स्यात् ॥ पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥ ३० ॥

यदि लग्नेश त्रिकभाव६।८।१२ स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा पापयुक्त हो शुभग्रह उसे न देखे तो पंचमेशसे युक्त लग्नेश लग्नमें जो धनवान् योग कहाहै इसके हुयेमेंभी वह मनुष्य (ऋणी) कर्जदार होवै ॥ ३० ॥

आस्तारिनीचत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथ

युक्ते ॥ भाग्याधिपे वाथ शुभैरदृष्टे भवेदृणीशो मनुजेश्वरोपि ॥ ३१ ॥

इति भावकुतूहले नानायोग निरूपणं नामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

यदि लग्नेश अस्तंगतहो अथवा शत्रुराशिमें, नीचराशिमें, त्रिक ६।८।१२ भावोंमें हो मारक ग्रहसे युक्त तथा उसे भाग्या ९ धीश यद्वा शुभग्रह न देखें तो वह मनुष्य राजाभी हो तो भी ऋणियोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ ३१ ॥

इति महीधरकृतायां भावकुतूहलभाषायां नानाविधयोगकथनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

---

## अथ भावाध्यायः ।

### ( तत्रादौ तनुभावविचारः )

अष्टारिव्ययगो यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः ॥
सुखंनिहंति तस्याशु सर्व भावेष्वयं विधिः ॥ १ ॥

सभी भावोंमें यह विधि है कि जिसका लग्नस्वामी ८।६।१२ भावोंमेंहो, पाप युक्त हो तो उसके सुखको शीघ्रहरणकरताहै॥ १॥

लग्नपश्चंद्रराशीशो नीचस्तु रिपुराशिगः ॥
विनास्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत् ॥ २ ॥

लग्नेश अथवा चंद्रराशीश नीचराशिमें अथवा शत्रुराशिमें तथा विना अपनी राशित्रिक ६।८।१२ स्थानमें हो तो वह ग्रह बलहीन कहाताहै अपनी राशिका ६।८।१२ मेंभी बली होताहै ॥२॥

दुष्टस्थानगते यस्य चंद्रलग्नेश्वर यदि ॥
कार्श्यं गदभयं नित्यं वितनोतिरिपूदयम् ॥ ३ ॥

जिसका लग्नेश वा चंद्रराशीश ( दुष्ट स्थान ) शत्रु नीच त्रिकमें हो उसको कृशता, रोग भय और शत्रुकी वृद्धि नित्य रहती है॥३॥

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि ॥
दीर्घायुः सुखसंतप्तो बली भोगी प्रजायते ॥ ४ ॥

यदि लग्नेश उपलक्षणसे चंद्रराशीशभी अपने उच्च राशिमें, स्वगृहमें, अथवा अपने अंशादियोंमें हो वह दीर्घायु, सुखी, बलवान् और भोगवान् होताहै ॥ ४ ॥

## अथ धनभावविचारः ।

धनेशः शुक्रसंयुक्तोथवा शुक्रात्रिके भवेत् ॥
संबंधी लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत् ॥ ५ ॥

धन (२) भावेश शुक्रके साथ हो अथवा शुक्रसे ६।८।१२वें स्थानमें हो तथा लग्नेशसेभी संबंध करता हो तो नेत्ररोगी होताहै ॥५॥

चंद्रादित्यौ धनेस्यातां निशांधो मनुजो भवेत् ॥
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिनायुताः ॥ ६ ॥
तातादीनां प्रकुर्वंति मंदता नेत्रयोरपि ॥
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्र दोपकृत् ॥ ७ ॥

जिसके सूर्य चंद्रमा दूसरे भावमें हो वह मनुष्य (रात्र्यंध) रतोंधी वाला होता है. यदि सूर्य, लग्नेश धनेश, चतुर्थेशके साथ हों तो उसके माता आदियोंको ( नेत्र मंदता ) दृष्टि कम करती है. उक्तयोगमें यदि उक्तग्रह अपने उच्च वा स्वराशिका हो तो दोप नहीं करता ॥ ६ ॥ ७ ॥

गुरुत्वागभवनाधीशो त्रिकस्थानगतो यदा ॥
मूकतां कुरुतोप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः ॥ ८ ॥

ताभ्यांयुतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत् ॥
बलाबलविवेकेन जातकज्ञैर्विशेषतः ॥ ९ ॥

बृहस्पति और द्वितीयस्थानका स्वामि त्रिक ६।८।१२ स्थान में हों तो ( मूकता ) गूंगापन आता है. यदि उक्तबृहस्पति और द्वितीयेशके साथ मातृपितृआदि जिस भावका स्वामी त्रिकमें हो उसको मूकता कहनी विशेषतः जातक जानने वालेने उनका बल एवं निर्बलता देखके फल कहना जैसे योगकारकग्रह उच्च स्वराशिमें हों तथा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो अनिष्ट फल पूरा नहीं देते नीचशत्रुराशिगत, पापयुत कष्टफल पूराही देतेहैं इत्यादि विचार करना ॥ ८॥ ९ ॥

धनाधिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति जन्म काले ॥ रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्चमित्रा लयगो जनानाम् ॥ १० ॥

धनभावेश दशम, नवम, लाभ भावमें बलवान् जन्मकालमें हो अथवा अपने, उच्च, मित्र, राशिमें हो तो लक्ष्मी उसके रहनेके घरमें विहार करे ॥ १० ॥

## अथ तृतीयभावविचारः ।

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेपिवा ॥
सहजेपिविशेषेण भ्रातुः सौख्य न जायते ॥ ११ ॥

तीसरे भावका विचार है कि, तृतीय भावका स्वामी तीसरा हो अथवा छठे आदि ३ में हो तो भाईयोंका सुख नहोवे विशेषतः सहज भावमें यह विचारहै सर्वदा ग्रंथोंमें जिस भावका सुख स्वामी अपने गृहमें रहता है उसकी वृद्धि करता लिखा है यहां श्लोकार्थ विरुद्ध प्रतीत होताहै परंतु ग्रंथकर्त्ताका आशय अपि तथा विशेष शब्द-

से है, कि बहुत सुख भाइयोंका न होवे क्योंकि भाईयोंको ( दायाद ) पितृधनलेनेवाले कहते हैं कैसाही भाइयोंमें मेल हो परंतु कभीन कभी शत्रुता कुछ प्रकारभी होतीही है ॥ ११ ॥

सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ पापालये वा भवतो जनस्य ॥ उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्थानितीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः ॥ १२ ॥

तृतीयभावेश तथा मंगल पाप युक्त हों पाप राशिमें हो तो मनुष्यके भाई जन्म पाकर मरते रहैं इस प्रकार जातकोंके तत्व जाननेवाले कहते हैं ॥ १२ ॥

स्त्रीखेटःसहजाधीशः शुक्रो वाथ निशाकरः ॥ तत्रगो भगिनीं दत्ते भ्रातरं पुरुप ग्रहः ॥ १३ ॥

तृतीयभावेश स्त्रीग्रह, शुक्र अथवा चंद्रमा तृतीयभावमें हो तो ( भगिनी ) बहिन होवे यदि तृतीयेश तृतीय पुरुषग्रह हो तो भाई होते हैं ॥ १३ ॥

अथ चतुर्थभावविचारः।

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुग् जनयति प्रवरालय मंगिनाम् ॥ त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः सुख जनुः पतिरेव तथा बुधैः ॥ १४ ॥

चतुर्थेश चतुर्थस्थानमें लग्नेशयुक्त हो तो शरीरियोंको बडे बडे घर मिलते हैं यदि त्रिक ६।८।१२ स्थानमें हो तो विपरीत फल करता है ऐसेही चतुर्थेश लग्नेशसेभी पंडितोंने कहा है ॥ १४ ॥

सुखाधीशे जीवे सुखनिवहचिंता भृगुसुते विभूपा योपांगं प्रवरतुरगाणामपि बुधे ॥ अगो मंदे नीचो-

द्भवसुखमतेरेवदिनपे पितुश्चंद्रे मातुः क्षितिनिकर
चिंता क्षितिसुते ॥ १५ ॥

चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत सुखकी चिंता रहे चतुर्थेश शुक्र हो तो भूषण, स्त्री, स्त्री संभोग, श्रेष्ठ घोडा आदियोंकी चिंता होवे ऐसेही बुधसेभी होती है, शनि तथा राहु चतुर्थेश हो तो नीचजन संबंधी सुखकी चिंता होवे. सूर्य हो तो पितृपक्षकी, चंद्रमा हो तो मातृ पक्षकी और मंगल हो तो भूमिसमाजसंबंधी चिंता रहे. ऐसाही विचार प्रश्नमेंभी प्रष्टाके मनकी चिंतामें करना ॥ १५ ॥

त्रिकोणे वाहनाधीशे केंद्रे च बलसंयुते ॥
निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥ १६ ॥

चतुर्थेश त्रिकोण ५।९ में हो अथवा केंद्र १।४।७।१० में बलवान् अपने उच्चादिपदमें हो तो निश्चय नवीन वाहन मिले ॥ १६ ॥

## अथ पंचमभावविचारः ।

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ ॥
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्गमः ॥ १७ ॥

पंचमभावका विचार है कि लग्नेश मंगलकी राशिमें हो तथा पंचम भावका स्वामी छटा हो तो प्रथम संतान मरजावे; उपरांत पुत्रोत्पत्ति न होवे ॥ १७ ॥

षडादित्रयगे नीचे पुत्रेशे पापसंयुते ॥
काकवंध्यापति स्तत्र केतुचंद्रसुतौ यदा ॥ १८ ॥

पंचमेश पापयुक्त होकर ६।७।८ भावमें नीचराशि वा नीचांशकमें हो तो वह पुरुष काकवंध्याका पति होवे अर्थात् उसकी स्त्री- (काक वंध्या) केवल एकही संतान जननेवाली होवे परंतु उस भावमें अथवा पंचममें केतु तथा चंद्रभी हो तोभी यही फल होताहै १८॥

तदीशो नीचगो यत्र पुत्रभावं न पश्यति ॥
तत्रैव बुधमंदौ वा काकवंध्यापतिर्भवेत् ॥ १९ ॥

पंचमेश नीचराशिमें हो पंचय भावको न देखे. अथवा पंचममें बुध शनि हों तो मनुष्य ( काकवंध्या ) एक संतान जनने वालीका पति होवे ॥ १९ ॥

धर्माधीशोंगगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि ॥
केतुज्ञौ पंचमेस्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

जन्ममें नवमेश नीचराशिका हो तथा पंचमेश नीचराशिमें हो और बुध केतु पंचम भावमें हो तो पुत्र कष्टसे होवै कहना ॥ २० ॥

पंचमाधिपतिः केंद्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः ॥
तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेन विलंबतः ॥ २१ ॥

पंचमेश केंद्रमें वा त्रिकोणमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्टहो तो पुत्रका सुख शीघ्र होताहै यदि ( विलोम ) पंचमेश केंद्रकोणरहितस्थानोंमें शुभग्रहयोग, दृष्टि रहित हो तो पुत्रसुख विलंबसे होताहै ॥ २१ ॥

संतानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा ॥
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यका भवेत् ॥ २२ ॥

पंचमेश तथा जन्मलग्नेश ( पुरुषराशि ) विषमराशिमें हो व उपलक्षणसे विषम नवांशोंमें हो तो पुत्र बहुत और ( स्त्रीराशि ) समराशियोंमें हो तो कन्या बहुत होतीहैं मिश्रितमें कन्या पुत्रतुल्य जानना ऐसे विचार प्रश्नमें भी है ॥ २२ ॥

अथारिभावविचारः ।

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनस्थोपि जन्मनि ॥
व्रणोदयस्तु सर्वांगे स पापो न व्रणं दिशेत ॥ २३ ॥

छठे भावका विचारहै कि, (रोग भाव ) छठे स्थानका स्वामी जिसका लग्नमें हो अथवा अष्टम हो तो उसके सर्वांगमें (व्रण) तिल मसा, दाग, खोट, आदि चिह्न होवै. यदि वह ग्रह पाप युक्तभी हो तो सर्वांगमें व्रण न होवै ॥ २३ ॥

एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः ॥
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रय भावगाः ॥ २४ ॥
तेषामपि व्रणंवाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः ॥
कारकस्य दशाकाले व्रणमागंतुकं दिशेत् ॥ २५ ॥

इसी प्रकार पितृमातृआदि भावोंके स्वामी उन्हीं उन्हीं कारकोंसें युक्त एवं ( व्रणाधिप ) षष्ठेशसे उक्त हो तथा ६।७।८ भावोंमें हो तो उन पितृमात्रादियोंके अंगोंमें जातक जाननेवाले अच्छे चतुरोंने विचारपूर्वक चातुर्यतासे व्रण कहने ये व्रण उसी कारक ग्रहके दशा समयमें होनेवाले कहने ॥ २४ ॥ २५ ॥

शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं धरासूनुःकंठे जनयति बुधोनाभिनिकटे॥ गुरुर्नासामध्येपदनयनयोरेव भृगुजः शनी राहुः केतुर्व्रणमुदरभागे जनिमताम् ॥ २६ ॥

उक्तयोगकारक यद्वा षष्ठेश सूर्य हो तो शिरमें चंद्रमा मुखमें मंगल ( कंठ ) गलेमें. बुध नाभीके समीप, बृहस्पति नाकके बीचमें शुक्र पैर तथा नेत्रोंमें शनि राहु केतु ( उदर ) पेटमें मनुष्योंके अवश्य ( व्रण ) खोट आदि करते हैं ॥ २६ ॥

लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जन्मिनां रोगांगाधिपती यदा कुजबुधौचंद्रेण वाराहुणा॥ मंदेना

पियुतौ प्रयच्छत इति प्रायोंगगो रात्रिपो युक्तो वा त
मसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा श्यामलम् ॥ २७ ॥

यदि लग्नेश मंगलके राशिमें बुधसहित हो तो मनुष्योंके मुखमें रोग रहे लग्नेश षष्ठेश बुध मंगल हों चंद्रमा अथवा राहु शनिसे युक्त हों तो कुष्ठ समान रोग होता है विशेषतः चंद्रमा लग्नमें राहुसे युक्त हो तो श्वेत कुष्ठ और शनि युक्त हो तो कृष्ण कुष्ठ होवे ॥ २७ ॥

## अथ सप्तमभावविचारः ।

विना स्वर्क्षं कलत्रेशस्त्रिकस्थानगतो यदि ॥
रोगिणीं तरुणीं दत्ते तथा तुंगपदं विना ॥ २८ ॥

सप्तमभावेश त्रिक ६।८।१२ भावमें हो स्वगृही न हो तथा उच्च राशि नवांशमें न हो तो स्त्री रोगिणी मिले ॥ २८ ॥

जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ॥
पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यका शुक्र सप्तम हो वह ( कामी ) अतिस्त्रीसंग चाहनेवाला होवे यदि शुक्र अथवा सप्तमेश पापराशिमें पाप संयुक्त हो तो पुरुष स्त्रीके सुखसे रहित रहे ॥ २९ ॥

चतुर्थे महिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ॥
कलत्रे वा कुटुंबे वा व्यभिचारी नरो भवेत् ॥ ३० ॥

सप्तमेश चतुर्थमें लग्नेश लग्नमें यदि हो अथवा सप्तममें वा द्वितीय स्थानमें हो तो पुरुष (व्यभिचारी) यथेच्छ स्त्रियोंका गमन करने वाला होवे ॥ ३० ॥

यावंतो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ॥
तावंतोपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधैः ॥३१॥

जितने ग्रह अष्टम स्थानमें अष्टमेशसे दृष्ट हों उतने विवाहमनुष्योंके पंडितोंने कहे हैं ऐसा विचार सप्तम भावमेंभी होता है ॥३१॥

जाया धीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकंटके ॥
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत् ॥ ३२ ॥

सप्तमेश अपनी राशिमें अथवा अपने उच्चमें त्रिकोण केंद्र भावमें हो उसे शुभग्रह देखें या उनसे युक्त हो तो विवाह शीघ्र एवं बहुत होवें ॥ ३२ ॥

## अथाष्टमभावविचारः ।

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतोलग्नेश्वरोपि चेत् ॥
करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः ॥ ३३ ॥

अष्टम भावका विचार है कि अष्टमेश अथवा लग्नेश पाप युक्त हो उसे शुभग्रह न देखें तो मनुष्यको अल्पायु करता है ॥ ३३ ॥

तमः शनिभ्यां निधनाधिनाथः पापैर्युतो हीनबलोस्तगो वा ॥ अल्पायुषं जातकमेव सद्य करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत् ॥ ३४ ॥

अष्टम भावेश यदि राहु शनिसे युक्त अथवा पाप युक्त एवं बल हीन, अस्तंगत हो तो मनुष्यको ( अल्पायु ) थोडे दिन जीनेवाला करता है परंतु यदि अपने उच्च राशि वा स्वगृहमें न हो ॥ ३४ ॥

अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चंद्रे तु जलयोगतः ॥ करवालात्कुजेज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे ॥३५॥ गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया तृषया शनौ ॥ चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे गृहे पथि ॥ ३६ ॥

अष्टम भावमें वा अष्टमेश सूर्य हो तो अग्निसे, चंद्रमा हो तो

जलके संयोगसे मंगल हो तो ( तलवार ) आदि शस्त्रसे बुध हो तो ज्वरसे बृहस्पति हो तो ( त्रिदोष ) वात पित्त कफ तीनों रोगोंसे शुक्र होतो ( क्षुधा ) भूख, अथवा अन्नादिकी अरुचिसे शनि हो तो ( तृषा ) प्यास रोगसे मनुष्यकी मृत्यु होती है और उक्त मृत्यु कारक ग्रह चर राशिमें हों तो परदेशमें स्थिरमें हो तो घरमें द्विस्वभावमें हो तो मार्गमें मृत्यु होवे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

केंद्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुंगादिपदगे तदा ॥
दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमंगिनाम् ॥ ३७ ॥

अष्टम भावका स्वामी केंद्र अथवा कोणमें हो तथा उच्च स्वराशि आदि पदमें हो तो पूर्वाचार्योंने वह मनुष्य दीर्घायु कहा है इनसे ( व्यत्यय ) विपरीत अर्थात् केंद्र कोणोंसे रहित स्थानोंमें तथा नीच शत्रु आदि राशियोंमें हो तो अल्पायु जानना ॥ ३७ ॥

## अथ नवमभावः ।

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्य्यैः प्रदिष्टं भाग्यं तस्मात्प्रथममसुतः संविचिंत्यं प्रयत्नात् ॥ युक्तं दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटैर्जन्तोर्भाग्यं प्रसरति विधोरेव शौक्लीकलेव ॥ ३८ ॥

लग्नसे तथा चंद्रमासे नवमस्थान श्रेष्ठ आचार्योंने ( भाग्य ) ऐश्वर्य वा प्रारब्धका स्थान कहा है इससे ज्योतिषीने प्रथम अपने ( प्राण ) चित्तसे यत्नपूर्वक भाग्यका विचार करना भाग्यभाव नवमस्थानको कहते हैं यह जन्मसमयमें भावेश एवं शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो मनुष्यका भाग्य शुक्ल पक्षकी चंद्रमाकी कलाके समान प्रतिदिन ( फैलता ) बढता है ॥ ३८ ॥

सहोत्थ पुत्रांगगतो ग्रहश्चेद्भाग्यं प्रपश्यद्यदिवा स-

वीर्यः ॥ हिरण्यमाली खलुभाग्यशाली प्रसूतिकाल यदि यस्य जंतोः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें यदि ३।५।१ भाव स्थित ग्रह बलवान् हो तथा नैसर्गिक दृष्टिसे नवम भावको देखे तो वह सुवर्णमाला पहरनेवाला धनवान् तथा भाग्यवान् होवै ॥ ३९ ॥

निजोच्चभे पुण्यगृहे नभोगो बलिर्यदा तिष्ठति जन्मकाले ॥ स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो राजकुलप्रसूतः ॥ ४० ॥

अपने उच्च राशिका कोई ग्रह बलवान् नवमस्थानमें जन्म कालका जिसका हो वह पुण्यवान्, नव रत्नोंकी माला पहिरनेवाला होवै राजवंशमें उत्पन्न भया हो तो राजाही होवै ॥ ४० ॥

जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठा सुतेशदृष्टा यदि जन्मकाले ॥ स पुण्यकर्त्ता नृपतेरमात्यो नृपालजातो नरपालवर्य्यः ॥ ४१ ॥

जिसके जन्म कालमें बृहस्पति बुध शुक्र नवमस्थानमें बलवान् हों उनपर पंचम भावेशकी दृष्टिभी हो तो वह मनुष्य पुण्य करनेवाला, राजाका मंत्री होवै, राजवंशीका यह योग हो तो श्रेष्ठ राजा होवै ॥ ४१ ॥

भाग्यभावाधिपो नीचे रविलुप्तकरे सति ॥
अरिगेहगतो वापि भाग्यहीनो नरो भवेत् ॥ ४२ ॥

भाग्यभाव ९ का स्वामी नीच राशिमें हो तथा अस्तंगत अथवा शत्रुराशिमें हो तो मनुष्य ( भाग्यहीन ) कमवख्त दरिद्री होताहै ॥ ४२ ॥

## अथ दशमभावविचारः।

कर्मभावाधिपो नीचे षडादित्रयगोपि चेत् ॥
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ॥ ४३ ॥

दशम भावका विचार कहते हैं इसको कर्म, राज्य, तात आदि संज्ञा पूर्व कहीहै इसका स्वामि नीच राशिका त्रिक स्थान ६।८।१२ में हो परंतु अपने उच्च एवं स्वराशिमें हो तो (कर्म वैकल्य) कार्यमें विघ्न यद्वा कार्य्यहानि भाग्यहानि करताहै ॥ ४३ ॥

कर्माधिपे केंद्रनवात्मजर्क्षे बुधेज्यदृष्टे सबले नराणाम् ॥ तुरंगमातंगनवांबराणि भवंति नानाधनसंयुतानि ॥ ४४ ॥

दशमेश केंद्र १।४।७।१० नवात्मज ९।५ स्थानमें हो बुध बृहस्पति उसे देखे बलवान् हो तो मनुष्योंको घोडे, हाथी नवीन वस्त्रादि अनेक प्रकार धनोंसे संयुक्त रहे ॥ ४४ ॥

कर्मठः केंद्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत् ॥
कूपायतनकर्त्ता च देवतातिथिपूजकः ॥ ४५ ॥

दशमेश केंद्र कोणमें हो तो ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ करनेवाला तथा (कूप) कुवा, बावड़ी, धर्मशाला, मठ मंदिर आदियोंका बनानेवाला देवता एवं (अतिथि) अभ्यागतोका पूजन करनेवाला हो वे ॥ ४५ ॥

लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणामादित्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेंद्रैः॥ तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात्पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥ ४६ ॥

लग्नसे अथवा चंद्रमासे दशमस्थानमें जो ग्रह मनुष्यके जन्मकालमें हो उसके अनुसार कर्मसे वा संबंधसे (आजीविका) योगक्षेम होता है दशममें कोई ग्रह न हो तो दशमेशसे कहना. सूर्य हो तो पितासे वा पितावाले कर्मसे ऐसेही चंद्रमा हो तो मातासे मंगल हो तो शत्रुकुलसे बुध हो तो मित्रपक्षसे बृहस्पति हो तो भ्रातृपक्षसे शुक्रहो तो स्त्रीसे शनि हो तो पुत्रसे कर्माजीवि पंडितोंने विशेषतः जातक जाननेवालोंने कही है ॥ ४६ ॥

रविशीतकरांगकर्मगानां पतिवृत्त्याभिहिता नरस्य वृत्तिः ॥ कनकोर्णतृणौपधैर्दिनेशे कृपिदाराम्बुसमाश्रयाच्च चन्द्रे ॥ ४७ ॥

दूसरा प्रकार कहते हैं कि सूर्य तथा चंद्रमा अथवा लग्नराशिसे दशमेश जो उग्र हो उसको (वृत्ति) आजीवनोपाय मनुष्यका होता है जैसे सूर्य जीविकादाता हो तो सुवर्ण, ऊन, (तृण) घास आदि औपधि अन्नादिके संबंधसे, चंद्रमा हो तो (कृपि) खेतिके कर्म, जलकर्म, स्त्रीके आश्रयसे आजीवन होता है ॥ ४७ ॥

अथ साहसवह्निधातुशस्त्रैः क्षितिजे काव्यकलाकलापतोज्ञे ॥ लवणद्विजकांचनेभदैवर्मणिगोरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥ ४८ ॥

इससे उपरांत फलहै कि मंगल कर्माजीविदेनेवाला हो तो साहसके कर्म, अग्निकर्म धातुसंबंधिकर्म, शस्त्रकर्मसे बुधहो तो काव्योंके संबंधि कर्मसे (गुरु) बृहस्पति हो तो लवण व्यापारसे ब्राह्मण, एवं सुवर्ण, हाथी, देवता संबंधि कर्मसे; शुक्र हो तो मणि, चांदी गौ समूहसंबंधी कृत्यसे जीविका मिले ऐसे जानना ॥ ४८ ॥

रविजे श्रमभारनीचतः स्यादिह कर्मेशभवांशना-
थवृत्तिः ॥ हितवैरिनिजर्क्षतुंगसंस्थैर्हितवैरिस्ववशाद्धनाप्तिरुच्चैः ॥ ४९ ॥

शनि हो तो (श्रम) कष्ट मेहनत भारढोना, (नीचकर्म) गुलामी आदिसे आजीविका होवे यह (कर्मेश) दशमेश जिस नवांशकमें हो उसका जो स्वामि है उसके उक्त आजीविका मनुष्यकी होती है वह ग्रह मित्रराशि अंशकेमें हो तो मित्रपक्षसे शत्रुमें शत्रुसे स्वराशिमें अपने पराक्रमसे उच्चमें अकस्मात् बडे लोगोंसे धनप्राप्ति आजीविका होती है ॥ ४९ ॥

## अथायभावविचारः।

लाभेशो यदि केंद्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते ॥
षडादित्रयगे नीचे लाभवाधा नृणां सदा ॥ ५० ॥

अब ग्यारह वें भावका विचार कहते हैं, कि लाभेश यदि केंद्रमें हो तो मनुष्यको लाभ अधिक होता है यदि ६।८।१२ भावमें यद्वा नीचराशिमें हो तो लाभकी वाधा करता है ॥ ५० ॥

आदित्येन युतेक्षिते नृपकुलाल्लाभालये चौरतो
लाभो नित्यमथेंदुना गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः ॥
भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिर्जतो-
श्चंद्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ॥ ५१ ॥

लाभेश सूर्यसे युक्त अथवा ग्यारहवें स्थानमें हो अथवा सूर्य इस भावको देखे तो राजकुलसे तथा चोर मनुष्यसे नित्य लाभ होवे उक्त प्रकारसे चंद्रमा हो तो हाथी, जलसंबंधी कृत्यसे तथा स्त्री जनोंसे, मंगल हो तो अनेक प्रकारके वाहन, (मणि) रत्न भूषण

भूमि, सुवर्ण, मूंगा आदिसे बुध हो तो ( शिल्प ) कारीगरी, लिखना व्यापार आदि कृत्योंसे मनुष्यको लाभ होता रहै ॥ ५१ ॥

जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सितेनालं वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः॥ मंदेनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेंद्रलोहव्रजैरित्थं तंत्रबहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः ॥ ५२ ॥

उक्त प्रकारका बृहस्पति हो तो राजासे यज्ञ कृत्यसे हाथी एवं भूमि संबंधि कृत्यसे ज्ञान संबंधि क्रियाओंसे लाभ होवै शुक्र हो तो निश्चय ( वारांगना ) वेश्याओंके ( गमागम ) कुकर्मचारी आदिसे तथा गुणोंके व्याख्यानसे, मोतियोंके व्यापारसे और शनि हो तो हाथियोंके समूहकृत्य यद्वा ( गोठ ) गोपालकृत्य ( व्यसन ) द्यूत आदि, भूमि कृत्य, नीलम, लोहा आदिसे होवै यदि बहुत ग्रह लाभभावमें हों वा उसे देखें तो बहुत ही प्रकार धन मिले यह तंत्र पूर्वपंडितोंने कहा है ॥ ५२ ॥

## अथ व्ययभावः।

शुभग्रहाः प्रयच्छंति व्ययस्था विपुलं धनम् ॥
विपरीतं खला जंतोर्जन्मकाले विशेषतः ॥ ५३ ॥

बारहवें भावका विचारहै कि शुभग्रह इस स्थानमें बहुत धन देतेहैं तथा मनुष्यको पापग्रह व्ययभावमें विपरीत फल जन्मकालके विशेषतासे करते हैं ॥ ५३ ॥

क्षीणेंदुरंत्यगो यस्य रविणा सहितो यदि ॥
तस्य वित्तं हरेद्राजा कुजेनापि युतेक्षितः ॥ ५४ ॥

इति भावकुतूहले भावाध्यायः पंचदशः ॥ १५ ॥

जिसका क्षीण चंद्रमा व्ययभावमें यदि सूर्यसे युक्तभी हो तो उसके धनको राजा हरलेवे मंगलसे युक्त,दृष्ट होनेमेंभी यही फल है५४

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां भावफलाध्यायः ॥ १५ ॥

---

## अथ दशानयनाध्यायः ।

रसा आशाशैला वसुविधुमिता भूपतिमिता नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ॥ रवाविंदावारे तमसि च गुरौ भानुतनये बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥ १ ॥

अब दशाविचार कहते हैं कि सूर्यके (६) चंद्रमाके (१०) मंगलके (७) राहुके (१८) बृहस्पतिके (१६) शनिके (१९) बुधके (१७) केतुके (७) शुक्रके (२०) वर्ष नियतहैं दशाक्रमभी इसी क्रमसे है ॥ १ ॥

कृत्तिकादित्रिरावृत्त्या दशा विंशोत्तरी मता ॥ अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः ॥ २ ॥

कृत्तिकासे तीन आवृत्ति गिननेसे नक्षत्र दशाधिपती मिलताहै जैसे कृत्तिका जन्मनक्षत्रमें सूर्यकी दशा प्रथम, रोहिणीमें चंद्रमाकी इत्यादि।पुनः दूसरी आवृत्ति उत्तरा फाल्गुनीसे, तीसरीमें उत्तराषाढसे गिनना यह विंशोत्तरी (१२० वर्षके क्षेपककी) दशा कारक मारक विचारमें मुख्य है जाननेवालोंने इसीसे मारक कारक फल कहना; अष्टोत्तरी आदि से नहीं ॥ २ ॥

गतर्क्षनाडी निहतादशाब्दैर्भभोगनाड्या विहता फलं यत् ॥ वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दांतरितं निरुक्तम् ॥ ३ ॥

नक्षत्रकी षष्टिप्रमाण भुक्त घटीको जिसग्रहकी दशा प्रथम है उसके वर्षोंसे गुणाकर ६० से भागदेना अथवा नक्षत्रके भुक्त को दशा पतिके वर्षोंसे गुणाकर नक्षत्रके सर्व भोगसे भाग देना लब्धिं वर्ष, मास, दिन, घटी, क्रमसे उस ग्रहके भुक्त दशा होतीहै इसको ग्रहके वर्षोंमें घटायके भोग्य दशा होती है. अन्य ग्रहोंके पूरे वर्ष जोडते जाना यह विंशोत्तरी उडुदशा होती है. उदाहरण है कि भरणी नक्षत्र भुक्त २४।२० भोग्य ३९।५ सर्व भोग्य ६३।२५ षष्टिप्रमाण भुक्त २३।१ भरणीमें प्रथम दशापति शुक्रके वर्ष २० नक्षत्र भुक्त २४।२० को दशा प्रमाण २० से गुनाकिया पलात्मक २९२०० हुआ इसमें सर्व भोग्य ६३।२५ पलात्मक३८०५ से भाग लिया तो लाभ ( ७ ) वर्ष हुये शेष २५६५ को १२ से गुणा किया ३०७८० इसे पुनः ३८०५ का भाग लेनेसे लाभ ( ८ ) महीना मिले शेष ३४० को ३० से गुणाकिया १०२०० इसमेंभी उसी हारसे भागलिया तो लब्धि दिन ( २ ) मिले शेष २५९० को ६० से गुनाकर १५५४०० इसमें भागलेनेसे लाभ ( ४० ) घटी मिली यह भुक्त दशा शुक्रकी हुई इसको शुक्रके वर्ष२० में घटाया तो शेष १२ वर्ष३ महीने २७ दिन४० घटी शुक्रकी भोग्यदशा रही इसमें सूर्यके वर्ष ६ जोडनेसे १८ । ३ । २७ । ४० वर्षादि सूर्य दशा होती है ऐसेही सभी ग्रहोंके वर्षादि जानने ॥ ३ ॥

दशा दशाहता कार्य्या विहृता परमायुषा ॥
अंतर्दशाक्रमादेवं विदशाप्यनुपाततः ॥ ४ ॥

अब अंतर्दशाकी विधि कहतेहैं कि दशा वर्षादि दशसे गुणाकर परमायु १२० से भागलेकर पूर्वोक्तरीतिसे वर्षादि ४ अंकलेने वह वर्षादिग्रहकी अंतर्दशा होती है एकग्रहकी दशामें इसी प्रकार

प्रत्येक ग्रहोंकी अंतर्दशा लेनी. ऐसेही अनुपातक्रमसे विदशायें भी होती हैं ॥ ४ ॥

## अथ दशाफलानि। (तत्रादौ सूर्य्यस्य)

उद्वेगिता हृदि तता परितो लतावद्दायादवाद उत वित्तवियोगयोगाः ॥ चिंता भयं नरपतेरपि पाककाले रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे ॥ ५ ॥

सूर्यकी दशाप्रवेशमें मनुष्यके हृदयमें चारों तर्फसे वृक्षपर लता जैसी फैलीहुई (उद्वेगता) अनवास्थिती रहे. भाई, विरादरीमें कलह होवे धनहानि मिले चितारहे राजासे भय होवे तथा दशाप्रवेशमें रोगभी होता है ॥ ५ ॥

## अथ चंद्रस्य फलानि।

सदापाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता सतां संगो रंगोत्सवसवकृतिप्रीतिरतुला ॥ अलंकारागारी रिपुकुलमलंगारजसुखंकलावत्यारत्या गमइभरथा रामरमणम् ॥ ६ ॥

चंद्रमाकी दशामें सर्वदा राजासे अधिकार मिले सज्जनोंकी संगति नाचरंग आदि उत्सव, (नाट्य) नाटक, नट खेल आदियोंका बडा आल्हाद मिले भूषण वस्त्र आदि अलंकारोंका घर होवे शत्रुकुलके क्षय होनेसे सुख होवे षोडशवर्षाकी सुरूपा स्त्रीके साथ रतिक्रीडा मिले हाथीरथ आदि वाहन मिलें बाग आदियोंमें रमित रहे ॥६॥

## अथ भौमस्य फलानि।

अनलगरलभीतिः शस्त्रघातो नराणामरिगणनृपचौरव्यालशंकाकुलत्वम् ॥ क्षितिसुतपरिपाके कामिनीपुत्रकष्टं भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च॥७॥

मंगलकी दशामें मनुष्योंको अग्नि, विषका भय शस्त्रसे घाव होवें, शत्रुजन तथा चोर, राजा सर्पसे भय होनेकी शंका एवं व्याकुलता होवै स्त्रीपुत्रोंको कष्ट मिले (वमन) वांतिका रोग होवै मानसी चिंता, पीडा, रोग और धनहानिभी होवै ॥ ७ ॥

## अथ राहोः फलानि ।

राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्यनाशो विनाशो मानस्यातीव रोगागमनमपि नृणां तातकष्टं विशेषात् ॥ कांतापत्याकुलत्वं हितजनखलताऽरातिरायाति सद्मव्यामोहागारमंतः परित उततता तुंगता तंकता वा ॥ ८ ॥

राहुकी दशामें राजकुलके वशसे धनकानाश मानका विनाश होवै बहुतरोग उत्पन्न होवें तथा मनुष्योंको विशेपतः पितृकष्ट मिले स्त्रीपुत्रोंके ओरसे व्याकुलता रहे मित्रजनोंके साथ दुष्टता होवै. शत्रु चढकर मकानहीपर आजावें, चित्तमें चारों ओरसे अज्ञानता आवै अकिल मारी जावे चिंता बहुत फैले अथवा बडेबडे कष्टहोवें ॥८॥

## अथ गुरुदशाफलम् ।

गुर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नायकत्वं जनानां कांतादंतावलाग्रागम इह कमलालंकृता वासशाला ॥ मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजनगरिमाकालिमारातिकास्ये हृद्या विद्यानवद्या भवति च वचसामीशितुः पाककाले ॥ ९ ॥

बृहस्पतिकी दशामें (गुरुता) श्रेष्ठता मिलतीहै. राजकुलसे अधिकारिता (प्रधानता) होती है. तथा मनुष्योंको रमणीय स्त्री

मिलतीहै. सवारीको हाथी मिलते हैं रहनेका बहुत बडा घर धनादि शोभासे भूषित रहताहै सज्जनोंसे तथा बडेलोगोंसे मित्रता, गुरुजनोंसे ( गौरवता ) मान मिलता है. शत्रुके मुख काले होते हैं रमणीय एवं अनर्गल विद्या होती है ॥ ९ ॥

## अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यावादेन तापोरिनरजनकृतातंकता रंकता वा कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम् ॥ कांतापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदंतावलानां विच्छेदो मित्रभेदो दिनपसुतदशायामनर्थो विशेषात् ॥ १० ॥

शनिकी दशामें मनुष्योंको झूठेकलंक लगनेसे संताप, शत्रुजनके किये उपद्रवसे क्लेश होता है. अथवा ( फकीरी ) भीख मागनी होती है. गुप्तकृत्या जादूगरीसेभी संततता रहै दुष्टजनसंगति होवै बुद्धिभी दुष्ट हो जावै. धननाश होवै. स्त्री पुत्रादियोंको रोग होवै. पिता, सुवर्ण, गो, घोडे, हाथियोंका ( वियोग ) नाश होवै मित्रोंसे शत्रुता होवै. विशेष करके इस दशामें अनर्थ होते हैं ॥ १० ॥

## अथ बुधदशाफलम् ।

दिव्याहार विहारयानजनतापत्यार्थमानांबरश्रेणीग्रामनवालयेंदुवदनालाभं विशेषादिह ॥ सद्भिः संगमनं गमंगमतुलं प्रोत्तुंगमातंगजं सौख्यं संतनुते दशासुतयशोवृद्धिं च सिद्धिविदः ॥ ११ ॥

बुधकी दशामें मनुष्योंको ( दिव्य ) उत्तम ( आहार ) भोजन, विहार, सवारी मनुष्य संगम, यद्वा मनुष्यता, संतान, धन, मान,

वस्त्र, ग्राम, भूमि, नवीन मकान, ( चंद्रमुखी ) सुरूपा स्त्री इतने वस्तुओंका विशेपतः लाभ होता है. सज्जनोंका संग कामदेवकी वृद्धि, ऊंचे हाथीकी सवारीका सुख मिलता है. संतानवृद्धि, यशकी वृद्धि, सबकार्यमें सिद्धि और होती है ॥ १० ॥

## अथ केतुदशाफलम् ।

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं सदाचं-
द्रारातेरुदरभवरोगं वितनुते ॥.दशा पुंसामारादनु-
गतिमपायं निजमतेः कृशत्वं वित्तानामवनिपति-
कोपेन परितः ॥ १२ ॥

केतुकी दशामें मनुष्योंको मनमें संताप, ज्वर, अपने मनुष्योंमें (विवाद) कलह होवे. दुष्टजनोंसे मुकाबला होवे. केतु अपनी दशामें पेटमें रोग उत्पन्न करताहै. शीघ्रही शीघ्रगमन, भ्रमण होते रहें अपनी ही बुद्धिसे धनादियोंका नाश होवे. शरीरमें कृशता आवे सर्वप्रकार राजाके कोपसे धनका क्षय होवे ॥ १२ ॥

## अथ शुक्रदशाफलम् ।

तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो न्मिना-
मारोल्लासविकास एव कमलालावण्ययुक्तं गृहम् ॥
दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीव पाकसमये शालाविशालाकवेः १३॥

शुक्रकी दशामें मनुष्योंको बडे राजाकी तुल्यता मिलती है मित्रसे ( जय ) जीत, भलाई होतीहै- कामक्रीडाका उत्सव विलास हासमें आनंद होता है घरमें लक्ष्मी, कोमल स्त्रीका वास होवै उत्तम बाग बगीचा, उत्तममकानआदि बहुत होते हैं शास्त्रोंका व्या

ख्यान, गायनका शब्द, बुद्धिकी कुशलता आदियोंका बहुत सुख होता है. तथा बडे बडे घर बनते हैं ॥ १३ ॥

## अथ उच्चगतग्रहदशाफलम्।

निजोच्चगामिनो यदा तदा तता यशोलता नवांबरादिभूषणैः सुखं वरांगनागमः ॥ उपेंद्रतुल्यता गजेंद्रवाजिराजिकारथो वृपाश्च वैरिणः कृशा वशा दशा यदा भवेत् ॥ १४ ॥

जो ग्रह जन्ममें उच्चका हो उसकी दशा जब हो तब मनुष्योंको यशकी लता बहुत फैलती है नवीन वस्त्र, भूषण आदियोंका सुख मिलता है. श्रेष्ठअंगवाली स्त्री घरमें आती है. ( उपेंद्र ) श्रीकृष्ण यद्वा चक्रवर्तिराजाके समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होता है. श्रेष्ठ हाथी, घोडे, रथ, बैल आदि मिलते हैं शत्रु घटते हैं ॥ १४ ॥

## अथ स्वक्षेत्रगतदशाफलम्।

दशा निजागारगतस्य यस्य नवांबरागारविहारसौख्यम् ॥ नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशो विशेषादरिवर्गहानिः ॥ १५ ॥

जो ग्रह अपनी राशिका हो उसकी दशामें नवीनवस्त्र नवीनघर विहार आदियोंका सौख्य होवे. नवीनस्त्री मिले, बहुत भूमि बहुत भूषण मिलते हैं शत्रुपक्षकी हानि होतीहै ॥ १५ ॥

## अथ मित्रक्षेत्रगतग्रहदशाफलम्।

कलत्रपुत्रैरपिमित्रपुत्रैरतीव सौख्यं हितराशिगस्य॥ दशाविपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात् ॥ १६ ॥

जो ग्रह अपने मित्रकी राशिमें हो उसकी दशामें स्त्री, पुत्रोंसे तथा मित्र,एवं उनके पुत्रोंसे अतीव सुख मिले. तथा राजासे वस्त्र, खिलत मिले विशेपतः मानकी वृद्धि होवे ॥ १६ ॥

## रिपुराशिस्थग्रहदशाफलम् ।

मनोजवेगोरिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिरात्तिबाधा ॥ दशा यदारातिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृति-श्चला स्यात् ॥ १७ ॥

जो ग्रह शत्रुराशिमें हो उसकी दशामें मनुष्यको कामदेवका बडा वेग रहता है शत्रुपक्षसे भय, शरीरमें कृशता धनकी हानि, आमदमें विघ्न वा विलंब होता है स्वभावभी चलायमान होजाताहै बुद्धि ठिकाने नहीं रहती ॥ १७ ॥

## अथ रोगेशदशाफलम् ।

रोगाधीशदशा बला जनकलिं रोगागमं जन्मिना
माधिव्याधिमरिव्रजव्रणगणातंकं कलंकं खलात् ॥
मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा
चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः॥१९

(रोगेश) षष्ठेशकी दशामें यदि निर्बल वह ग्रह हो तो मनुष्योंके साथ कलह, रोगकी उत्पत्ति मानसीचिंता, रोग, शत्रुसमूहकी वृद्धि मनुष्योंको होते हैं (व्रण) फोडे आदियोंसे क्लेश, दुष्टजनोंसे(कलंक) झूठा अपवाद मिलता है मानका विध्वंस होता है- बुद्धिमारी जाती है ज्ञानका,व धनका नाश होताहै- चित्तमें व्याकुलता रहती है.पाप मिले पापके वशसे उक्त फल मिले विशेपतः धातुक्षय होवे ॥१८॥

## अष्टमेशदशाफलम्।

निधनभावपतेरवनीपतेरतिभयं गदजालभयं दशा॥ कलयति स्वजनस्य विनाशनं निधनतामपि वा भाविनामिह॥ १९॥

अष्टमेशकी दशामें जन्मिको राजासे बडा भय, रोगोंका भय, होतीहै अपने मनुष्योंका नाश और मृत्युका भयभी होता है॥१९॥

## व्ययेशदशाफलम्।

वित्तक्षतिरवनीशादाधिव्याधिर्व्ययेशपरिपाके॥ कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसंगसंयोगः॥२०॥

व्ययेशकी दशामें राजासे धनका क्षय होता है. मानसी चिंता, रोग होते हैं.मृत्युके समान कष्ट मिलताहै.भैसा,गदहा,आदि निषिद्ध सवारी मिलती हैं कुसंगियोंकी संगति होती है॥ २०॥

## सप्तमेशदशाफलम्।

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति॥ रिपुजनजनिताबाधा वित्तविनाशो नरेशभीतिश्च॥२१

सप्तमेशके दशामें रोगकी ज्वाला हृदयमें स्थिर रहती है. शत्रुसे उत्पन्न (बाधा) दुःख रहताहै. धनका नाश राजाका भय होता है२१

## अस्तंगतग्रहदशाफलम्।

दशाधीशे वास्तंगतवति विरोधो बलवता सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे॥ अरेराधिव्याधिव्यसनप्रुतमानक्षतिरथो विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम्॥ २२॥

दशापति ग्रह अस्तंगत हो तो अपनेसे बलवान् मनुष्यके साथ

विरोध होवे सर्व रोगका मकानही मनुष्यके हृदयमें यद्वा पेटमें बनारहे शत्रुसे चिंता होवै रोग, व्यसन और मानक्षय होवै. धनसे अलग ( निर्द्धन ) राजाके कोपसे रहे ॥ २२ ॥

दशाप्रवेशे सबलः शशांको दशाफलं शस्तमतीव जंतोः ॥ अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्य्यैरुदीरितं चंद्र-बलानुमानात् ॥ २३ ॥

दशाके प्रवेश समयमें तत्काल लग्नसे चंद्रमा बलवान् हो तो जीवको उस दशाका फल अति शुभ होताहै. निर्बल होनेमें विपरीत फल श्रेष्ठ आचार्य्योंने कहाहै. ग्रहके उक्त फलके अतिरिक्त चंद्रमा-के बलानुसार फल होताहै ॥ २३ ॥

बलवंतो दशाधीशा दिशंति सकलं फलम् ॥
निर्बला नैव कुर्वंति मध्यं मध्यबला नृणाम् ॥२४॥

जो ग्रह बलवान् हैं वे अपनी दशामें अपना उक्त फल पूर्ण देतेहैं निर्बलग्रह पूराफल नहीं देते जो मध्यबली है वे फलभी मध्यम ही करते हैं ॥ २४ ॥

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः॥ तुर्य्यस्वा-मिन आलयं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं रोगा गारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम् ॥ २५ ॥

लग्नेशकी दशामें बहुत धन होना फलहै. द्वितीयेशकी दशामें मृत्यु अथवा कष्ट तृतीयेशकी दशामें बहुधा पाप फल होता है. चतुर्थेशकी दशामें गृहसुख पंचमेशकी दशामें विद्याका सुख, षष्ठे-शकेमें शत्रु भय, सप्तमेशकेमें शोक होताहै ॥ २५ ॥

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सुक्रियां

चित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः ॥
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै पूर्वैं
रंगभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम् ॥ २६ ॥

अष्टमेशकी दशामें मृत्यु निश्चय करताहै. नवमेशकी दशामें पुण्यादि कृत्य, दशमेशकी दशामें धन एवं राजाका आश्रय मिलताहै, लाभेशकीमें लाभ, व्ययेशकीमें रोग, धननाश, बहुतसे कष्ट होते हैं इस प्रकार साधारणफल पूर्वाचार्य्योंने लग्नेशआदियोंके शरीर धारियोंको कहे हैं ॥ २६ ॥

भवाधिपो बलयुतो निजगेहगामी तुंगत्रिकोणशुभ-
वर्गगतोपि पूर्ण॥जंतोः फलं किल करोति यदारिनी-
चस्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥ २७ ॥
इति भावकुतूहले दशाफलाध्यायः षोडशः ॥ १६ ॥

जिस भावका स्वामी (बलवान्) अपनी राशि अपने उच्च मूलत्रिकोण, शुभग्रहोंके अंशादिवर्गआदिमें होनेसे पूर्ण बलीहो वह दशोक्त पूर्ण फल निश्चय देताहै. यदि शत्रुगृह, नीचराशि, आदिमें होनेसे निर्बलहो वह विशेषतः अशुभफल देताहै ॥ २७ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषायां दशाविपाकाऽध्यायःषोडशः ॥ १६ ॥

---

## अथ ग्रहाणां गर्वितादिभावाध्यायः ।

कोणे तुंगगृहे गतो निगदितः खेटस्तदा गर्वितो
मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोपि मुदितो मित्रेण युक्तेक्षितः ॥
पुत्रस्थानगतोऽशुभौमरविजार्कैः संयुतो लज्जितः
पापारिग्रहवीक्षितो हि रविणा संक्षोभितःकीर्तितः॥१॥

अब ग्रहोंकी गर्वितादिदशा कहते हैं कि, जो ग्रह अपने उच्च वा

तिक्षयम् ॥ सुतगदागमनं गमनं वृथा कलि-
भिरुचिं न रुचिं शुभे ॥ ८ ॥

लज्जितग्रहकी दशा विवशतासे रतिक्रीडाका ( विराम ) बुद्धिका क्षय, पुत्रको रोग, व्यर्थसफर, कलहसंबंधी वार्तामें और शुभकृत्यमें अरुचि करती है ॥ ८ ॥

## क्षोभितग्रहदशाफलम् ।

संक्षोभितस्यापि दशाविशेषाद्दरिद्रजातंकमती-
वकष्टम् ॥ करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनागिवा-
धामवनीशकोपात् ॥ ९ ॥

क्षोभित ग्रहकी दशा विशेषतः दरिद्रताका क्लेश करती है व अतिकष्ट, धनक्षय, पैरोंमें पीडा. धनके आमदमें बाधा करती है ॥ ९ ॥

## क्षुधितग्रहदशाफलम् ।

क्षुधितग्रहदशायां शोकमोहादितापः परिजनपरि
तापादाधिभीत्या कृशत्वम् ॥ कलिरपि रिपुलोकै
रर्थबाधा नराणामखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधा-
विशेषात् ॥ १० ॥

क्षुधित ग्रहके दशामें शोक, ( मोह ) अज्ञानादिसंताप होते हैं शत्रुजनोंसे संताप मिलता है मानसी व्यथाके भयसे शरीर कृश होता है शत्रुजनोंसे कलह होता है तथा मनुष्योंको धनकी बाधा समस्त बलका ( निरोध ) रुकावट, बुद्धिका रोगभी विशेषतः होता है ॥ १० ॥

## तृषितग्रहदशाफलम् ।

तृषितखगदशायामंगिनामंगमध्ये भवति गदवि-

कारो इष्टकार्य्याधिकारः ॥ निजजनपरिवादादर्थ-
हानिः कृशत्वं खलकृतपरितापीमानहानिःसदैव११

तृषितग्रहकी दशामें शरीरियोंके शरीरके बीचमें रोगका विकार होवै इष्टकार्य्यका अधिकार मिले अपने मनुष्योंसे विवाद होवै जिसमें धनहानिभी रहे अंग माडे हो जावैं दुष्टजनके कृत्यसे संतापयुक्त रहे सर्वदा मानहानि होवै ॥ ११ ॥

आसीच्छ्रीकरुणाकरो बुधवरो वेदांगवेद्याकरस्त-
त्सूनुः क्षितिपालवंदितपदःश्रीशंभुनाथः कृती ॥ वि-
ज्ञव्रातकृतादरो गणितविज्जोतिर्विदां प्रीतये चक्रे
भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः ॥ १२ ॥

इति श्रीमन्मैथिलशंभुनाथगणकात्मजजीव-
नाथविरचिते भावकुतूहले गर्विंतादि-
दशफलाध्यायःसप्तदशः ॥ १७ ॥

पहिले मैथिलदेशमें श्रीकरुणाकरनाम पंडितश्रेष्ठ वेदवेदांगका जाननेवालोंमें श्रेष्ठ यद्वा ( खान ) उक्तविद्याओंको प्रगट करनेवाली भूमिका भया इनका पुत्र पंडित शंभुनाथ भया जिसके चरणोंकी वंदना राजालोग करतेथे तथा विद्वानोंके समूहसे आदरणीय एवं गणितविद्या जाननेवाला रहा इनका पुत्र श्रीजीवनाथ नामा पंडित ज्योतिर्विज्जनोंके प्रसन्नताके लिये छोटासा ग्रंथ भावकुतूहल ( जिसमें पाठ स्वल्प प्रयोजन बहुत है ) बनाया ॥ १२ ॥

इति महीधरकृतायांभावकुतूहलभाषाटीकायां ग्रहाणां गर्विता
दिदशाफल कथनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

---

नवाब्धिनवभूमिविक्रमदिवामणेर्वत्सरो महीधरध-
रासुरष्टिहरिसंज्ञके पत्तने॥विवर्णमिह भाषया फलि-

तभावकौतूहलेऽकरोच्छिशुमनो मुदे चपलतां क्षमध्वंबुधाः ॥ १ ॥ जातकेषुबृहदाख्यजातकस्ताजिकेषुखलु नीलकंठिका॥हौरिकेफलविधौशिरोमणी तौ मया प्रकटितौ विवर्णितौ ॥ २ ॥ लक्षणैरसमस्तोपि ग्रहवस्थाविधानतः ॥ सामुद्रिकविचारैश्च विशेषोत्र प्रदृश्यते॥३॥अतो मया प्रकटितं भाषया लोकया भुवि ॥ वेणीमाधवसंतुष्ट्यैग्रंथोभूयात्समर्पितः ॥४॥

भाषाकारका समर्पण है कि विक्रमार्क संवत् १९४९ में महीधर शर्माब्राह्मणने राजधानी ठीहरी नगर ( जिला गढवाल ) मे पाठक बालकोंके मन प्रसन्नताके हेतु इस फलितग्रंथ भावकुतूहलका विवरण भाषामें किया इस भाषामें जो कुछ गलती हो उसे विद्वान् लोग क्षमा करें ॥ १ ॥ जातकों ( जन्मफलों ) में बृहज्जातक ताजिकों ( वर्षफलों ) में प्रश्नसहित नीलकंठी ज्योतिषके फलप्रकरणमें शिरोमणी है इनको मैंने भाषाटीका करके लोकोपकारार्थ प्रकट कर दिया कि जिनसे अन्य ग्रंथोंमें श्रम करनेकी आवश्यकता नहींथी॥२॥ यह ग्रंथतो जातकलक्षणोंसे संपन्न नहीं परंच इसमें ग्रहोंकी अवस्थाओंके तथा सामुद्रिक लक्षणोंके विचार विशेष होनेसे इसकी विशेषता देखनेमें आई ॥ ३ ॥ इससे मैंने इसको देशभाषामें टीका करके संसारमें प्रकट किया यह ग्रंथ मेरासमर्पित वेणी माधवकी प्रसन्नताके अर्थ होवे ॥ ४ ॥ शुभम् ॥

---

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाडी-मुं